हिन्दी पाठ-७

मातृभाषा - हिन्दी

कक्षा-७

शिक्षक शिक्षा निदेशालय तथा राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, ओड़िशा, भुवनेश्वर

ओड़िशा विद्यालय शिक्षा कार्यक्रम प्राधिकरण, भुवनेश्वर

हिन्दी पाठ-७

मातृभाषा - हिन्दी

कक्षा-७

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

प्रो. डॉ. राधाकान्त मिश्र, अध्यक्ष
डॉ. स्मरप्रिया मिश्र
डॉ. रवीन्द्रनाथ मिश्र
डॉ. स्नेहलता दास (प्रभारी)
डॉ. लक्ष्मीधर दाश
डॉ. सौदामिनी मिश्र
डॉ. अजित प्रसाद महापात्र
डॉ. नलिनी पाढ़ी
श्रीमती प्रगति दास
श्री आशिष कुमार राय

संयोजिका:

डॉ. प्रीतिलता जेना
डॉ. तिलोत्तमा सेनापति
डॉ. सविता साहु

प्रकाशक:

विद्यालय और गणशिक्षा विभाग,
ओड़िशा सरकार

संस्करण: २०११
२०१९

प्रस्तुति :

शिक्षक शिक्षा निदेशालय तथा राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
ओड़िशा, भुवनेश्वर

और

ओड़िशा राज्य पाठ्यपुस्तक प्रणयन और प्रकाशन संस्था, भुवनेश्वर

मुद्रण : पाठ्यपुस्तक उत्पादन और विक्रय, भुवनेश्वर

आइए, ऐसा करें :

इस नए पाठ्यक्रम में कई तब्दिलियाँ की गई हैं। पहली है दृष्टिकोण में भिन्नता। अब शिक्षक शिक्षा प्रदान करने की तुलना में विद्यार्थी द्वारा स्वयं सीखने के प्रयास पर जोर दें। भाषण कम करें। विद्यार्थीयों को बोलने का मौका दें। उदाहरणार्थ-स्वयं गद्य / पद्य का आदर्श वाचन कर दें, फिर विद्यार्थीयों द्वारा उस कार्य को करायें। लेखनशैली बता दें, फिर लिखवाएं। वाद-विवाद, तर्कसभा, नाटकीय संवाद आदि अधिक करवाएँ । लघु निबंध, छोटे - छोटे अनुच्छेद-लेखन, पत्र, आवेदन पत्र, सरकारी दफ्ततरां में प्रचलिन पत्रों आदि पर अभ्यास कराया जाए।

दुसरी बात है-भाषा-शिक्षण पर अधिक बल देना है। इसलिए हर पाठ के उपरांत लंबी अनुाशीलनियँ दी गई हैं। उनके आधार पर शिक्षक आपनी तरफ से भी नई प्रश्न-शैलियों का प्रयोग कर सकते हैं और विद्यार्थीयों द्वारा अभ्यास करवा सकते हैं। फिर साहित्य पर ध्यान दें। इससे बच्चों की रुची परिमार्जित होती है और मानवीय - वृत्तियों का पोषण - पल्लवन होता है।

तीसरी बात है - मूल्यांकन - शैली में परिवर्तन। विद्यार्थीयों के मस्तिष्क से परीक्षा का भय दूर किया जाए। पाठ को रटने की अपेक्षा सृजनात्मक, व्यक्तिगत लेखन अधीक महत्व रखता है। साल मे दो-एक परीक्षा के महत्व को कक्ष तात्कलिक / सावधिक परीक्षाएँ अधिक सीस्या में हों। सबका भुल्याजीन अंलिम परिणाम में प्रतिफलित हो।

शिक्षको सें अनुरोध है कि वे. पाठ्यपुस्तक को पहले देख ले, इसके दृष्टिकोण, कर्म, कार्य-शैली का अनुध्यान करके अपनी शिख़ा-शैली बनाएं । शिक्षक तथा विद्यार्थीयों की सक्रिपता से भाषा - शिक्षण सरस होता है।

हिन्दी हमारें राष्टभाषा तथा राजभाषा है। इसे सीखना प्रत्येक नागरिक का सांविधानिक कर्तव्य है। यहसारे देश के जन - जन में योगसूत्र स्थापित करने की भाषा है। इसे सीखने में रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट आदि आधुनिक माध्यमों का भी उपयोग किय जाए। क्योंकि ये शिक्षण के सरल साधन हैं। यह पाठ्यपुस्तक इन सभी का आधार प्रस्तुत करती है।

शिक्षकों, अभिभावकों के सहयोग और साधनों के उपयोग से हिन्दी भाषा का अध्ययन काफी सरस हो सकता है।

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

विषय सूची

क्र.नं.	विषय	लेखक/कवि	पृष्ठ
१.	भारति जय-विजय करे (कविता)	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	०१
२.	ग्राम-लक्ष्मी की उपासना (निबंध)	विनोबा भावे	०५
३.	न्यायमंत्री (कहानी)	सुदर्शन	१७
४.	मानव भूमि भारत (कविता)	राधाकांत मिश्र	३३
५.	बलि का बकरा (कहानी)	शरतचंद्र चट्टोपाध्याय	३८
६.	कुत्ते की सीख (कविता)	रामधारी सिंह 'दिनकर'	४७
७.	चिड़िया की बच्ची (कहानी)	जैनेंद्र कुमार	५०
८.	दोहा सप्तक (कविता)	कबीर, बिहारी, रहीम	६०
९.	रक्त और हमारा शरीर (लेख)	यतीश अग्रवाल	६४
१०.	दुनिया का एक अजूबा : कोणार्क (लेख)	स्नेहलता दास	७५
११.	खेत की ओर (कविता)	रामेश्वरलाल खंडेलवाल	८२
१२.	प्रदूषण (लेख)	हरचरण लाल शर्मा	८७
१३.	ग्राम श्री (कविता)	सुमित्रानंदन पंत	९६
१४.	धूल भी सिर चढ़ती है (जीवनी)	संकलित (केवल पढ़ने के लिए)	१००
१५.	सोना हिरनी (रेखाचित्र)	महादेवी वर्मा (केवल पढ़ने लिए)	१०३
१६.	त्योहार का आनंद (पत्र लेखन)		११०
१७.	व्याकरण के पृष्ठ	(ज्ञान वर्धन के लिए)	११२

भारति जय-विजय करे

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

भारति जय-विजय करे !
कनक-शस्य-कमल धरे !

लंका पदतल-शतदल
गर्जितोर्मि सागर-जल,
धोता शुचि चरण युगल
स्तव कर बहु-अर्थ भरे !

तरु-तृण-वन-लता वसन
अंचल में खचित सुमन,
गंगा-ज्योतिर्जल-कण
धवल धार-हार गले !

मुकुट शुभ्र हिम-तुषार
प्राण-प्रणव-ओंकार,
ध्वनित दिशाएँ उदार
शतमुख-शतरव-मुखरे !

शब्द–अर्थ

भारती – सरस्वती, भारती जय–विजय करें ! – विजय दिलानेवाली भारती, कनक–शस्य–कमल–धरे – सुनहली फसल रूपी कमल को धारण करनेवाली, पदतल – पैरों के नीचे, शतदल – कमल, गर्जितोर्मि – गर्जन करने वाली लहरें, शुचि – पवित्र, स्तव– स्तुति, वन्दना, वसन–वस्त्र, बहु अर्थ भरे– अनेक अर्थों से युक्त, अंचल– आँचल, खचित सुमन – फूलों से जड़ा हुआ, गंगा ज्योतिर्जल–कण– गंगा के चमकते जलकण, धवल– सफेद, हिम तुषार– बर्फ, हिमालय, प्रणव – ओऽम्, शतरव–सैकड़ों आवाजें, मुखरे– मुखरित करने वाली ।

भावबोध और विचार :

(क) मौखिक :–

(i) भारती के चरणों को कौन धोता है ?

(ii) भारत का मुकुट किसे कहा गया है ?

(ख) लिखित :–

(i) कविता में भारत माता के चरण–युगल को धोनेवाले सागर की स्तुति में क्या अर्थ छिपा है ?

(ii) गंगा नदी को भारत माता के गले का हार क्यों कहा गया ?

(iii) कवि ने भारत माता के वस्त्राभूषण के विषय में क्या उल्लेख किया है ?

अनुभव विस्तार :–

(i) इस कविता को कक्षा में आवृत्ति कीजिए ।

(ii) भारत माता का चित्र बनाकर कक्षा में टाँग दीजिए ।

(iii) भारत–वंदना से संबंधित कुछ कविता छाँटिए और उन्हें कक्षा में पढ़कर सुनाइए ।

भाषाबोध : –

(i) निम्नलिखित पंक्तियों को पूरा कीजिए :

(क) लंका पदतल .... ।
.... सागर जल,

(ख) गंगा .... – कण
धवल .... गले ।

(ग) .... हिम–तुषार
प्राण–प्रणव– ....

(घ) तरु–तृण–वन–लता.............
................में खचित सुमन ।

(ii) इन शब्दों के अर्थ लिखिए :

भारती –	चरण–
कनक –	वरन –
शतदल –	सुमन –
स्तव –	धवल –
शुचि –	प्रणव –

(iii) **विलोम शब्द लिखिए :**

विजय .... अर्थ .... उदार ....

(iv) **इन शब्दों के दो–दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :**

कमल	वन ......
सागर	वसन ......
जल	सुमन ......
चरण	मुकुट ......
तरु	हिम ....

ग्राम-लक्ष्मी की उपासना

विनोबा भावे

आज किसान के दो ईश्वर हो गए हैं । अब तक एक ही ईश्वर था । किसान आकाश की तरफ देखता था । लेकिन आज चीजों के भाव ठहराने वाले देवता की तरफ देखना पड़ता है । इसी को आसमानी-सुलतानी कहते हैं । आसमान भी रक्षा करे और सुलतान भी हिफाजत करे । परमात्मा खूब फसल दे और शहर भरपूर भाव दे । इस तरह इन देवताओं को- एक आकाश का और दूसरा अमेरिका का-किसान को पूजना पड़ता है । लेकिन ऐसे दो-दो भगवान् काम नहीं आयेंगे आएँगे । एक ईश्वर बस है ।

अब इस दूसरे देवता की यानी शहरिए भगवान की, शक्ति से छुटकारा पाने का उपाय मैं तुम लोगों को बतलाता हूँ । हमारे गाँव की सारी लक्ष्मी यहाँ से उठकर सारे शहरों में चली जाती है । अपने पीहर से चल बसती है । इस ग्राम-लक्ष्मी के पैर गाँवों में नहीं ठहरते । वह शहर की तरफ दौड़ती है । पहाड़ पर पानी भरपूर बरसता है, लेकिन वह वहाँ कब ठहरता है। वह चारों तरफ भाग निकलता है । पहाड़ बेचारा कोरा-का-कोरा नंग-धड़ंग, गंजा-बुचा खड़ा-का-खड़ा रह जाता है । देहात की लक्ष्मी इसी तरह चारों दिशाओं में भाग खड़ी होती है । शहरों की तरफ बेतहाशा दौड़ती है । अगर हम इसे रोकें तो हमारे गाँव सुखी होंगे ।

यह देहाती लक्ष्मी किन-किन रास्तों से भागती है, सो देखो । उन रास्तों को बन्द कर दो । तब वह रहेगी । इसके भागने का पहला रास्ता बाजार है । दूसरा शादी-ब्याह, तीसरा साहूकार और चौथा व्यसन । इन चारों रास्तों को बन्द करना शुरू करें ।

सबसे पहले शादी–ब्याह की बात लीजिए । तुम लोग ब्याह–शादी में कोई कम पैसा खर्च नहीं करते । उसके लिए कर्ज भी करते हो, लड़की बड़ी हो जाती है, अपनी ससुराल में जाकर गिरस्ती करने लगती है, लेकिन शादी के ऋण से उसके माँ–बाप मुक्त नहीं होते । यह रास्ता कैसे मूँदा जाय ? समारोह खूब करो । ठाट–बाट में कमी नहीं होनी चाहिए, लेकिन मैं अपनी पद्धति से कम खर्च में पहले भी ज्यादा ठाट–बाट तुम्हें देता हूँ । लड़के–लड़की की शादी माँ–बाप करें । लेकिन वहाँ उनका काम खत्म हो जाना चाहिए । शादी करना, समारोह करना, यह सारा काम गाँव का होगा । माँ–बाप शादी में एक पाई भी खर्च नहीं करेंगे, जो करेंगे उनको जुर्माना होगा, ऐसा कायदा गाँववालों को बना लेना चाहिए। लड़के जितने अपने माँ–बाप के हैं उतने ही समाज के भी हैं । आपका कर्ज घटेगा, झगड़े कम होंगे। आत्मीयता बढ़ेगी ।

दूसरा रास्ता बाजार का है । तुम देहाती लोग कपास बोते हो, लेकिन सारा का सारा बेच देते हो । फिर बुवाई के वक्त बिनौले शहर से मोल लेते हो । कपास यहाँ पैदा करते हो । उसे बाहर बेचकर बाहर से कपड़ा खरीद लाते हो । गन्ना यहाँ पैदा करते हो । उसे बेचकर शक्कर बाहर से लाते हो । गाँव में मुंगफली, तिल्ली और अलसी होती है, लेकिन तेल शहर की तेलमील से लाते हो । अब इतना ही बाकी रह गया है कि यहाँ से अनाज भेजकर रोटियाँ बम्बई से मँगाओ । तुम्हें तो बैल भी बाहर से लाने पड़ते हैं । इस तरह सारी चीजें बाहर से लाओगे तो कैसे पार पाओगे ।

बाजार में क्यों जाना पड़ता है ? जिन चीजों की जरूरत होती है, उन्हें भरसक गाँव में ही बनाने का निश्चय करो । स्वराज्य यानी स्वदेश का राज्य, अपने गाँव का राज्य । पुराने जमाने में हमारे गाँव स्वावलम्बी थे । उन्हें सच्चा स्वराज्य प्राप्त था। इस रवैये को अपनाओ, फिर देखो, तुम्हारे गाँव कैसे कहलाते हैं । तुम कहोगे– यह महँगा पड़ेगा । यह केवल कल्पना है । मैं एक उदाहरण से समझाता हूँ ।

तेली चार आने देकर चमार से महँगा जूता खरीदता है । उसकी जेब से चार आने गए। आगे चलकर वह चमार तेली से चार आने ज्यादा देकर महँगा तेल खरीदता है । यानी उसके चार आने लौट आते हैं। जहाँ पारस्परिक व्यवहार होता है वहाँ 'महँगा' जैसा कोई शब्द नहीं है । गए हुए पैसे दूसरे रास्ते से लौट आते हैं । मैं उसकी महँगी चीज खरीदता हूँ, वह मेरी महँगी चीज खरीदता है । हिसाब बराबर । इसमें क्या बिगड़ता है ।

देहात में प्रेम होता है, भाईचारा होता है । देहात के लोग अगर एक-दूसरे की जरूरतों का ख्याल नहीं रखेंगे तो वह देहात ही नहीं है । वह तो शहर के जैसा हो जाएगा । शहर में कोई किसी को नहीं पूछता । वहाँ मक्खियों के समान आदमी भिनभिनाते रहते हैं । चींटियों की नाईं जिनका ताँता लगा रहता है वह क्या आपसी प्रेम के लिए ? शहर में स्वार्थ और लोभ है । गाँव प्रेम से बनता है ।

यथार्थ लक्ष्मी देहात में हैं । पेड़ों में फल लगते हैं, खेतों में गेहूँ होता है, गन्ना होता है । यही सब सच्ची लक्ष्मी है। यह सच्ची लक्ष्मी बेचकर तुम शहर से सस्ती चीजें लाते हो, लेकिन सभी ऐसा करने लगें तो देहात वीरान दिखाई देंगे। तुम्हारे गाँव में जो न बनती हों, उनके लिए दूसरे गाँव खोजो । तुम्हारी ग्राम-पंचायतों को यह काम अपने जिम्मे लेना चाहिए। गाँव के झगड़े-टंटे दूर करने का काम पंचायतों का ही है, लेकिन गाँव से कौन सी चीजें बाहर जाती हैं, कौन-कौन सी बाहर से आती हैं,इसका ध्यान भी पंचायतों को रखना चाहिए, नाका बनाकर फेहरिस्त बनानी चाहिए । बाद में वे चीजें बाहर से क्यों आती हैं, इसकी जाँच-पड़ताल करके उन्हें गाँव में ही बनवाने की कोशिश करनी चाहिए। फिर तुम ही चीजों के दाम ठहराओगे । जब सभी एक दूसरे की चीजें खरीदने लगेंगे तो सब सस्ता-ही-सस्ता होगा । सस्ता और महँगा ये शब्द ही नहीं रहेंगे ।

खादी गाँव में रहनी चाहिए । खादी के कपड़ों के लिए सूत के बटन भी यहीं बन सकते हैं । उन दूसरे बटनों की क्या जरूरत है ? अगर छाती पर वे बटन न हों तो क्या प्राण छटपटाएँगे ! इस कण्ठी की क्या जरूरत है ? उसके बिना चल नहीं सकता ? ऐसी अनावश्यक चीज गाँव में लाओगे तो ये कण्ठियाँ पैरों को जंजीर की तरह जकड़ेंगी या फाँसी की रस्सी की तरह गला घोंट देंगी । बाहर से ऐसी कण्ठियाँ लाकर अपने शरीर को मत सजाओ । भगवान् श्रीकृष्ण कैसे सजता था ? वह क्या बाहर से कण्ठियाँ लाता था ? वृन्दावन में मोरों के जो पंख गिर जाते थे,उन्हीं से वह अपना शरीर सजाता था । पंख उखाड़ कर नहीं लाता था । वह मोर के पंख से सजता था । मेरे गाँव के मोर हैं, उनके पंखों से मैं अपने शरीर को सजाऊँ तो इसमें उन मोरों की भी पूजा होती है । ऐसी भावना से वह मोर मुकुट लगाता था और गले में क्या पहनता ? वनमाला । मेरी यमुना के तीर के फूल–वे सबको मिलते हैं । गरीबों को मिलते हैं, अमीरों को मिलते हैं । यह स्वदेशी वनमाला, देहात की वनमाला, गले में पहनता था और बजाता क्या था ? मुरली– देहात के बाँस की बाँसुरी– वह अलगोजा । यही उसका वाद्य था ।

हमारे एक मित्र जर्मनी गए थे । वह वहाँ का एक प्रसंग सुनाते थे– ‘‘हम सब विद्यार्थी इकट्ठे हुए थे । फ्राँसीसी, जर्मन, अँग्रेज, जापानी, रूसी सब एक साथ बैठे थे । सबने अपने अपने देश के राष्ट्रीय वाद्य बजाकर दिखाए । फ्राँसीसियों ने वायोलिन बजाया, अँग्रेजों ने अपना वाद्य बजाया । मुझसे कहा गया, ‘तुम हिन्दुस्तानी वाद्य सुनाओ ।’ मैं चुपचाप बैठा रहा । वे मुझसे पूछने लगे, ‘तुम्हारा भारतीय वाद्य कौन–सा है ? मैं उन्हें बता न सका ।’’

मैंने तुरन्त अपने उस मित्र से कहा, ‘‘अजी हमारा राष्ट्रीय वाद्य बाँसुरी है । लाखों गाँवों में पाई जाती है । सीधी–सादी और मीठी । कृष्ण भगवान् ने उसे पुनीत किया है । एक बाँस की नली ले ली, उसमें छेद बना लिए । बस वाद्य तैयार हो गया ।’’

ऐसा वाद्य श्रीकृष्ण बजाता था । वह गोकुल का स्वदेशी देहाती वाद्य था । अच्छा, श्रीकृष्ण खाता क्या था ? बाहर की चीनी लाकर खाता था ? वह अपने गोकुल की मक्खन-मलाई खाता था, दूसरों को खाना सिखाता था। ग्वालिनें गोकुल की यह लक्ष्मी मथुरा को ले जाती थीं परन्तु गाँव की इस अन्नपूर्णा को कन्हैया बाहर नहीं जाने देता था। वह उसे लूटकर सबको बाँट देता था । सारे गोकुल के बालक उसने हृष्ट-पुष्ट किए। जिन्होंने गोकुल पर चढ़ाई की, उनके दाँत उसने अपने मित्रों की मदद से खट्टे किए। गोकुल में रहकर भी वह क्या करता था ? गायें चराता था । उसने दावानल निगल लिया, याने क्या किया ? देहातों को जलाने वाले लड़ाई-झगड़ों का खात्मा किया, सब लड़कों को इकट्ठा किया । प्रेम बढ़ाया । इस तरह यह श्रीकृष्ण गोपाल कृष्ण है । उसने तुम्हारी गायों का वैभव बढ़ाया । गाँव की सेवा की । गाँवों पर प्रेम किया, गाँव के पशु-पक्षी, गाँव की नदी, गाँव का गोवर्धन पर्वत इन सब पर उसने प्रेम किया । गाँव ही उनका देवता रहा । आगे चलकर वे द्वारिकाधीश बने, लेकिन फिर भी गोकुल आते थे । फिर गाय चराते थे, गोबर में हाथ डालते थे, गौशाला बुहारते थे, वनमाला पहनते थे, वंशी बजाते थे, लड़कों के साथ, गोपवालों के साथ खेलते थे । 'ब्रज किशोर' उनका प्यारा नाम था, 'गोपाल' उनका प्यारा नाम था । उन्होंने गोकुल में असीम आनन्द और सुख पैदा किया ।

गोकुल का सुख असीम था। ऐसे गोकुल के अन्न के चार कणों के लिए देवता तरसते थे। प्रेममस्त गोपाल बाल जब भोजन करके दही और 'गोपाल कलेवा' खाकर यमुना के जल में हाथ धोने जाते थे, तब देवता मछली बनकर वे जूठे अन्न कण खाते थे। उनके स्वर्ग में वह प्रेम कहाँ था ? उन देवताओं को पैसे की कमी नहीं थी, लेकिन उनके पास प्रेम नहीं था। हमारे शहर आपके स्वर्ग हैं न ? अरे भाई, वहाँ प्रेम नहीं है ।

वहाँ भोग है, परन्तु आनन्द नहीं है । अपने गाँवों को गोकुल के समान बनाओ, तब वे शहर के नगर सेठ तुम्हारे गाँव की नमक-रोटी के लिए लालायित होकर दौड़ते आएँगे । हमें देहातों को हरा-भरा गोकुल बनाना है- स्वाश्रयी, स्वावलम्बी, आरोग्य-सम्पन्न; उद्योगशील, प्रेमशील । ईख का कोल्हू है, चरखा चल रहा है, धुनियाँ धुन रहा है, तेल का कोल्हु चूँ-चर्र बोल रहा है, कुएँ पर मोठ चल रही है । चमार जूता बना रहा है, गोपाल गायें चरा रहा है और वंशी बजा रहा है, ऐसा गाँव बनने दो । अपनी गलती से हमने गाँवों को मरघट बनाया । आइए, फिर इसे गोकुल बनाएँ ।

कागज एरंडौल का खरीदो । दन्तमंजन राख को बनाओ । ब्रुश दाँतौन के बनाओ । विदेशी कागज की झंडियाँ और पताकाएँ हमें नहीं चाहिए । अपने गाँवों के पेडों के पल्लव, ग्राम-पल्लव लो । उनके तोरण और वन्दनवार बनाओ । गाँवों के पेड़ों का अपमान क्यों करते हो ? बाहर से चीजें लाकर वन्दनवार लगाओगे तो गाँवों के दरख्त रूठेंगे । वे समारोह में हाथ बटाना चाहते हैं, उनकी कोंपलें लाओ ।

हमारे धार्मिक मंगल उत्सवों के लिए क्या कागज के तोरण विहित हैं ? आम के शुभ पल्लव चाहिए और घड़ा चाहिए । कलश चाहिए सो क्या टिनपाट का होगा ? वह पवित्र कलश मिट्टी का ही चाहिए। देखो हमारे पूर्वजों ने गाँव की चीजों की कैसी महिमा बढ़ाई है । उस दृष्टि को अपनाओ । सारा नूर पलट जाएगा । इधर-उधर दूसरी ही दुनिया दिखाई देने लगेगी । समृद्धि और आनन्द के दर्शन होने लगेंगे ।

कोई दिन-भर फू-फू बीड़ी फूँकते हैं, बीड़ियाँ तो घर की हैं । वे बाहर से नहीं आतीं, अरे भाई, जहर अगर घर का हो तो क्या खा लोगे ? घर का जहर खाकर पूरी सोलह आने स्वदेशी मृत्यु को स्वीकार करोगे ? जहर चाहे घर का हो या बाहर का, त्याज्य ही है । उसी तरह सभी व्यसन बुरे हैं । उन सबको छोड़ना चाहिए । वे प्राणघातक हैं । शराब पीकर आखिर हम क्या साधते हैं ? प्राणों का, कुटुम्ब का, धन का और इन सबसे प्रिय धर्म का - सभी चीजों का नाश होता है ।

बीड़ी और शराब के बाद तीसरा व्यसन है बात–बात में तकरार करना । कृष्ण ने झगड़ों का दावानल निगल लिया । तकरार मत करो और अगर झगड़ा हो जाए, तो गाँव के चार भले आदमी बैठकर उसका तस्फिया करो । अदालत की शरण न लो । अदालतें तुम्हारे गाँवों में ही होनी चाहिए । जिस प्रकार और चीजें गाँवों की ही हों, उसी प्रकार न्याय भी गाँव का ही हो । तुम्हारे खेतों में सब कुछ पैदा होता है । अगर न्याय तुम्हारे गाँव में न पैदा हो तो कैसे काम चलेगा ? गाँव का धान्य हो, गाँव का वस्त्र हो और गाँव का ही न्याय हो । बाहर की कचहरी, अदालतें किस काम की ? चीजों के लिए जिस तरह हम परावलम्बी न होंगे, उसी तरह न्याय के लिए भी नहीं होंगे। प्रेम से रहेंगे। दूसरे को थोड़ा–बहुत अधिक मिल जाए, तो भी वह गाँव में ही रहेगा, लेकिन दूर चले जाने पर न हमें मिलेगा, न तुम्हें ही मिलेगा। सारा भाड़ में जाएगा । गाँव के ही पंचों में परमेश्वर हैं। उसी की शरण लो ।

अन्तिम बात साहूकार की है । धीरे धीरे साहूकारों से दूर रहने की कोशिश करनी चाहिए, परन्तु कर्ज चुकाने के फेर में बाल–बच्चों की उपेक्षा न करो । बच्चों को दूध–घी दो । भरपूर भोजन दो । लड़के समाज के हैं । बच्चे जितने मेरे पास हैं, उतने साहूकार के भी हैं । वे सारे देश के हैं । लड़कों को न देकर तुम साहूकार को ही देते हो । इसलिए पहले पेट भर खाओ ।

बाल–बच्चों को खिलाओ, घर की जरूरतें पूरी होने पर कुछ बकाया रहे, तो जाकर दे दो । कर्ज तो देना ही है । भोग–विलास के बाद नहीं ।

पहले दूसरे कई राज्य हुए तो देहात का यह वास्तविक स्वराज्य कभी नष्ट नहीं हुआ । इसलिए हमें रोटियों के लाले नहीं पड़े, परन्तु यह खादी का स्वराज्य, देहाती उद्योग–धन्धों का स्वराज्य नष्ट हो गया है । इसलिए देहात वीरान और डरावने दिखाई देने लगे ।

शब्द-अर्थ

लक्ष्मी - धन, वैभव; पीहर- मायका; बेतहाशा- अंधाधुंध; व्यसन- शौक, आदत, गिरस्ती- गृहस्थी, जुर्माना- अर्थदण्ड, बिनौले- बीज, स्वावलम्बी- आत्म निर्भर, वीरान-सूनसान, फेहरिस्त- सूची, नाका- मुहाना, चौकी, अलगोजा- बाँसुरी, दावानल- जंगल की आग, स्वाश्रयी- आत्मनिर्भर, उद्योगशील-प्रयत्नशील, तस्फिया-फैसला ।

अनुशीलनी

भावबोध और विचार :

(क) मौखिक :-

(i) ग्राम-लक्ष्मी के रूप में गाँव में क्या-क्या मिलते हैं- बताइए ।

(ii) ग्राम-लक्ष्मी किन किन रास्तों से भाग जाती है ?

(ख) लिखित :-

(i) लेखक ने ग्राम - लक्ष्मी का कैसा वर्णन किया है, उसे अपने शब्दों में लिखिए ।

(ii) इस निबंध में लेखक ने ग्राम-लक्ष्मी की कैसी उपासना करने को कहा है ?

(iii) लेखक के अनुसार यथार्थ लक्ष्मी क्या है ?

(iv) ग्राम-लक्ष्मी के भागने के चार रास्ते कौन कौन से हैं ?

(v) भगवान् कृष्ण किन किन चीजों से सजते थे ?

(vi) गोकुल में श्रीकृष्ण क्या क्या करते थे ?

(vii) गाँव की पंचायत क्या काम करती है ?

अनुभव विस्तार :-

(i) आप अपने गाँव में घूमकर देखिए कि गाँव में क्या-क्या होता है ?

(ii) अपने दैनन्दिन जीवन में आप गाँव की क्या-क्या चीजें इस्तेमाल करते हैं, एक-एक करके कक्षा में बताइए ।

(iii) गाँव के किसी शादी ब्याह में जाकर देखिए कि उसमें कैसे-कैसे खर्चे होते हैं ।

भाषाबोध : -

(i) निम्नलिखित पंक्तियों को पूरा कीजिए :

(क) आज किसान के .... हो गए हैं ।

(ख) .... इसी तरह चारों दिशाओं में भाग खड़ी होती है ।

(ग) लड़के जितने अपने माँ-बाप के हैं उतने ही .... के भी हैं ।

(घ) स्वराज्य यानी .... का राज्य, अपने .... का राज्य ।

(ङ) देहात में प्रेम होता है, ... होता है ।

(च) .... लक्ष्मी देहात में हैं ।

(छ) इस तरह यह श्रीकृष्ण .... कृष्ण हैं ।

(ज) हमारे पूर्वजों ने गाँव की चीजों की .... है ।

(झ) कृष्ण ने झगड़ों का .... निगल लिया

(ञ) गाँव का .... हो, गाँव का .... हो, और गाँव का ही .... हो ।

(ii) **इस पाठ के आधार पर पाँच विदेशी शब्दों को चुनकर लिखिए :**

जैसे : हिफाजत, सुलतानी, बेतहाशा

(iii) **सर्वनाम-संज्ञा के स्थान पर जो शब्द प्रयुक्त होता है उसे सर्वनाम कहते हैं ।**

जैसे – यह, वह, उसने, हम, कोई, कुछ आदि ।

(iv) **निम्नलिखित वाक्यों से सर्वनाम के पद छाँटिए :**

(क) इस तरह इन देवताओं को एक आकाश का और दूसरा अमेरिका का–किसान को पूजना पड़ता है ।

(ख) यह देहाती लक्ष्मी किन–किन रास्तों से भागती है, सो देखो ।

(ग) इन चारों रास्तों को बन्द करना शुरू करें ।

(घ) उसकी जेब से चार आने गए ।

(ङ) यही सब सच्ची लक्ष्मी है।

(च) अपनी गलती से हमने गाँवों को मरघट बनाया।

(छ) वह पवित्र कलश मिट्टी का ही चाहिए ।

(v) **इन शब्दों के विभिन्न खण्डों को विच्छेद करके लिखिए :**

जैसे : परमात्मा = परम + आत्मा

स्वराज्य =

स्वदेश =

स्वावलम्बी =

सम्पन्न =

उद्योगशील =

व्यसन =

वन्दनवार =

प्राणघातक =

परावलम्ब =

(vi) निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया पदों के काल बताइए :

(क) वह शहर की तरफ दौड़ती है ।

(ख) वह चारों तरफ से भाग निकलता है ।

(ग) तेली चार आने देकर चमार से महँगा जूता खरीदता है ।

(घ) ऐसा वाद्य श्रीकृष्ण बजाता था ।

(ङ) वह गायें चराता था ।

(च) लड़कों के साथ, गोपवालों के साथ खेलते थे ।

(छ) ईख का कोल्हू है, चरखा चल रहा है, धुनियाँ धुन रहा है, तेल का कोल्हू चूँ-चर्र बोल रहा है ।

(vii) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :

लक्ष्मी –

रास्ता –

समारोह–

प्रेम –

श्रीकृष्ण –

मुकुट –

(viii) लिंग - कोई शब्द पुरुष जाति का है या स्त्री जाति का, यह जिससे जाना जाए, वह लिंग है ।

हिन्दी में लिंग दो प्रकार के हैं–

(क) पुंलिंग

(ख) स्त्रीलिंग

i) निम्नलिखित स्त्रीलिंग शब्दों के पुंलिंग रूप लिखिए :

हथिनी, देवरानी, शिष्या, बालिका, सास

ii) निम्नलिखित पुंलिंग शब्दों के त्रीलिंग रूप लिखिए :

श्रीमान, धोबी, बेटा, सेवक, साँप

iii) निम्नलिखित शब्दों का लिंग निर्णय करके उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए:

रोटी, पानी, पेट, सूर्य, आँख ।

न्यायमंत्री

सुदर्शन

यह घटना आज से २५०० वर्ष पहले की है ।

एक दिन सन्ध्या समय जब आकाश में बादल लहरा रहे थे, बुद्धगया नामक गाँव में एक परदेशी शिशुपाल ब्राह्मण के द्वार पर आया और नम्रता से बोला 'क्या मुझे रात काटने के लिए स्थान मिल सकेगा ?

शिशुपाल अपने गाँव में सबसे गरीब थे । घोर दरिद्रता ने भूखे बैल की तरह उनकी हड्डियों का पिंजर निकाल रखा था । उनकी आजीविका थोड़ी सी भूमि पर चलती थी । परन्तु फिर भी परदेशी को द्वार पर देखकर उनका मुख खिल गया । उन्होंने मुसकराते हुए कहा– 'यह मेरा सौभाग्य है । आइए, पधारिए, अतिथि के चरणों से मेरा चौका पवित्र हो जाएगा ।'

परदेशी और ब्राह्मण दोनों अन्दर गए । भारतवर्ष में अतिथि–सत्कार की रीति बहुत प्रचलित थी । शिशुपाल के पुत्र ने अतिथि का सत्कार किया । परदेशी मुग्ध हो गया । उसने ब्राह्मण से कहा– 'आपका पुत्र बड़े काम का आदमी है । उसकी सेवा से मैं बहुत प्रसन्न हुआ ।'

शिशुपाल ने नाक भौं चढ़ाकर उत्तर दिया– 'आप हमारे अतिथि हैं, अन्यथा ब्राह्मण ऐसे शब्द कभी नहीं सुन सकते । मेरा पुत्र ब्राह्मण है, सेवक नहीं ।'

परदेशी ने अपनी भूल पर लज्जित होकर कहा– ‘क्षमा कीजिए । मेरा यह अभिप्राय न था । परन्तु आजकल वे ब्राह्मण कहाँ हैं ? अब तो आँखें उनके लिए तरसती है ।’

शिशुपाल ने उत्तर दिया– ‘ब्राह्मण तो अब भी बहुत हैं, कमी केवल देखने वाले व्यक्तियों की है ।’

‘मैं आप का अभिप्राय नहीं समझा ।’

शिशुपाल ने एक लम्बी-चौड़ी वक्तृता आरम्भ कर दी, जिसको सुनकर परदेशी चकित रह गया । उसकी बातें ऐसी युक्तियुक्त और प्रभावशाली थी कि परदेशी हैरान रह गया । इस छोटे से गाँव में ऐसा विद्वान्, ऐसा महान्, ऐसा तत्त्वदर्शी पण्डित हो सकता है, इसकी उसे कल्पना भी न थी । उसने शिशुपाल का युक्तियुक्त तर्क और शासन-पद्धति का इतना विशाल ज्ञान देखकर कहा– ‘मुझे ख्याल न था कि यहाँ गोबर में फूल खिला होगा । महाराज अशोक को पता लग जाए, तो आपको किसी ऊँची पदवी पर नियुक्त कर दें।’

शिशुपाल के सूखे होठों पर मुसकुराहट आ गई । जिसका अन्तःकरण कुढ़ रहा हो, जिसके नेत्र आँसू बरसा रहे हों, जिसका मस्तिष्क अपने आप में न हो, उसके होठों पर हँसी भी भयानक प्रतीत होती है । शिशुपाल की आँखें नीचे झुक गईं । उन्होंने थोड़ी देर बाद सिर उठाया और कहा– ‘आजकल बड़ा अन्याय हो रहा है, जब देखता हूँ तो मेरा खून उबलने लग जाता है, और रात की नींद उड़ जाती है ।’

परदेशी ने पैंतरा बदल कर उत्तर दिया– ‘शेर बकरी एक घाट पानी पी रहे हैं ।’

‘रहने दो मैं सब जानता हूँ ।’

‘दूसरों का दोष देखना आसान है । परन्तु आप कुछ करके दिखाना कठिन है ।’

शिशुपाल ने अग्नि पर पड़े हुए पत्ते की तरह झुलसकर उत्तर दिया– ‘अवसर मिले तो दिखा दूँ कि न्याय किसे कहते हैं।’

'तो आप अवसर चाहते हैं ?'

'हाँ ! मैं अवसर चाहता हूँ ।'

'फिर कोई अन्याय न होगा ।'

'बिलकुल न होगा ।'

'कोई अपराधी दण्ड से न बचेगा ।'

'कदापि नहीं बचेगा ।'

परदेशी के सहज भाव से कहा- 'यह बहुत कठिन है ।'

'ब्राह्मण के लिए कोई काम कठिन नहीं । अवसर मिले तो मैं न्याय का डंका बजा कर दिखा दूँगा, कि न्याय क्या होता है ।

परदेशी के मुख पर मुसकराहट थी, आँखों में आभा । उसने हँसकर उत्तर दिया - 'यदि मैं अशोक होता, तो आपकी इच्छा पूरी कर देता ।'

सहसा ब्राह्मण के हृदय में एक सन्देह उठा, परन्तु दूसरे क्षण में दूर हो गया । अब वह फिर वही ब्राह्मण था, वही उसकी बातें थीं, वही उसकी गम्भीरता थी ।

(२)

दूसरे दिन महाराजा अशोक के दरबार में शिशुपाल को बुलाया गया । इस समाचार से गाँव भर में आग सी लग गई । यह वह समय था जब महाराजा अशोक का राज्य आरम्भ ही हुआ था, और दमन नीति का भी आरम्भ था । उस समय महाराज ऐसे निर्दय और निष्ठुर थे कि ब्राह्मणों और स्त्रियों को भी फाँसी पर चढ़ा दिया करते थे । उनकी दयाहीन दृष्टि से बड़े-बड़े वीरों के भी प्राण सूख जाते थे । लोगों ने समझ लिया, कि शिशुपाल के लिए महाराजा का यह बुलावा मृत्यु का बुलावा है । उनको पूरा-पूरा विश्वास था कि अब शिशुपाल जीते जी न लौटेंगे । परिणाम यह हुआ कि शिशुपाल के सम्बन्धियों पर दुःख का पहाड़ टूट पड़ा । वे फूट-फूट कर रोने लगे । लोगों ने धीरज बँधाना चाहा । परन्तु शिशुपाल

के माथे पर बल न था । वे कहते थे– 'जब मैंने कोई अपराध नहीं किया, राज्य के किसी कानून को नहीं तोड़ा, तो कोई मुझे क्यों फाँसी देने लगा । निस्सन्देह राजा ऐसा अन्यायी और अन्धा नहीं हो सकता कि निर्दोष ब्राह्मणों को दुःख देने पर उतारू हो जाए ।'

दुःख और कष्ट की लहरों के बीच समुद्र की शिला की तरह शिशुपाल अटल खड़े थे । उन्होंने पुत्र और स्त्री को दिलासा दिया, और पाटलिपुत्र की ओर चले ।

साँझ हो गई थी, जब शिशुपाल पाटलिपुत्र पहुँचे । वे जब राजमहल में पहुँचाए गए, उस समय तक उनको किसी बात का भय न था । परन्तु राजमहल की शान–शोभा देखकर उन पर भय छा गया । मनुष्य थोड़े जल में निर्भय रहता है, परन्तु गहराई में पहुँचकर घबरा जाता है । शिशुपाल के हृदय में कई प्रकार के बुरे–बुरे विचार उठने लगे । कभी सोचते किसी ने कोई शिकायत न कर दी हो, जो जी में आता है, बेधड़क कह दिया करता हूँ। कहीं इसका फल न भुगतना पड़े। कई शत्रु हैं। कभी सोचते वह परदेशी पता नहीं कौन था ? हो सकता है कोई गुप्तचर ही हो। और यह आग उसी की लगाई हुई हो, तब तो उसने सब कुछ कह दिया होगा । कैसी मूर्खता की, जो एक अपरिचित से घुलमिल कर बातें करता रहा, अब पछता रहा हूँ। कभी सोचते शायद मेरी दरिद्रता की कहानी यहाँ तक पहुँच गई हो और महाराज ने मुझे कुछ देने को बुला भेजा हो, यह भी तो हो सकता है । इस विचार से हृदय–कमल खिल जाता, परन्तु फिर दूसरे विचार से मुरझा जाता ।

इतने में सेवक ने आकर कहा– 'महाराज आ रहे हैं ।'

शिशुपाल का कलेजा धड़कने लगा । उनके प्राण होठों तक आ गए, राजा का कितना रोब होता है, इसका पहली बार अनुभव हुआ । दृष्टि द्वार की ओर जम गई । महाराज अशोक राजकीय ठाठ से कमरे में आए, और मुसकराते हुए बोले– ब्राह्मण देवता नमस्कार । आशा है, आपने परदेशी को पहचान ही लिया होगा ।

शिशुपाल घबरा कर खड़े हो गए । इस समय उनका रोम–रोम काँप रहा था.....यह वही था । वही परदेशी ।

(३)

हाँ यह वही थे । शिशुपाल काँप कर रह गए । कौन जानता था कि शीतकाल की रात को एक ब्राह्मण के यहाँ आश्रय लेने वाला परदेशी, भारत का सम्राट हो सकता है । शिशुपाल ने तुरन्त अपने अस्थिर हृदय को स्थिर कर लिया और कहा– 'मुझे पता न था कि आप ही महाराज हैं । अन्यथा इतनी स्वतन्त्रता से बातचीत न करता । राजा राजा है, प्रजा प्रजा है । दोनों के बीच में बहुत अन्तर है ।'

महाराज अशोक बोले 'हूँ' ।

'परन्तु मैंने कोई बात बढ़ाकर नहीं कही थी । मैं हर बात को पहले तोलता फिर उसे मुँह से बोलता हूँ ।'

'हूँ' ।

'मैं प्रमाण दे सकता हूँ ।'

महाराज ने कहा– 'हम नहीं चाहते ।'

'तो मुझे क्या आज्ञा होती है महाराज की ओर से ?'

'महाराज आपकी परीक्षा करना चाहते हैं ।'

शिशुपाल के हृदय में सहसा एक विचार उठा– मगर क्या वह ठीक हो जाएगा ?

महाराज ने कहा–'आपने कहा था कि अगर आपको अवसर दिया जाए, तो आप न्याय का डंका बजा देंगे । हम आपकी इसी विषय में परीक्षा लेना चाहते हैं । आप तैयार हैं ?'

शिशुपाल ने हंस की तरह गर्दन ऊँची की, और कहा– 'जी हाँ । अगर महाराज की इच्छा है तो मैं तैयार हूँ ।'

'कल प्रातःकाल से आप न्याय-मंत्री नियत किए जाए हैं । सारे नगर पर आपका अधिकार होगा ।'

‘पाटलिपुत्र में शान्ति–रक्षा–विभाग का हर कर्मचारी आपके अधीन होगा और शान्ति रखने का उत्तरदायित्व केवल आप ही पर होगा ।’

बहुत अच्छा ।’

‘यदि कोई दुर्घटना हो गई, या कोई हत्या हो गई तो उसका उत्तर–दायित्व भी आप पर होगा ।’

‘बहुत अच्छा ।’

महाराज थोड़ी देर चुप रहे, फिर हाथ से शाही अँगूठी उतार कर बोले– ‘यह राजमुद्रा है। आप कल प्रातःकाल की पहली किरण के साथ न्याय–मंत्री समझे जाएँगे । हम देखेंगे, आप अपने आपको किस प्रकार सफल शासक सिद्ध कर सकते है । आप अवसर चाहते थे, आपको अवसर मिल गया ।’

४

एक महीना बीत गया । न्याय–मंत्री के न्याय और प्रबन्ध की चारों ओर धाक बैठ गई। शिशुपाल ने नगर पर जादू डाल दिया है, ऐसा प्रतीत होता था । उन्होंने चोर–डाकुओं को इस प्रकार वश में कर लिया था, जिस प्रकार साँप को बीन बजाकर सँपेरा वश में कर लेता है । उन दिनों यह हाल था कि लोग दरवाजे तक खुले छोड़ जाते थे, परन्तु किसी की चोरी नहीं होती थी । शिशुपाल का न्याय अन्धा और बहरा था जो न सूरत देखता था, न सिफारिश सुनता था । वह केवल दंड देना जानता था और दंड भी शिक्षाप्रद । नगर की हालत में आकाश–पाताल का अन्तर पड़ गया । लोग हैरान थे, लोग खुश थे, लोगों की खुशी उनके मन में न समाती थी ।

रात का समय था । आकाश में तारे खेलते थे । एक अमीर ने एक विशाल भवन के द्वार पर दस्तक दी । दरीचे से किसी स्त्री ने सिर निकाल कर पूछा, ‘कौन है ?’

'मैं हूँ ।' दरवाज़ा खोल दो ।'

'परन्तु वे यहाँ नहीं हैं ।'

'परवा नहीं । तुम दरवाज़ा खोल दो ।'

स्त्री ने कुछ सोचकर उत्तर दिया- 'मैं नहीं खोलूँगी । तुम इस समय वापस चले जाओ ।'

अमीर ने क्रोध से कहा- 'दरवाजा खोल दो, नहीं तो मैं इसे तोड़ डालूँगा ।'

स्त्री ने उत्तर दिया- 'जानते नहीं हो, शहर पर शिशुपाल का शासन है । अब कोई इस प्रकार बलात्कार नहीं कर सकता ।'

अमीर ने तलवार निकाल कर दरवाजे पर आक्रमण किया । सहसा एक पहरेदार ने आकर उसका हाथ थाम लिया, और कहा- 'क्या कर रहे हो ?'

अमीर ने उसकी ओर आग भरी आँखों से देखा, और क्रोध भरे शब्दों में बोला- 'तुम कौन हो ?'

'मैं पहरेदार हूँ ।'

'तुम्हें पहरेदार किसने नियत किया है ?'

'न्याय-मंत्री ने ।'

'मूर्खता न करो । मैं उसे भी मिट्टी में मिला सकता हूँ ।'

पहरेदार ने साहस से उत्तर दिया- 'परन्तु इस समय महाराज अशोक भी आएँ तो भी मैं यहाँ से न टलूँगा ।'

'क्यों मौत को बुला रहे हो ?'

'मैंने जो प्रण किया है उसे पूरा करूँगा ।'

'किससे प्रण किया है ?'

'न्याय-मन्त्री से ।'

'क्या प्रण किया है ?'

'यही कि जब तक तन में प्राण हैं और जब तक लहू का अन्तिम बिन्दु भी मेरे शरीर में बाकी है मैं अपने कर्त्तव्य से कभी पीछे न हटूँगा ।'

अमीर ने तलवार खींच ली । पहरेदार ने पीछे हट कर कहा– 'आप भूल कर रहे हैं । मैं नौकरी पर हूँ । मेरी पीठ पर सारे राज्य की सेना है । 'परन्तु अमीर ने सुना अनसुना कर दिया और तलवार लेकर झपटा । पहरेदार ने भी तलवर खींच ली । परन्तु वह अभी नया था, पहले ही बार में गिर गया और मारा गया । अमीर का लहू सूख गया । उसके हाथों के तोते उड़ गए। वह उसे केवल डराना चाहता था । परन्तु घाव मर्मस्थल पर लगा । अमीर ने उसकी लाश को एक ओर कर दिया और आप भाग निकला ।

(५)

प्रातःकाल इस घटना की घर–घर में चर्चा थी । लोग हैरान थे कि इतना साहस हो गया कि शान्ति–रक्षा–विभाग के कर्मचारी को जान से मार डाले, और फिर शिशुपाल के शासन में । राजधानी में आंतक छा गया । शान्ति–रक्षा विभाग के कर्मचारी चारों ओर दौड़ते–फिरते थे । मानो यह उनके जीवन और मरण का प्रश्न हो । न्याय–मंत्री ने भी मामले की खोज में दिन रात एक कर दिया । यह घटना उसके शासन–काल की पहली दुर्घटना थी । वह खाना पीना भूल गया, आँखों से नींद उड़ गई । हत्यारे की खोज में कोई कसर उठा न रखी, परन्तु हत्यारे का कुछ भी पता न लगा ।

असफलता का हर एक दिन अशोक की क्रोधाग्नि को अधिकाधिक प्रज्ज्वलित कर रखा था । वे कहते– 'तुमने कितने जोर से न्याय का दावा किया था ? अब क्या हो गया ?'

न्याय–मंत्री लज्जा से सिर झूका झुका लेते ।

महाराज कहते– 'हत्यारा कब तक पकड़ा जायेगा ?'

न्याय–मंत्री उत्तर देते– 'यत्न कर रहा हूँ आशा है जल्द ही पकड़ लूँगा।'

महाराज कुछ दिन ठहर कर फिर पूछते– 'हत्यारा पकड़ा गया ?'

दूसरे दिन महाराज वही प्रश्न करते ।

न्याय-मंत्री कहते, 'नहीं ।'

महाराज का क्रोध भड़क उठता । उनकी आँखों से आग की चिनगारियाँ निकलने लगतीं, बादल की तरह गरज कर कहते- 'हम यह 'नहीं' सुनते-सुनते तंग आ गये हैं ।'

इसी प्रकार एक सप्ताह बीत गया, परन्तु हत्यारे का पता न लगा । अन्त में महाराज अशोक ने शिशुपाल को बुला कर कहा-'तुम्हें तीन दिन की और मोहलत दी जाती है । यदि इस बीच में हत्यारा न पकड़ा गया तो तुम्हें फाँसी दे दी जाएगी । और हम जो कहते हैं वह करके भी दिखा सकते हैं । अपनी जान बचाने का यत्न करो ।'

इस समाचार से नगर भर में हलचल सी मच गई। एक महीने के अन्दर अन्दर शिशुपाल लोकप्रिय हो चुके थे । उनके न्याय की चारों ओर धाक बँध गई थी । लोग महाराज को गालियाँ देने लगे । जहाँ चार आदमी जमा होते, इसी विषय पर बातचीत करने लगते । वे चाहते थे कि चाहे कुछ भी हो जाए, परन्तु शिशुपाल का बाल बाँका न हो । शिशुपाल स्वयं बड़ी उत्सुकता के साथ हत्यारे की खोज में लीन थे । परन्तु व्यर्थ । यहाँ तक कि तीसरा दिन आ गया, अब कुछ ही घण्टे बाकी है ।

रात का समय था, परन्तु शिशुपाल की आँखों में नींद न थी। वे नगर के एक घने बाजार में घूम रहे थे । सहसा एक मकान की खिड़की खुली और एक स्त्री ने झाँक कर बाहर देखा। चारों ओर निस्तब्धता छाई हुई थी । स्त्री ने धीरे से कहा-'तुम कौन हो ? क्या पहरेदार ?'

निराशा के अँधेरे में आशा की एक किरण चमक गई ।

शिशुपाल ने उत्तर दिया- 'मैं न्याय-मंत्री हूँ ।'

'तो जरा यहीं ठहरिए ।'

स्त्री खिड़की से पीछे सट गई, और दीपक लेकर नीचे आई । न्याय-मंत्री को साथ लेकर वह अपने कमरे में गई और बोली- 'आज अन्तिम रात है ?'

न्याय-मंत्री ने चुभती हुई दृष्टि से स्त्री की ओर देखा, और उत्तर दिया-'हाँ अन्तिम ।'

शब्द साधारण थे, परन्तु इनका अर्थ साधारण न था । स्त्री तिलमिलाकर खड़ी हो गई और बोली- 'मैं इस घटना को अच्छी तरह जानती हूँ ।'

शिशुपाल की मुर्दा देह में प्राण आ गये । वे धैर्य धरकर बोले- 'तो कहो ।'

रात का समय था । हत्यारे ने इस मकान का दरवाजा खटखटया। वह यहाँ प्राय: आया करता है।

'परन्तु क्यों ?'

'उसका आचार अच्छा नहीं ।'

'फिर आगे ?'

मैंने उत्तर दिया, जिसके पास तुम आए हो वह आज यहाँ नहीं है । परन्तु उसने यह झूठ समझा, और दरवाजा तोड़ने को तैयार हुआ । पहरेदार ने उसे रोका और उसके हाथ से मारा गया ।'

न्याय-मंत्री ने पूछा- 'परन्तु हत्यारा कौन है ?'

स्त्री ने उसके कान में कुछ कहा, और सहमी हुई कबूतरी की तरह चारों ओर देखा ।

(६)

दूसरे दिन दरबार में तिल धरने को स्थान न था । आज न्याय-मंत्री का भाग्य-निर्णय होने वाला था । अशोक ने सिंहासन पर पैर रखते ही कहा- 'न्याय-मंत्री को उपस्थित किया जाय !'

शिशुपाल सामने आए । इस समय उनके मुख पर कोई चिन्ता, कोई अशान्ति न थी । महाराज ने पूछा- 'हत्यारे का पता लगा ?'

न्याय-मंत्री ने साहसपूर्वक उत्तर दिया- 'जी हाँ ! लग गया ।'

'पेश करो ।'

न्याय- मंत्री ने सिर झुकाकर कुछ सोचा । इस समय उनके हृदय में दो विरोधी शक्तियों का संग्राम हो रहा था । यह उनके मुख से स्पष्ट प्रतीत होता था । सहसा उन्होंने दृढ़ संकल्प से सिर उठाया, और अपने एक उच्च अधिकारी को लक्ष्य करते हुए कहा- 'धनवीर !'

'श्रीमन् !'

'गिरफ्तार कर लो, मैं आज्ञा देता हूँ ।'

इशारा महाराज की ओर था, दरबार में सन्नाटा छा गया । अशोक का चेहरा लाल हो गया, मानो वह तपा हुआ ताँबा हो । आँखों से अग्नि-कण निकलने लगे । वे तिलमिला कर खड़े हो गए और बोले- 'अरे ब्राह्मण ! तेरी यहाँ तक मजाल ।' न्याय-मंत्री ने ऐसा प्रकट किया मानो कुछ सुना ही नहीं, और अपने शब्दों को फिर दोहराया, मैं आज्ञा देता हूँ गिरफ्तार कर लो' ।

धनवीर पुतली की तरह आगे बढ़ा । दरवरियों की साँस रुक गई । महाराज सिंहासन से नीचे उतर आए । न्याय-मंत्री ने कहा - 'यह हत्यारा है । इसे मेरी अदालत में पेश करो ।'

यह कह कर वह अपनी कचहरी की ओर चले गए।

धनवीर ने अशोक को हथकड़ी लगा ली, और शिशुपाल की कचहरी की ओर ले चला । वहाँ सारा नगर उपस्थित था । शिशुपाल ने आज्ञा दी- 'अपराधी राजकुल से है, इसे अकेला पेश किया जाए ।'

महाराज अशोक ने संकेत किया, मंत्रीगण पीछे हट गए । महाराज उस जंगले में खड़े हो गए, जो अपराधियों के लिए था । छत्रपति नरेश ने अपने राज्य में स्वयं उसके नौकर के हाथों यह व्यवहार हो सकता है, इसका किसी को ख्याल भी न था । परन्तु शिशुपाल दृढ़ संकल्प के साथ न्यायासन पर विराजमान थे । उन्होंने आँख से महाराज को प्रणाम किया । हाथों को न्याय-रज्जु ने बाँध रखा था । वे धीरे से बोले- तुम पर पहरेदार की हत्या का आरोप है । बोलो, तुम इसका क्या उत्तर देते हो ?' महाराज अशोक ने होंठ काट कर उत्तर दिया- 'वह उद्दण्ड था ।'

तो तुम अपराध स्वीकार करते हो ? 'हाँ ! हमने उसको मारा है। परन्तु हमने जानबूझकर नहीं मारा, हम उसे डराना चाहते थे । वह घायल हो गया । घाव गहरा था, वह मर गया । मगर वह उद्दण्ड था ।'

‘वह उद्दण्ड नहीं था । मैं उसे चिरकाल से जानता हूँ ।’

‘वह उद्दण्ड था ! तुम झूठ बोलते हो मैं तुम्हें मौत की सजा देता हूँ ।’

अशोक की आँखें लाल हो गईं । मंत्रियों ने तलवारें निकाल लीं। कई आदमी शिशुपाल को गालियाँ देने लगे । एक आवाज आई– तुम अपना सिर सँभालो । अशोक ने हाथ उठाकर शांत रहने का संकेत किया । चारों ओर फिर वही निस्तब्धता छा गई। न्याय-मंत्री ने कड़ककर कहा– ‘आप लोगों का क्रोध करना सर्वथा अनुचित है। मैं इस समय न्याय-मंत्री के आसन पर हूँ, और न्याय करने बैठा हूँ । महाराज अशोक की दी हुई मुद्रा मेरे हाथ में है। यदि किसी ने शोर-शार किया, तो मैं उसे भी अदालत के अपमान के अपराध में गिरफ्तार कर लूँगा । लोग चुप हो गए ।

‘अशोक ! तुमने राज-कर्मचारी की हत्या की है । मैं तुम्हारे वध की आज्ञा देता हूँ ।’ महाराज ने सिर झुका दिया । इस समय उनके हृदय में आनन्द का समुद्र लहरें मार रहा था । सोचते थे, यह मनुष्य सोना है, जो आग में पड़कर कुन्दन हो गया है । कहता था, मेरा न्याय अपनी धूम मचा देगा । इसका वह वचन झूठा न था । इसने अपने कहने की लाज रख ली है । ऐसे ही मनुष्य होते हैं, जिन पर जातियाँ अभिमान करती हैं, और जिन पर लोग अपना तन-मन निछावर करने को उद्यत हो जाते हैं । उन्होंने एक विचित्र भाव से सिर ऊँचा किया और कहा– ‘हम इस आज्ञा के विरुद्ध कुछ नहीं बोलना चाहते ।’

न्याय-मंत्री ने एक आदमी को इशारा किया । वह एक स्वर्ण-मूर्ति लेकर उपस्थित हुआ । न्याय-मंत्री ने खड़े होकर कहा– ‘सज्जनो ! यह सच है कि मैं न्याय-मंत्री हूँ । यह सच है कि मेरा काम न्याय करना है । यह भी सच है, कि एक राज -कर्मचारी की हत्या की गई है । उसका दण्ड अवश्यम्भावी है । परन्तु शास्त्रों में राजा को ईश्वर का रूप माना जाता है । उसे ईश्वर ही दण्ड दे सकता है । यह काम न्याय-मंत्री की शक्ति से बाहर है । इसलिए मैं आज्ञा देता हूँ कि महाराज को चेतावनी देकर छोड़ दिया जाए,और उनकी यह मूर्त्ति फाँसी पर लटकायी जाए, ताकि लोगों को शिक्षा मिले और वे भविष्य में कोई ऐसा अपराध न करें ।

न्याय-मंत्री का जय-जय कार हुआ । लोग इस न्याय पर लट्टू हो गए । वे कहते थे - वह मनुष्य लोहे का है जो न किसी व्यक्ति से डरता है, और न किसी शक्ति के आगे सिर झुकाता है । यह अन्तःकरण की आवाज सुनता है, और उस पर निर्भयता से बढ़ा चला जाता है । और कोई होता, तो महाराज के सामने हाथ बाँध कर खड़ा हो जाता । परन्तु इसने उन्हें तुम कह कर सम्बोधन किया है, मानो कोई साधारण अपराधी हो । महाराज के शरीर में रोमांच हो गया । सहस्त्रों आँखों ने आनन्द के आँसू बहाए, और सहस्रों जबानों ने जोर-जोर से कहा- 'न्याय-मंत्री की जय ।'

रात हो गई थी, न्याय-मंत्री राज महल में पहुँचे और अशोक के सामने शाही अँगूठी रखकर बोले, महाराज ! यह अपनी अँगूठी आप सँभालें । मैं अपने गाँव वापस जाऊँगा ।'

अशोक ने सम्मान की दृष्टि से उनकी तरफ देखकर कहा-आज आप ने मेरी आँखें खोल दी हैं । अब यह कैसे हो सकता है ?

परन्तु श्रीमान्....

अशोक ने बात काट कर कहा- 'आपका साहस मैं कभी न भूलूँगा । वह बोझ आप ही उठा सकते हैं । मुझे कोई दूसरा इस पद के योग्य दिखाई नहीं देता ।

न्याय-मंत्री निरुत्तर हो गए ।

•••

शब्द-अर्थ

आजीविका - रोजगार, सौभाग्य- अच्छा भाग्य, चौका- रसोई का स्थान, अभिप्राय- उद्देश्य, वक्तृता- भाषण, अवसर- अवकाश, समय, दमन- दण्ड, स्वतंत्रता- आजादी, नियत- नियुक्ति, दरीचे- खिड़की, मोहलत- अवधि, निस्तब्धता- सन्नटा, संग्राम- युद्ध, जंगले- खिड़की, निरुत्तर - उत्तर न दे पाना ।

अनुशीलनी

भावबोध और विचार :

(क) मौखिक :

(i) इस कहानी को ध्यान से पढ़िए और अपनी कक्षा में सुनाइए ।

(ii) इस प्रकार के और कहानियाँ पढ़िए और कक्षा में सुनाइए ।

(ख) लिखित :

(i) शिशुपाल ब्राह्मण के घर में आनेवाला परदेशी कौन था ?

(ii) शिशुपाल की किस बात से परदेशी चकित रह जाता है ?

(iii) अशोक का दरबार कहाँ था ?

(iv) राजमहल पहुँचने पर शिशुपाल की कैसी दशा हुई ?

(v) सम्राट अशोक ने शिशुपाल को न्याय-मंत्री क्यों बनाया ?

(vi) न्याय-मंत्री शिशुपाल पहरेदार के हत्यारे को कैसे पकड़ता है ?

(vii) न्याय-मंत्री राजा को क्या दण्ड देता है ?

(viii) शिशुपाल ने राजा को सजा देने के बाद क्या किया ?

अनुभव विस्तार :

(१) सम्राट अशोक के बारे में कुछ अधिक जानकारियाँ संग्रह कीजिए ।

(२) आपके घर में अतिथि- सत्कार कैसे होता है, लिखिए ।

भाषाबोध :

(क) यह किसने कहा ? किससे कहा ? क्यों कहा ?

(i) अतिथि के चरणों से मेरा चौका पवित्र हो जाएगा ।

(ii) आजकल बड़ा अन्याय हो रहा है ।

(iii) शेर बकरी एक घाट पानी पी रहे हैं ।

(iv) यदि मैं अशोक होता, तो आपकी इच्छा पूरी कर देता ।

(v) तुम पर पहरेदार की हत्या का आरोप है ।

(ख) 'क' स्तंभ के साथ 'ख' स्तंभ के सही शब्दों को मिलाइए ।

(क)	(ख)
परदेशी	दण्ड
शिशुपाल	राजकर्मचारी
पहरेदार	राज्य
पाटलीपुत्र	गाँव
फाँसी	न्यायमंत्री
बुद्धगया	अशोक

(ग) इन शब्दों से वाक्य बनाइए :

आजीविका, सौभाग्य, चौका, अतिथि- सत्कार, अभिप्राय, वक्तृता, अवसर, दमन, सन्देह, स्वतंत्रता

(घ) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

गरीब, परदेशी, सेवक, कल्पना, अन्याय, आसान, निर्दय, मृत्यु, अपराधी, स्वतंत्रता

(ङ) एक शब्द में उत्तर दीजिए :

(i) न्यायमंत्री का नाम क्या था ?

(ii) परदेशी अतिथि कौन था ?

(iii) असल में हत्यारा कौन था ?

(iv) शिशुपाल किस गाँव मे रहता था ?

(च) इन मुहावरों के अर्थ लिखिए :

(i) गोबर में फूल खिलना–

(ii) न्याय का डंका बजाना–

(iii) कलेजा धड़कना–

(iv) मिट्टी में मिलाना

(v) मुर्दा देह में प्राण आ जाना–

समास

जब दो से अधिक शब्दों के योग होते समय पारस्परिक सम्बन्ध सूचक शब्द या कारक चिह्न लोप हो जाता है, तथा एक नया शब्द बनाया जाता है,उसे समास पद कहते हैं । समास पद को पृथक्–पृथक् करने की प्रक्रिया को समास–विग्रह कहते हैं । समास का अर्थ है 'संक्षेप' । समास के चार भेद हैं–

(१) अव्ययीभाव समास

(२) तत्पुरुष समास

(३) द्वन्द्व समास

(४) बहुब्रीहि समास

तत्पुरुष समास – तत्पुरुष तत्पुरूष समास में दूसरा पद प्रधान होता है । बीच की विभक्ति का लोप होता है ।

जैसे – राजपुत्र = राजा का पुत्र

समास विग्रह कीजिए :

अतिथि सत्कार =

न्यायमंत्री =

राजमहल =

शीतकाल =

शांतिरक्षा =

राजकुल =

मानव भूमि भारत

राधाकांत मिश्र

सबने देखी थी वह शाम
बंदूकें उगल रही थी आग,
देखते देखते पट गया था
लाशों से जलियाँवाला बाग ।

सबने देखा था उस दिन
देश का सारा कच्चा माल
विलायत जाता था वहाँ करने
कारखानों को मालामाल ।

सबने देखा था उस दिन
लाठी टेक चलता एक बूढ़ा
मुट्ठी भर नमक बटोरने
पीछे था जन-समुद्र खड़ा ।

फिर दुनियावालों ने सुनी
वह ललकार-करो या मरो,
''यह देश हमारा है अपना
अंग्रेजो ! तुम भारत छोड़ो !''

फिर आई वह निराली रात
जब सारा संसार सोया था
देखने आजादी का सूरज
भारत हमारा जागा था ।

सूरज ने जब छुआ क्षितिज
लाल किले के शिखर पर
उड़ता था तिरंगा फरफर
मिला देश को नव कलेवर ।

आई नई जान देश में
खेतों में नई हरियाली,
नये नये कल कारखानों में
भरे माल और खुशहाली ।

बनें बाँध नहरें संयंत्र
आई देश में हरित्-क्रांति
चौकस सीमांत में संतरी
जीओ-जीने दो, अपनी नीति ।

विध्वंसक परमाणु तंत्र
पोखरण हरिकोटा के यंत्र
नहीं भूत, देवों के ये मंत्र
शांति-दूत जो सदा स्वतंत्र ।

रुकना नहीं है चरैवेति
आगे हम पीछे संसृति,
उठो जागो लो वरदान
मानव भूमि भारत महान ।

शब्द-अर्थ

पटगया - भरगया, कच्चामाल = मूलवस्तु जिससे कोई चीज बनाई जाए, मालामाल- धनवान, बटोरना- समेटना, जन समुद्र- लोगों का समूह, ललकार - आह्वान, निराली- अनोखी, चरैवेति - चलते रहो, क्षितिज - दिगंत, कलेवर- ढाँचा, रूप, संयंत्र-बड़ा कारखाना, क्रांति- आंदोलन, चौकस- सचेत, सीमांत- सीमा के अंत, विध्वंसक - ध्वंस करने वाला, संसृति - संसार, दुनिया ।

अनुशीलनी

भाव बोध और विचार :

(क) मौखिक :

(१) इस कविता को याद कीजिए और कक्षा में आवृत्ति कीजिए ।

(२) कविता में व्यक्त कवि के विचारों को समझकर सबको बताइए ।

(ख) लिखित :

(i) इस कविता में व्यक्त कवि के विचारों को अपने शब्दों में लिखिए ।

(ii) जलियाँवाला बाग में किसने गोली-चलाई और क्यों ?

(iii) देश का सारा कच्चामाल कहाँ जाता था ?

(iv) लाठी टेक चलता एक बूढ़ा- किसे कहा गया है ? वह क्या कर रहा था ?

(v) 'करो या मरो' की ललकार किसलिए दी जा रही थी ?

(vi) आजादी के बाद देश में क्या-क्या परिवर्तन हुए ?

अनुभव विस्तार :-

(१) और कोई ऐसी कविता चुनिए जिसमें देशप्रेम का भाव हो । पढ़कर सुनाइए ।

(२) स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा लेने वाले सेनानियों के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए ।

भाषाबोध :

(१) निम्नलिखित पंक्तियों को पूरा कीजिए :

(क) लाठी टेक चलता ....
.... नमक बटोरने
पीछे थाा .... खड़ा ।

(ख) फिर आई वह................
.... संसार सोया था,
देखने .... सूरज ।

(ग) रुकना नहीं है ....
आगे हम पीछे ....
उठो जागो लो .... ।

(घ) .... परमाणु तंत्र
.... हरिकोटा के यंत्र
नहीं भूत, देखो ये .... ।

(ङ) खेतों में नई ....
.... कल कारखानों में
भरे माल और .... ।

(२) 'क' स्तंभ के साथ 'ख' स्तंभ को मिलाइए :

'क'	'ख'
भारत	संतरी
चौकस	आग
बंदूक	लाठी
बूढ़ा	फरफर
तिरंगा	करो या मरो
ललकार	महान

(ग) इस कविता में से ऐसे शब्द लिखिए :

जैसे हरियाली – खुशहाली

(घ) इनके दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :

आग, बाग, दिन, शाम, समुद्र, सूरज, मानव

(ङ) इनके विलोम शब्द लिखिए :

शाम –

बूढ़ा –

रात –

नव –

विध्वंस –

शांति –

(च) उपसर्ग ऐसे शब्दांश होते हैं जो, शब्दों के प्रारंभ में जुड़कर उसके अर्थ में विशेषता उत्पन्न कर देते हैं, या अर्थ को सर्वथा बदल देते हैं । उपसर्ग पृथक् करके लिखिए : **जैसे – विदेश = वि + देश**

कुविचार –	आजीवन–
अनुचर –	निवास–
प्रतिदिन –	सुपुत्र–
विशेष –	अनजान–

बलि का बकरा

शरतचंद्र चट्टोपाध्याय

लोग उसे लालू के नाम से पुकारते थे । लेकिन उसका घर का नाम कुछ और ही होगा । 'लाल' शब्द का अर्थ 'प्रिय' होता है । यह नाम उसका किसने रखा था, यह मैं नहीं जानता । लेकिन देखा ऐसा गया है कि कोई-कोई व्यक्ति यों ही सबके प्रिय बन जाते हैं ।

लालू भी ऐसा ही जीव था ।

स्कूल से पास होकर हम कॉलेज में दाखिल हो गए । लालू ने कहा, "भाई, अब मैं रोजगार करूँगा ।"

इसके बाद अपनी माँ से दस रुपये माँगकर उसने ठेकेदारी करना शुरू कर दिया । हम लोगों ने हँसकर उसका मखौल उड़ते हुए कहा, "दस रुपये से भला कहीं रोजगार होता है । अगर इतनी पूँजी से रोजगार होता तो सब कर लेते ।"

लालू ने कहा, ''मेरे लिए यही काफी है ।'' वह सबके लिए प्रिय था, इसीलिए उसे काम मिलते देर नहीं लगी । कॉलेज से लौटते वक्त नित्य हम उसे रास्ते में सिर पर छाता लगाए कुछ मजदूरों के बीच अपने काम में संलग्न पाते थे । हम लोगों को देखते ही चिढ़ाते हुए वह कह उठता था, ''अरे जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाकर जाओ, वरना 'परसेंटेज' में कमी पड़ जाएगी !''

गाँव की पाठशाला में जब हम एक साथ पढ़ते थे, तभी से वह मिस्त्री का काम करने में चतुर था । उसके बस्ते में एक नहरनी, एक छुरी, एक छोटी हथौड़ी, एक घोड़े का नाल और एक छेनी हर वक्त रहती थी । इन चीजों का संग्रह उसने कब और कैसे किया, यह मैं नहीं जानता, लेकिन ऐसा कोई कार्य नहीं बचा था, जिसे वह इन सामग्रियों से न कर सके । स्कूल के सभी साथियों का छाता मरम्मत, स्लेट का फ्रेम ठीक करना, खेल-कूद के समय फटे पाजामा या कमीज़ को सी देना, इसी तरह के वह बहुत-से कार्य किया करता था । किसी भी कार्य के लिए उसने 'ना' कभी नहीं किया । इसके अतिरिक्त वह नाना प्रकार की चीजें बनाया करता था । एक बार 'छठ' के मेले के समय दो आने का रंगीन कागज और मिट्टी के प्याले खरीदकर उसने कुछ बनाया और उन्हें गंगा किनारे बैठकर ढाई रुपए में बेचा था। उस मुनाफे की रकम में से उसने हम लोगों को 'चिनियाबादाम' खिलाया था।

इसी तरह दिन-व्यतीत होते गए और हम क्रमशः बड़े होते गए। लालू सबसे अधिक जिमनास्टिक खेल खेलता था। उसके बदन में जैसी ताकत थी वैसा ही साहस था। डरने का नाम उसने कभी नहीं सुना । कोई भी आकर बुलाए, उसके यहाँ चला जाता था । प्रत्येक की विपदा के समय सबसे पहले वह हाजिर होता था। अगर उसमें कोई ऐब था तो एक यही कि मौका पाने पर दूसरों को भयभीत करता था । चाहे कोई भी क्यों न हो, बच्चा- बूढ़ा उसके लिए सब बराबर थे। हम तो सोच ही नहीं पाते थे, पर वह न जाने कैसे-कैसे विचित्र उपाय खोज निकालता था ! आज उसकी एक कहानी सुना ही दूँ ।

पड़ोस के मनोहर चटर्जी के यहाँ काली-पूजा हो रही थी। ठीक अर्द्धरात्रि के समय बकरा-बलिदान होने वाला था, लेकिन बलि देने वाले लोहार का कहीं पता नहीं था। देर होते देख कई व्यक्ति उसके यहाँ गए, तो देखा लोहार के पेट में काफी दर्द है और आने में बिलकुल असमर्थ है । लौटकर लोगों ने समाचार दिया । खबर पाते ही सब-के-सब सिर पर हाथ रखकर बैठ गए । इधर बिना बलिदान किए पूजा अधूरी रह जाएगी । अब इतनी रात को दूसरे आदमी की तलाश कहाँ की जाए । इस साल अब देवी पूजा ठीक ढंग से नहीं हो पाएगी । तभी किसी ने कहा- ''अरे भाई लालू यह कार्य कर सकता है । इस तरह न जाने कितने बकरों को वह काट चुका है ।''

इतना कहना था कि कुछ लोग लालू के घर उसे बुलाने के लिए दौड़ पड़े । लालू उस समय सो रहा था । उठकर बोला- 'नहीं'' ।

ङ्ग'नहीं'' ? अरे बेटा नहीं मत करो । चले-चलो, वरना देवी की पूजा संपन्न न होने से गाँव का सर्वनाश हो जाएगा ।''

लालू ने कहा ! ''होने दो । बलिदान कार्य बचपन में किया था, लेकिन अब नहीं करूँगा ।''

जो लोग बुलाने आए, काफी मान-मनौवल करने लगे, क्योंकि बलिदान के मुहूर्त्त में अब १५ मिनट बाकी थे । इसके बाद बलिदान देना, न देना बराबर होगा । महाकाली के कोप से सर्वनाश हो जाएगा ।

तभी लालू के पिता ने आकर कहा- ''ये लोग चारों तरफ से निराश होकर आए हैं । गाँव-कल्याण के लिए तुम्हें जाना चाहिए । जाओ ।'' इस आदेश को अस्वीकार कर दे, इतनी हिम्मत लालू में नहीं थी । फलस्वरूप उसे चटर्जी साहब के यहाँ जाना पड़ा ।

लालू को अपने यहाँ देखकर चटर्जी महाशय प्रसन्न हो उठे । इधर बलिदान का समय नजदीक आता जा रहा था । जल्दी से बकरा लाकर उसे माला-सिंदूर पहनाया गया फिर कठघरे

पर उसका सिर रख दिया गया । पूजा देखने के लिए आई हुई जनता 'काली माता की जय' का नारा लगाने लगी । उसी के बीच में देखते–ही–देखते खच्च से आवाज़ हुई और एक निरीह बेजान जीव का धड़ सर से अलग होकर नीचे गिर पड़ा । खून के फौव्वारे से धरती लाल हो उठी । लालू ने कुछ देर के लिए अपनी आँखें बंद कर लीं । पुनः कुछ देर के लिए शंखध्वनि, घंटे की आवाज रुक गई। दूसरा बकरा आया उसे भी पहले वाले की तरह माला–फूल और सिंदूर लगाया गया । इसके बाद भक्तों की, जय काली माता की आवाज़ हुई और लालू का दाव एक बार पुनः ऊपर उठा और फिर एक बार तड़फड़ाता हुए बकरा समस्त भक्तों के विरुद्ध न जाने कौन–सी फरियाद करते हुए शांत हो गया । उसके खून से लाल मिट्टी पुनः भीग उठी ।

बाहर शहनाई बज रही थी । आँगन में बहुत–से व्यक्ति जमा थे । सामने गलियों के ऊपर मनोहर चटर्जी आँखें मूँदकर इष्ट नाम जप रहे थे । तभी लालू एकाएक भयंकर रूप से गरज उठा । कोलाहल, बाद्य–ध्वनि सब कुछ एकबारगी रुक गया । सबकी कौतूहल भरी निगाहें लालू की ओर घूम गईं ।

लालू ने अपनी बड़ी–बड़ी आँखें नचाते हुए कहा– "और बकरा कहाँ है ?"

घर के भीतर से किसी ने डरते हुए कहा– "और बकरा ? दो ही का तो बलिदान होने वाला था ।"

लालू ने खून से लथपथ दाव को ऊपर की ओर तीन–चार बार घुमाते हुए भीषण गर्जन करते हुए कहा– "और बकरा नहीं है ? यह नहीं हो सकता । मेरे सिर पर खून चढ़ गया है । लाओ बकरा, वरना आज मैं जिसे पाऊँगा उसी का बलिदान करूँगा । नर बलि– जय भवानी की ! जय माता काली !" कहता हुआ वह इधर–से उधर उछलने लगा । इधर उसके हाथ का दाव लाठी की तरह भनाभन घूम रहा था । उस समय लालू का रंग–ढंग देखकर वहाँ की जो हालत हुई उसका वर्णन करना मुश्किल है । सभी एक साथ बाहर की ओर दौड़ पड़े ।

कहीं लालू उन्हें पकड़कर बलि न चढ़ा दे । इस भगदड़ के कारण वहाँ की हालत अत्यंत खराब हो गई । कोई इधर गया तो कोई उधर । कोई मुँह के बल गिरा तो कोई सिर के बल। कोई किसी के हाथ के नीचे भाग रहा है तो कोई किसी के टांग के भीतर से । यह सब काण्ड क्षण–भर तक होता रहा, फिर सब शांत हो गया ।

लालू गरज उठा– ''मनोहर चटर्जी कहाँ है ? पुरोहित कहाँ गया ?''

पुरोहित महाशय दुबले–पतले थे । भगदड़ के समय वे काली देवी की प्रतिमा के पीछे जाकर छिप गए । गुरुदेव महाशय कुशासन पर बैठे माला जप रहे थे । यह हालत देखकर वे भी एक बड़े खंभे की आड़ में जा छिपे । लेकिन मनोहर चटर्जी अपनी भारी–भरकम तोंद लेकर भागने से लाचार रहे । लालू ने आगे बढ़कर उनका एक हाथ कसकर पकड़ते हुए कहा– ''चलो, अब तुम्हारी बलि दूँ ।''

उसने उनके एक हाथ को कसकर पकड़ रखा था, दूसरे हाथ में दाव देखकर चटर्जी के प्राण सूख गए । रोते हुए विनती करते हुए बोले- ''लालू ! बेटा लालू ! जरा शांत होकर देख, मैं बकरा नहीं हूँ, आदमी हूँ, संबंधी के नाते मैं तेरा ताऊ लगता हूँ । तेरे पिताजी मेरे छोटे भाई की तरह हैं ।''

''यह सब मैं नहीं जानता ! इस वक्त मुझे खून चाहिए । चलो, तुम्हारा बलिदान करूँगा । जगदंबा की यही इच्छा है ।''

चटर्जी फफककर रोते हुए बोले- ''नहीं बेटे ! माँ की यह इच्छा नहीं है । वे तो जगज्जननी हैं ।''

''वे जगज्जननी हैं इसका ज्ञान है तुम्हें? अब फिर बकरा बलिदान करोगे? मुझे बलिदान देने के लिए अब बुलाओगे ?''

चटर्जी ने रोते-रोते कहा- ''नहीं बेटा ! अब बलिदान कभी नहीं कराऊँगा । मैं काली माता के सामने प्रतिज्ञा करता हूँ, आज से मेरे यहाँ कभी बलिदान नहीं होगा ।''

''ठीक कह रहे हो न ?''

''हाँ, बेटा ! ठीक कह रहा हूँ । अब कभी नहीं कराऊँगा ! मेरा हाथ छोड़ दे बेटा ।''

लालू ने हाथ छोड़ते हुए कहा-''अच्छा जाओ, तुम्हें छोड़ दे रहा हूँ । लेकिन पुरोहित कहाँ गया ? और गुरुदेव ? वह कहाँ गया ? कहता हुआ वह एक बार पुन: गरज उठा । फिर कमरे में से इधर-उधर करते बरामदे के करीब आ गया ।

उसका भयंकर रूप देखकर खंभे की आड़ से गुरूदेव और प्रतिमा की आड़ से पुरोहितजी दोनों एक साथ करुण स्वर में दो प्रकार की आवाजों में चीख उठे । दोनों का स्वर ऐसा बेसुरा हो गया कि लालू अपने को संभाल नहीं सका । हो-हो कर हँसते हुए दाव एक ओर फेंककर भाग खड़ा हुआ ।

तब यह किसी को समझते देर नहीं लगी कि लालू ने यह सब ढोंग किया था । सचमुच उसके ऊपर काली माता सवार नहीं हुई थी । यह काण्ड उसने लोगों को डराने के लिए ही किया था । थोड़ी देर बाद पुन: भक्तों की भीड़ जुट गई । अभी पूजा समाप्त नहीं हुई थी । थोड़ी ही देर में महा कलरव के साथ पूरा समारोह शुरू हो गया ।

मनोहर चटर्जी ने नाराज़ होकर कहा– ''कल ही कमबख्त ललुवा को उसके बाप से पचास जूते लगावाऊँगा ।''

लेकिन उसे जूते नहीं खाने पड़े । सवेरा होने के पहले ही वह गाँव से गायब हो गया । एक हफ्ते के बाद एक दिन शाम के समय मनोहर चटर्जी के यहाँ जाकर उनसे क्षमा माँग आया । बाप की नाराज़गी भी दूर हो गई । लेकिन इससे एक फायदा यह हुआ कि उस घटना के बाद फिर कभी मनोहर चटर्जी के यहाँ बलिदान नहीं हुआ ।

•••

शब्द-अर्थ

नित्य – हमेशा, संलग्न – साथ लगा हुआ, संबंधित, नहरनी – नाइयों का एक औजार जिससे नाई नाखून काटते हैं, नाल – घोड़ों के खुर अथवा जूते आदि में लगाने वाला अर्ध-चंद्रकार लोहा, व्यतीत – बीतना, निकल जाना, विपदा – विपत्ति, ऐब – दोष, संपन्न – पूर्ण, पूरा होना, धनी, निरीह – चुपचाप पड़ा रहने वाला, उदासीन, वाद्यध्वनि – बाजों का शब्द, दाव-लकड़ी आदि काटने का एक प्रकार का औज़ार, कुशासन – कुश का बना आसन, जगदंबा-दुर्गा ।

अनुशीलनी

भाव बोध और विचार :

(१) मौखिक :

(१) इस कहनी के माध्यम से लेखक हमें क्या संदेश देना चाहते हैं ?

(२) बलि देने के दुष्परिणाम पर अपने विचार प्रकट कीजिए ।

(२) लिखित :

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(i) लालू कौन था ?

(ii) लालू की क्या विशेषता थी ?

(iii) लालू में क्या बुराई थी ?

(iv) लालू को बलि देने के लिए क्यों बुलाया गया था ?

(v) दो बकरों की बलि देने के पश्चात् लालू ने क्या कहा ?

(vi) लालू घर से क्यों भाग गया था ?

(vii) लालू ने मनोहर चटर्जी से क्या कहा था ?

भाषाबोध :

(३) निम्नलिखित शब्दों को वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए :

बलि का बकरा, संलग्न, व्यतीत, निरीह, संपन्न, विपदा, कुशासन ।

(४) रचना की दृष्टि से क्रिया के दो भेद हैं ।

(i) सकर्मक (ii) अकर्मक

सकर्मक क्रिया : जिस क्रिया में कर्म की अपेक्षा होती है । उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं ।

उदाहरण : राम ने मारा । किसको मारा ? – रावण को ।

वह पढ़ता है । क्या पढ़ता है ? किताब

अकर्मक क्रिया– जिस क्रिया में कर्म की अपेक्षा नहीं होती, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं ।

उदाहरण : रघुनाथ हँसता है । पीतांबर रोता है ।

सकर्मक और अकर्मक क्रिया के तीन – तीन उदाहरण दीजिए ।

(५). **इन वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए :**

जैसे – पहले न हुआ हो ---- अभूतपूर्व

जो दर्शन करने योग्य हो ----------

जिसमें जीवन हो ----------

जो प्रशंसा के योग्य हो ------------

जो पुराने समय का हो ----------

जिसमें आशा न हो ----------

(६). किसी शब्द के बाद में लगनेवाले शब्दांश को प्रत्यय कहते हैं ।

सुंदर (व्यक्ति के लिए)

सुंदरता (उस व्यक्ति का गुण)

शब्दोंके मूल और प्रत्यय को अलग करके लिखिए :

गायक, बचाव, लिखावट, खिलाड़ी ।

कुत्ते की सीख

रामधारी सिंह 'दिनकर'

वन में एक घनी झुरमुट थी जिसके भीतर जाकर,
खरहा एक रहा करता था सबकी आँख बचाकर ।
फुदक–फुदक फुनगियाँ घास की चुन–चुन कर खाता था,
देख दूर से लोगों को झुरमुट में छिप जाता था ।

एक रोज़ आया उस वन में, कुत्ता एक शिकारी,
लगा छानने सूँघ सूँघ कर वन की झाड़ी–झाड़ी ।
आखिर वह झुरमुट भी आई जो खरहे का घर थी,
मगर खैर उस बेचारे की लंबी अभी उमर थी ।

कुत्ते की जो लगी साँस, खरहा सोने से जागा,
देख पीठ पर खड़ा काल को जान लिए वह भागा ।
झपटा पंजा तान मगर, खरहे को पकड़ न पाकर,
पीछे – पीछे दौड़ पड़ा कुत्ता भी–ज़ोर लगाकर ।

चार मिनट तक खुले खेत में रही दौड़ यह जारी,
इतने में आ गई सामने घनी–कंटीली झाड़ी ।
भरकर एक छलाँग गया छिप खरहा बीहड़ वन में,
इधर–उधर कुछ सूँघ, फिर कुत्ता निराश हो मन में ।

एक लोमड़ी देख रही थी, यह सब खड़ी किनारे,
कुत्ते से बोली– मामा, तुम तो खरहे से हारे !
इतनी मोटी देह लिए हो, फिर भी थक जाते हो,
वन के छोटे जीव–जंतु को भी न पकड़ पाते हो ।

कुत्ता हँसा – अरी दीवानी ! तू नाहक बकती है
इसमें है जो भेद उसे तो समझ नहीं सकती है ।
मैं तो दौड़ रहा था केवल दिन का भोजन पाने,
लेकिन खरहा भाग रहा था, अपनी जान बचाने ।

कहते हैं सब शास्त्र कमाओ रोटी जान बचाकर,
पर संकट में प्राण बचाओ सारी शक्ति लगाकर ।

शब्द–अर्थ

खरहा – खरगोश, फुनगियाँ – कोमल पत्तियाँ, काल – मृत्यु, शास्त्र – धर्मग्रंथ, संकट – मुसीब, नाहक – अकारण ।

अनुशीलनी

१. **निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर दीजिए:**

(i) खरहा कहाँ रहता था ?
(ii) खरहा क्या खाता था ?
(iii) खरहा की नींद कैसे टूटी ?
(iv) दौड़ क्यों हुई ?
(v) लोमड़ी ने कुत्ते से क्या कहा ?
(vi) सभी शास्त्र संकट में प्राण कैसे बचाने को कहते हैं ?

२. **इस कविता में जो -कहानी है, उसे अपने शब्दो में लिखिए ।**

३. **इस कविता का सार क्या है ?**

जान बचाकर रोटी कमानी चाहिए । मतलब जीविका के-लिए जान नहीं दे देनी चाहिए । अपने प्राण संकट में पड़ जाए तो पूरी ताकत लगाकर उसे बचाना चाहिए । अपने को सुरक्षित रखकर काम करना चाहिए ।

४. **भाषा-ज्ञान :**

(i) कुत्ता = कुत्‌ता । इसमें 'त्‌ता' दो व्यंजन या द्वित्व व्यंजन है ।
ऐसे अन्य शब्द छाँटिए और लिखिए।

(ii) 'फुदक-फुदक' में एक ही शब्द दो बार आया है ।
ऐसे कुछ शब्द चुनिए और सीखिए ।

(iii) कठिन शब्दों को छाँटिए और लिखिए :

(iv) इन शब्दों को देखिए और ऐसे शब्द बनाइए :
मोटी देह, छोटे जीव

(v) इन क्रिया पदों को देखिए । इनमें क्या फर्क है बताओ :

खाना था	-	खा रहा था
दौड़ता था	-	दौड़ रहा था

(vi) बताइए बताओ कि ये पशु-पक्षी कहाँ-कहाँ रहते है ?

गाय ------------

घोड़ा ------------

शेर ------------

चिड़िया ------------

साँप ------------

चिड़िया की बच्ची

जैनेंद्र कुमार

माधवदास ने अपनी संगमरमर की नयी कोठी बनवाई है। उसके सामने बहुत सुहावना बगीचा भी लगवाया है। उनको कला से बहुत प्रेम है। धन की कमी नहीं है और कोई व्यसन छू नहीं गया है। सुंदर अभिरुचि के आदमी हैं। फूल-पौधे, रकाबियों से हौजों में लगे फव्वारों में उछलता हुआ पानी उन्हें बहुत अच्छा लगता है। समय भी उनके पास काफी है। शाम को जब दिन की गरमी ढल जाती है और आसमान कई रंग का हो जाता है तब कोठी के बाहर चबूतरे पर तख्त डलवाकर मसनद के सहारे वे गलीचे पर बैठते हैं, और प्रकृति की छटा निहारते हैं। इनमें मानो उनके मन को तृप्ति मिलती है। मित्र हुए तो उनसे विनोद- चर्चा करते हैं, नहीं तो पास रखे हुए फर्शी हुक्के की सटक को मुँह में दिए खयाल ही खयाल में संध्या को स्वप्न की भाँति गुजार देते हैं।

आज कुछ–कुछ बादल थे। घटा गहरी नहीं थी। धूप का प्रकाश उनमें से छन–छनकर आ रहा था। माधवदास मसनद के सहारे बैठे थे। उन्हें जिंदगी में क्या स्वाद नहीं मिला है ? पर जी भरकर भी कुछ खाली–सा रहता है।

उस दिन संध्या समय उनके देखते– देखते सामने की गुलाब की डाली पर एक चिड़िया आ बैठी। चिड़िया बहुत सुंदर थी। उसकी गरदन लाल थी और गुलाबी होते–होते किनारों पर ज़रा–ज़रा नीली पड़ गई थी। पंख ऊपर से चमकदार स्याह थे। उसका नन्हा–सा सिर तो बहुत प्यारा लगता था और शरीर पर चित्र–विचित्र चित्रकारी थी। चिड़िया को मानो माधवदास की सत्ता का कुछ पता नहीं था और मानो तनिक देर का आराम भी उसे नहीं चाहिए था। कभी पर हिलाती थी, कभी फुदकती थी। वह खूब खुश मालूम होती थी। अपनी नन्ही सी चोंच से प्यारी – प्यारी आवाज़ निकाल रही थी।

माधव दास को वह चिड़िया बड़ी मनमानी लगी। उसकी स्वच्छंदता बड़ी प्यारी जान पड़ती थी। कुछ देर तक वे उस चिड़िया का इस डाल से उस डाल थिरकना देखते रहे। इस समय वे अपना बहुत कुछ भूल गए। उन्होंने उस चिड़िया से कहा, ‘‘आओ, तुम बडी अच्छी आई। यह बगीचा तुम लोगों के बिना सूना लगता है। सुनो चिड़िया, तुम खुशी से यह समझो कि यह बगीचा मैंने तुम्हारे लिए ही बनवाया है। तुम बेखटके यहाँ आया करो।’’

चिड़िया पहले तो असावधान रही। फिर जानकर कि बात उससे की जा रही है, वह एकाएक तो घबराई। फिर संकोच को जीतकर बोली, ‘‘मुझे मालूम नहीं था कि यह बगीचा आपका है। मैं अभी चली जाती हूँ। पलभर साँस लेने मैं यहाँ टिक गई थी।’’

माधवदास ने कहा, ‘‘हाँ, बगीचा तो मेरा है। यह संगमरमर की कोठी भी मेरी है। लेकिन, इन सबको तुम अपना भी समझ सकती हो। सब कुछ तुम्हारा है। तुम कैसी भोली हो, कैसी प्यारी हो। जाओ, नहीं, बैठो। मेरा मन तुमसे बहुत खुश होता है।’’

चिड़िया बहुत कुछ सकुचा गई। उसे बोध हुआ कि यह उससे गलती तो नहीं हुई कि वह यहाँ बैठ गई है। उसका थिरकना रुक गया। भयभीत– सी वह बोली, ‘‘मैं थककर यहाँ बैठ गई थी। मैं अभी चली जाऊँगी। बगीचा आपका है। मुझे माफ करें!’’

माधवदास ने कहा, ‘‘मेरी भोली चिड़िया, तुम्हें देखकर मेरा चित्त प्रफुल्लित हुआ है। मेरा महल भी सूना है। वहाँ कोई भी चहचहाता नहीं है। तुम्हें देखकर मेरी रागनियों का जी बहलेगा। तुम कैसी प्यारी हो, यहाँ ही तुम क्यों न रहो ?’’

चिड़िया बोली, ‘‘मैं माँ के पास जा रही हूँ, सूरज की धूप खाने और हवा से खेलने और फूलों से बात करने मैं जरा घर से उड़ आई थी,अब साँझ हो गई है और माँ के पास जा रही हूँ। अभी – अभी मैं चली जा रही हूँ। आप सोच न करें।’’

माधवदास ने कहा, ‘‘प्यारी चिडिया, पगली मत बनो। देखो, तुम्हारे चारों तरफ कैसी बहार है। देखो, वह पानी खेल रहा है, उधर गुलाब हँस रहा है। भीतर महल में चलो, जाने क्या क्या न पाओगी ! मेरा दिल वीरान है । वहाँ कब हँसी सुनने को मिलती है ? मेरे पास बहुत सा सोना– मोती है। सोने का एक बहुत सुंदर घर मैं तुम्हें बना दूँगा, मोतियों की झालर उसमें लटकेगी। तुम मुझे खुश रखना। और तुम्हें क्या चाहिए ! माँ के पास बताओ क्या है ? तुम यहाँ ही सुख से रहो, मेरी भोली गुड़िया।’’

चिड़िया बातों से बहुत डर गई। वह बोली, ‘‘मैं भटककर तनिक आराम के लिए इस डाली पर रुक गई थी। अब भूलकर भी ऐसी गलती नहीं होगी। मैं अभी यहाँ से उड़ी जा रही हूँ। तुम्हारी बातें मेरी समझ में नहीं आती हैं। मेरी माँ के घोंसले के बाहर बहुतेरी सुनहरी धूप बिखरी रहती है। मुझे और क्या करना है ? दो दाने माँ ला देती है और जब मैं पर खोलने बाहर जाती हूँ तो माँ मेरी बाट देखती रहती है। मुझे तुम और कुछ मत समझो, मै अपनी माँ की हूँ।’’

माधवदास ने कहा, ‘‘भोली चिडिया, तुम कहाँ रहती हो ? तुम मुझे नहीं जानती हो ?

चिडिया, ‘‘मैं माँ को जानती हूँ, भाई को जानती हूँ, सूरज को और उसकी धूप को जानती हूँ। घास, पानी और फूलों को जानती हूँ। महामान्य, तुम कौन हो ? मैं तुम्हें नही जानती ।’’

माधवदास, ''तुम भोली हो चिड़िया ! तुमने मुझे नहीं जाना, तब तुमने कुछ नहीं जाना। मैं ही तो हूँ सेठ माधवदास। मेरे पास क्या नहीं है ! जो माँगो, मैं वही दे सकता हूँ।''

चिड़िया, ''पर मेरी तो छोटी सी जान है। आपके पास सब कुछ है। तब मुझे जाने दीजिए।''

माधवदास, ''चिड़िया, तू निरी अनजान है। मुझे खुश करेगी तो तुझे मालामाल कर सकता हूँ।''

चिड़िया, ''तुम सेठ हो। मैं नहीं जानती सेठ क्या होता है। पर सेठ कोई बड़ी बात होती होगी। मैं अनसमझ ठहरी। माँ मुझे बहुत प्यार करती है। वह मेरी राह देखती होगी। मैं मालामाल होकर क्या-होऊँगी, मैं नहीं जानती। मालामाल किसे कहते हैं ? क्या मुझे वह तुम्हारा मालामाल होना चाहिए ?''

सेठ, ''अरी चिड़िया, तुझे बुद्धि नहीं है। तू सोना नहीं जानती, सोना ? उसी की जगत को तृष्णा है। वह सोना मेरे पास ढेर का ढेर है। तेरा घर समूचा सोने का होगा। ऐसा पिंजरा बनवाऊँगा कि कहीं दुनिया में न होगा, ऐसा कि तू देखती रह जाए। तू उसके भीतर थिरक – फुदककर मुझे खुश करियो। तेरा भाग्य खुल जाएगा। तेरे पानी पीने की कटोरी भी सोने की होगी।''

चिड़िया, ''वह सोना क्या चीज होती है ?''

सेठ, ''तू क्या जानेगी, तू चिड़िया जो है। सोने का मूल्य सीखने के लिए तुझे बहुत सीखना है। बस, यह जान ले कि सेठ माधवदास तुझसे बात कर रहा है। जिससे मैं बात तक कर लेता हूँ उसकी किस्मत खुल जाती है। तू अभी जग का हाल नहीं जानती। मेरी कोठियों पर कोठियाँ है, बगीचों पर बगीचे हैं। दास – दासियों की संख्या नहीं है। पर तुझसे मेरा चित्त प्रसन्न हुआ है। ऐसा वरदान कब किसी को मिलता है ? री चिड़िया ! तू इस बात को समझती क्यों नहीं ?''

चिड़िया– ‘‘सेठ, मैं नादान हूँ। मैं कुछ समझती नहीं। पर, मुझे देर हो रही है। माँ मेरी बाट देखती होगी।’’

सेठ– ‘‘ठहर–ठहर, इस अपने पास के फूल को तूने देखा ? यह एक है। ऐसे अनगिनती फूल मेरे बगीचों में हैं। वे भाँति – भाँति के रंग के हैं। तरह – तरह की उनकी खुशबू हैं। चिड़िया, तैंने मेरा चित्त प्रसन्न किया है। और वे सब फूल तेरे लिए खिला करेंगे। वहाँ घोंसले में तेरी माँ है, पर माँ क्या है ? इस बहार के सामने तेरी माँ क्या है ? वहाँ तेरे घोंसले में कुछ भी तो नहीं है। तू अपने को नहीं देखती ? कैसी सुंदर तेरी गरदन । कैसी रंगीन देह ! तू अपने मूल्य को क्यों नहीं देखती ? मैं तुझे सोने से मढ़कर तेरे मूल्य को चमका दूँगा । तैंने मेरे चित्त को प्रसन्न किया है। तू मत जा, यहीं रह।’’

चिड़िया, ‘‘सेठ, मैं अपने को नहीं जानती । इतना जानती हूँ कि माँ मेरी माँ है और मुझे यहाँ देर ही रही है। सेठ, मुझे रात मत करो, रात में अँधेरा बहुत हो जाता है और मैं राह भूल जाऊँगी।’’

सेठ ने कहा, ‘‘अच्छा, चिड़िया जाती हो तो जाओ। पर, इस बगीचे को अपना ही समझो। तुम बडी सुंदर हो।’’

यह कहने के साथ ही सेठ ने एक बटन दबा दिया। उसके दबने से दूर कोठी के अंदर आवाज़ हुई जिसे सुनकर एक दास झटपट भागकर बाहर आया। यह सब छनभर में हो गया और चिडिया कुछ भी नहीं समझी।

सेठ कहते रहे, ‘‘तुम अभी माँ के पास जाओ। माँ बाट देखती होगी। पर, कल आओगी न ? कल आना, परसों आना, रोज आना।’’

यह कहते – कहते दास को सेठ ने इशारा कर दिया और वह चिड़िया को पकड़ने के जतन में चला।

सेठ कहते रहे, ''सच तुम बड़ी सुंदर लगती हो! तुम्हारे भाई – बहिन हैं? कितने भाई–बहिन हैं ?''

चिड़िया– ''दो बहिन, एक भाई। पर मुझे देर हो रही है।''

ङ'हाँ हाँ जाना। अभी तो उजेला है। दो बहन, एक भाई है ? बडी अच्छी बात है।''

पर चिड़िया के मन के भीतर जाने क्यों चैन नहीं था। वह चौकन्नी हो – हो चारों ओर देखती थी। उसने कहा, ''सेठ मुझे देर हो रही है।''

सेठ ने कहा, ''देर अभी कहाँ ? अभी उजेला है, मेरी प्यारी चिड़िया ! तुम अपने घर का इतने और हाल सुनाओ। भय मत करो।''

चिड़िया ने कहा, ''सेठ मुझे डर लगता है। माँ मेरी दूर है। रात हो जाएगी तो राह नहीं सूझेगी।''

इतने में चिड़िया को बोध हुआ कि जैसे एक कठोर स्पर्श उसके देह को छू गया। वह चीख देकर चिचियाई और एकदम उड़ी। नौकर के फैले हुए पंजे में वह आकर भी नहीं आ सकी। तब वह उड़ती हुई एक साँस में माँ क पास गई और माँ की गोद में गिरकर सुबकने लगी, ''ओ माँ, ओ माँ !'' माँ ने बच्ची को छाती से चिपटाकर पूछा, ''क्या है मेरी बच्ची, क्या है ?'' पर बच्ची काँप– काँपकर माँ की छाती से और चिपक गई, बोली कुछ नहीं, बस सुबकती रही, ''ओ माँ, ओ माँ !''

बड़ी देर में उसे ढाढ़स बँधा और तब वह पलक मींच उस छाती में ही चिपककर सोई। जैसे अब पलक न खोलेगी।

शब्द		अर्थ
सुहावना	–	सुन्दर
व्यसन	–	बुरी आदत
अभिरूचि	–	विशेष इच्छा
हौज	–	कुंड
फव्वार	–	अनेक छिद्रोंवाली टोंटी और इससे निकलेवाली धाराएँ
सत्ता	–	अस्तित्व
बे खटके	–	बिना संकोच के
सकुचाना	–	शर्माना, लज्जा करना
मसनद	–	गद्दी

तैं	–	तू
वीरान	–	निर्जन
मालामाल	–	धन–धान्य से संपन्न
किस्मत	–	भाग्य
चौकनी	–	सावधानी
सुबकना	–	हिचकियाँ लेते हुए रोना

अनुशीलनी

बोध और विचार

१. मौखिक

(i) माधवदास का स्वभाव कैसा था ?

(ii) चिड़िया की बच्ची देखने में कैसी थी ?

(iii) माधवदास ने चिड़िया से क्या कहा ?

(iv) चिड़िया उनसे डरकर क्या बोली ?

(v) चिड़िया माधवदास के बगीचे में क्या करने आई थी ?

२. सही कथन के आगे 'हाँ' और गलत कथन के आगे 'नहीं' लिखिए।

(क) माधवदास मसनद के सहारे बैठे थे।

(ख) मैं अभी नहीं जाऊँगी। बगीचा मेरा है।

(ग) मैं अपने बाप की हूँ ।

(घ) सेठ, मैं नादान नहीं हूँ।

(ङ) वह चीखकर चिचियाई और एकदम उड़ी।

लिखित :

३. (i) माधवदास अपने को तृप्त करने के लिए क्या करते हैं ?

(ii) किन–किन बातों से ज्ञात होता है कि माधवदास सुखी नहीं था ?

(iii) चिड़िया को देखकर माधवदास के मन में कैसे विचार आए ?

(iv) माधवदास क्या–क्या प्रलोभन देकर चिड़िया को कैद करना चाहता था ?

(v) चिड़िया का सुख असल में किसमें था ?

(vi) चिड़िया ने अपनी माँ की प्रशंसा में क्या कहा ?

(vii) माधव दास और चिडिया के मनोभावों में मूल अंतर क्या था ?

(viii) "ओ माँ, ओ माँ" चिडिया यह कब कहती है और क्यों ?

भाषा बोध

४. इस पाठ में 'पर' शब्द का प्रयोग तीन अर्थो में हुआ है –

(क) गुलाब की डाली पर एक चिड़िया आ बैठी। (ऊपर के अर्थ में)

(ख) कभी पर हिलाती थी। (पंख के अर्थ में)

(ग) पर बच्ची काँप–काँपकर माँ की छाती से और चिपक गई। (किन्तु के अर्थ में)

इन वाक्यों के आधार पर आप भी तीन अर्थों में 'पर' का प्रयोग करके वाक्य बनाइए।

५. जोड़े मिलान करके लिखिए :

हुक्के की	प्रकाश
नन्ही – सी	सटक
धूप का	चोंचे
संगमरमर की	झालर
मोतियें की	कोठी

६. लिंग निर्णय कीजिए :

चबूतरा

संध्या

जिन्दगी

किस्मत

७. रेखांकित विशेषणों के बदले अन्य विशेषण लिखिए :

<u>रंगीन</u> देह

<u>सुन्दर</u> गर्दन

<u>कठोर</u> स्पर्श

<u>सुहावना</u> बगीचा

<u>प्यारी</u> चिडिया

८. 'बे - खटका' शब्द में 'बे' उपसर्ग का प्रयोग हुआ है। आप ऐसे 'बे' उपसर्ग लगाकर पाँच शब्द लिखिए :

९. पाठ में आए हुए व्यक्तिवाचक और जातिवाचक संज्ञाएँ छाँटकर लिखिए।

व्यक्तिवाचक जातिवाचक

अनुभव विस्तार :

(i) विभिन्न प्रकार के की चिड़ियों के चित्र उनके घोंसलों के साथ बनाइए।

(ii) मनुष्य, पशु, पक्षी - इन तीनों की माँएँ अपने बच्चों का पूरी तरह ध्यान रखती हैं। आप प्रकृति की इन अद्‌भुत देन का अवलोकन कर अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

दोहा सप्तक

कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढ़ै वन माहिं,
ऐसे घटि घटि राम है, दुनिया देखे नाहिं ।।1।।
आज कहै कल्ह भजूँगा, काल कहै फिर काल
आज काल के करत ही, औसर जाती चाल ।।2।।
गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागु पाय,
बलिहारी गुरु आपणें जिन गोविंद दियो बताय ।।3।।
– कबीर

जो रहिम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग,
चन्दन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग ।।4।।
कह रहिम निज संग लै, जनमत जगत कोय
बैर, प्रीति, अभ्यास जस, होत होत ही होय ।।5।।
– रहीम

सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गात
मनो नीलमनि सैल पर, आतप पर्‌यो प्रभात ।।6।।
कदली, सीप, भुजंग – मुख स्वाति एक गुन तीन,
जैसी संगति बैठिए, तैसोई फल दीन ।।7।।
– बिहारी

शब्द		अर्थ
कस्तूरी	–	हिरन की नाभि से निकलनेवाला एक सुगंधित पदार्थ
कुंडलि	–	वह हिरन जिसके शरीर पर चित्तियाँ हों
औसर	–	अवसर, मौका
कुसंग	–	बुरे मित्र
भुजंग	–	साँप
स्वाति	–	स्वाति नक्षत्र से गिरने वाली बूँद
बैर	–	शत्रुता
प्रीति	–	प्रेम
सोहत	–	सुशोभित होना
गात	–	शरीर
पट	–	वस्त्र
सैल	–	शिला
आतप	–	सूर्य की किरणें
तैसोई	–	वैसा ही

अनुशीलनी

भाव बोध और विचार :

१. मौखिक:

(i) कुछ दोहों को कंठस्थ कीजिए ।

(ii) बताइए कि इन में से किस दोहे में श्रीकृष्ण के रूप का वर्णन है ।

(ख) लिखित :

(i) कबीर कस्तूरी मृग की तुलना राम से किस प्रकार करते हैं ?

(ii) समय की उपयोगिता के बारे में कबीर के क्या उपदेश हैं ?

(iii) कबीर गुरु पर क्यों बलिहारी जाना चाहते हैं ?

(iv) अभ्यासवश किन गुणों का विकास होता है ?

(v) स्वाति नक्षत्र की बूँद कहाँ – कहाँ गिरकर क्या क्या रूप धारण करती है ?

२. **भाषा बोध :**

(क) निम्नलिखित दोहों को पूरा कीजिए :

(i) आज कहै कल्ह भजूँगा काल कहै फिर काल

(ii) जो रहिम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग,

(iii) सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गात,

(iv) कदली, सीप, भुजंग – मुख स्वाति एक गुन तीन

(ख) निम्नलिखित पंक्तियाँ प्रस्तुत दोहों मे से किन किन दोहों की ओर संकेत करती है, बताइए :

(i) कस्तूरी मृग कस्तूरी की सुगंध से पागल हो जाता है और उसे ढूँढने लगता है ।

(ii) श्रीकृष्ण के श्याम शरीर पर पीला वस्त्र ऐसा लगता है जैसे नीलम के पत्थर के ऊपर धूप चढ़ी है ।

(iii) चंदन के वृक्ष में विषधर साँप लिपटा हो ।

(iv) गुरु गोविंद का परिचय देते हैं ।

(v) समय रहते ही उसका उपयोग करना चाहिए ।

(ग) इनके भाव को स्पष्ट कीजिए :

(i) मनो नीलमणि शैल पर आतप पर्‌यो प्रभात

(ii) जैसी संगति बैठिए, तैसोई फल दीन ।

(iii) चन्दन विष व्यापत नहीं लपटे रहत भुंजग

(iv) ऐसे घटि घटि राम है, दुनिया देखे नाहिं ।

(घ) इनके दो - दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :

अग्नि, कमल, पृथ्वी, आकाश, नदी, वर्षा

(ङ) इनके मानक हिन्दी रूप लिखिए :

कल्ह –

औसर –

काके –

भुजंग –

कदली –

सैल –

गात –

मनो –

रक्त और हमारा शरीर

यतीश अग्रवाल

दिव्या अनिल की छोटी बहन है । यों तो वह शुरू से ही कमज़ोर है, लेकिन इधर कुछ दिनों से उसे हर समय थकान महसूस होती रहती है । मन किसी काम में नहीं लगता, भूख भी पहले से कम हो गई है । अस्पताल में उसे डॉक्टर ने देखा तो कहा, ‘‘लगता है, दिव्या के शरीर में रक्त की कमी हो गई है । जाँच कराकर देखते हैं ।’’ यह कहकर उन्होंने दिव्या को रक्त की जाँच के लिए पास के एक कमरे में भेज दिया । वहाँ अनिल को अपनी ही जान-पहचान की डॉक्टर दीदी दिखाई दीं ।

डॉक्टर दीदी ने कहा, ‘‘कहो अनिल, कैसे आना हुआ ?’’

अनिल ने बताया कि डॉक्टर ने दिव्या को खून की जाँच के लिए आपके पास भेजा है।

इतना सुनते ही डॉक्टर दीदी ने दिव्या की उँगली से रक्त की कुछ बूँदें एक छोटी सी शीशी में डाल दीं और स्लाइड पर लगा दीं । फिर अनिल से बोलीं, ‘‘अनिल, तुम कल अस्पताल से रिपोर्ट ले जाना ।’’

अगले दिन अस्पताल पहुँचकर अनिल ने डॉक्टर दीदी के कमरे के दरवाजे पर दस्तक दी । भीतर से आवाज़ आई, "आ जाओ ।" अनिल ने कमरे में प्रवेश किया तो पाया, डॉक्टर दीदी सूक्ष्मदर्शी द्वारा एक स्लाइड़ की जाँच कर रही थीं । दीदी के इशारे से वह पास रखी एक कुर्सी कुरसी पर बैठ गया । स्लाइड की जाँच पूरी होने पर डॉक्टर दीदी ने साबुन से हाथ धोए और तौलिए से पोंछती हुई बोलीं, "अनिल, दिव्या को एनीमिया है । चिंता की बात नहीं, कुछ दिन दवा लेगी तो ठीक हो जाएगी ।"

अनिल के मन में जिज्ञासा हुई, वह बोला, "दीदी, एक सवाल पूछूँ ?"

"हाँ, हाँ, क्यों" नहीं डॉक्टर दीदी ने कहा।

"एनीमिया से आपका क्या मतलब है दीदी ?" उसने पूछा ।

"यह जानने के लिए तुम्हें रक्त के बारे में जानना होगा," डॉक्टर दीदी ने कहा फिर बोलीं, "अनिल, देखने में रक्त लाल द्रव के समान दिखता है, किंतु इसे सूक्ष्मदर्शी द्वारा देखें तो यह भानुमती के पिटारे से कम नहीं । मोटे तौर पर इसके दो भाग होते हैं । एक भाग वह जो तरल है, जिसे हम प्लाज़्मा कहते हैं । दूसरा, वह जिसमें छोटे-बड़े कई तरह के कण होते हैं... कुछ लाल, कुछ सफ़ेद और कुछ ऐसे जिनका कोई रंग नहीं, जिन्हें बिंबाणु (प्लेटलैट कण) कहते हैं । ये कण प्लाज़्मा में तैरते रहते हैं ।" इतना कहकर डॉक्टर दीदी ने सूक्ष्मदर्शी के नीचे एक स्लाइड लगाई, उसे फोकस किया और बोलीं, "देखो अनिल, सूक्ष्मदर्शी द्वारा जो कण तुम्हें दिखाई दे रहे हैं, ये हैं लाल रक्त-कण।"

स्लाइड देख, मानो आश्चर्य से उछल पड़ा था अनिल ! रक्त की एक बूँद में इतने सारे कण ! इसकी तो वह कल्पना भी नहीं कर सकता था । वह बोला, ‘‘इन्हें देखकर तो ऐसा लग रहा है, मानो बहुत छोटी-छोटी बालूशाही रख दी गई हों ।’’

ङ्‘हाँ’’ दीदी बोलीं, ‘‘लाल कण बनावट में बालूशाही की तरह ही होते हैं । गोल और दोनों तरफ़ अवतल, यानी बीच में दबे हुए । रक्त की एक बूँद में इनकी संख्या लाखों में होती है । यदि हम एक मिलीलिटर रक्त लें तो उसमें हमें चालीस से पचपन लाख कण मिलेंगे । इनके कारण ही हमें रक्त लाल रंग का नज़र आता है । ये कण शरीर के लिए दिन-रात काम करते हैं । साँस लेने पर साफ़ हवा से जो ऑक्सीजन तुम प्राप्त करते हो उसे शरीर के हर हिस्से में पहुँचाने का काम इन कणों का ही है । इनका जीवनकाल लगभग चार महीने का होता है । चार महीने के होते होते ये नष्ट हो जाते हैं, लेकिन एक साथ नहीं, धीरे-धीरे । कुछ आज, कुछ कल, कुछ उससे अगले दिन.... ।’’

‘‘तब तो कुछ ही महीनों में ये खत्म हो जाते होंगे’’, अनिल ने कहा । यह सुनकर डॉक्टर दीदी मुस्करा उठीं, बोलीं, ‘‘नहीं, ऐसा नहीं होता । शरीर में हर समय नए कण बनते रहते हैं, जो नष्ट कणों का स्थान ले लेते हैं । हड्डियों के बीच के भाग मज्जा में ऐसे बहुत से कारखाने होते हैं जो रक्त कणों के निर्माण-कार्य में लगे रहते हैं ।

इनके लिए इन कारखानों को प्रीटीन, लौहतत्व और विटामिन रूपी कच्चे माल की ज़रूरत होती है । यह पौष्टिक आहार लेते हो ? हरी सब्ज़ी, फल, दूध, अंडा और गोश्त में ये तत्त्व उपयुक्त मात्रा में होते हैं । यदि कोई व्यक्ति उचित आहार ग्रहण नहीं करता तो इन कारखानों को आवश्यकतानुसार कच्चा माल नहीं मिल पाता । नतीजा यह होता है कि रक्त–कण बन नहीं पाते, रक्त में इनकी कमी हो जाती है । लाल कणों की इसी कमी को एनीमिया कहते हैं ।''

''तो क्या संतुलित आहार लेने मात्र से हम एनीमिया से बचे रह सकते हैं ?'' अनिल ने सवाल किया ।

दीदी बोलों, ''हाँ, यह कहना काफी हद तक सही होगा । यों ता एनीमिया बहुत से कारणों से हो सकता है, किंतु हमारे देश में इसका सबसे बड़ा कारण पौष्टिक आहार की कमी है । इसके अलावा इस रोग का एक और बड़ा कारण है पेट में कीड़ों का हो जाना । ये कीड़े प्रायः दूषित जल और खाद्य पदार्थों द्वारा हमारे शरीर में प्रवेश करते हैं । अतः इनसे बचने के लिए यह आवश्यक है कि हम पूरी सफाई से बनाए गए खाद्य पदार्थ ही ग्रहण करें ।

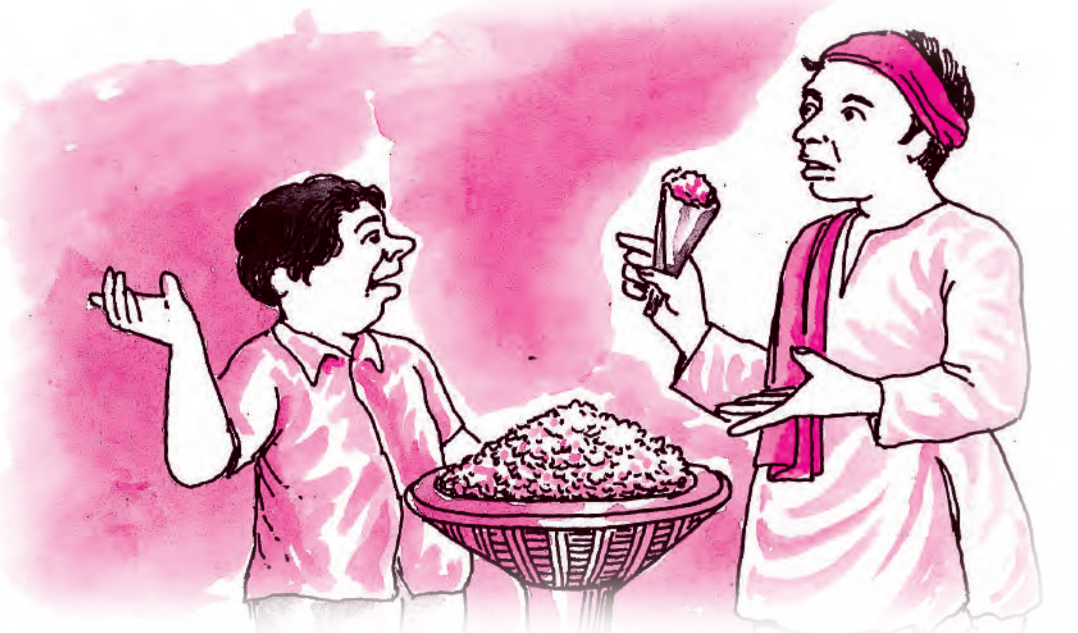

भोजन करने से पूर्व अच्छी तरह से हाथ धो लें और साफ पानी ही पिएँ । और हाँ अनिल, एक किस्म के कीड़े भी हैं, जिनके अंडे जमीन की ऊपरी सतह में पाए जाते हैं । इन अंडों से उत्पन्न हुए लार्वे त्वचा के रास्ते शरीर में प्रवेश कर आँतों में अपना घर बना लेते हैं । इनसे बचने का सहज उपाय है कि शौच के लिए हम शौचालय का ही प्रयोग करें और इधर उधर नंगे पैर न घूमें ।''

"दीदी यह तो बहुत ही महत्वपूर्ण बात बताई आपने'' । अनिल बोला । वह पलभर सोच में डूबा रहा । फिर बोला ''आपने बताया था कि रक्त में सफेद कण और बिंबाणु (प्लेटलैट कण) भी होते हैं, शरीर में उनका क्या काम है ?''

दीदी बोलीं, ङ'सफेद कण वास्तव में हमारे शरीर के वीर सिपाही हैं । जब रोगाणु शरीर पर धावा बोलने की कोशिश करते हैं तो सफेद कण उनसे डटकर मुकाबला करते हैं और जहाँ तक संभव हो पाता है रोगाणुओं को भीतर घर नहीं करने देते । बस, संक्षेप में यों मान लो कि वे बहुत से रोगों से हमारी रक्षा करते हैं ।''

"और बिंबाणुओं का काम है चोट लगने पर रक्त-जमाव-क्रिया में मदद करना । रक्त के तरल भाग प्लाज़्मा में एक विशेष किस्म की प्रोटीन होती है जो रक्तवाहिका की कटी-फटी दीवार में मकड़ी के जाले के समान एक जाला बुन देती है । बिंबाणु इस जाले से चिपक जाते हैं और इस तरह दीवार में आई दरार भर जाती है, जिससे रक्त बाहर निकलना बंद हो जाता है ।''

अनिल बोला, ''दीदी, लेकिन घाव गहरा हो तब तो खून बहता ही चला जाता है ।''

''हाँ, ऐसे समय में उस व्यक्ति को जल्दी से डॉक्टर के पास ले जाना चाहिए । ज़रूरत समझने पर ऐसी स्थिति से निपटने के लिए कुछ टाँके भी लगाने पड़ सकते हैं, किंतु डॉक्टर के पास पहुँचने तक के समय में चोट के स्थान पर कसकर एक साफ़ कपड़ा बाँध देना चाहिए । दबाव पड़ने से रक्त का बहना कम हो जाता है, जो उस व्यक्ति के लिए काफ़ी लाभप्रद सिद्ध हो सकता है । किंतु अगर बहुत अधिक रक्त बह जाए तो उसे रक्त चढ़ाने की ज़रूरत भी पड़ सकती है'', दीदी ने समझाते हुए कहा ।

अनिल ने कहा, ''क्या ऐसे समय में किसी भी व्यक्ति का खून काम आ सकता है ?''

दीदी बोलीं, ''अनिल, हर किसी का रक्त एक-सा नहीं होता । कुछ विशेष गुणों के आधार पर रक्त को चार मुख्य वर्गों में बाँट दिया गया है । ज़रूरतमंद व्यक्ति के रक्त-समूह की जाँच करने के बाद उसे उसी रक्त-समूह का रक्त चढ़ाया जाता है ।''

''लेकिन ज़रूरत के समय यदि उस रक्त समूह का कोई व्यक्ति मिले ही नहीं तब ?'' अनिल ने पूछा ।

''ऐसी आपातस्थिति के लिए ही ब्लड-बैंक बनाए गए हैं । प्रायः हर बड़े अस्तताल में इस तरह के बैंक होते हैं, जहाँ, सभी प्रकार के रक्त-समूहों का रक्त तैयार रखा जाता है । किंतु इन ब्लड-बैंकों में रक्त का भंडार सुरक्षित रहे, इसके लिए यह आवश्यक है कि हम समय- समय पर रक्तदान करते रहे'', दीदी ने कहा ।

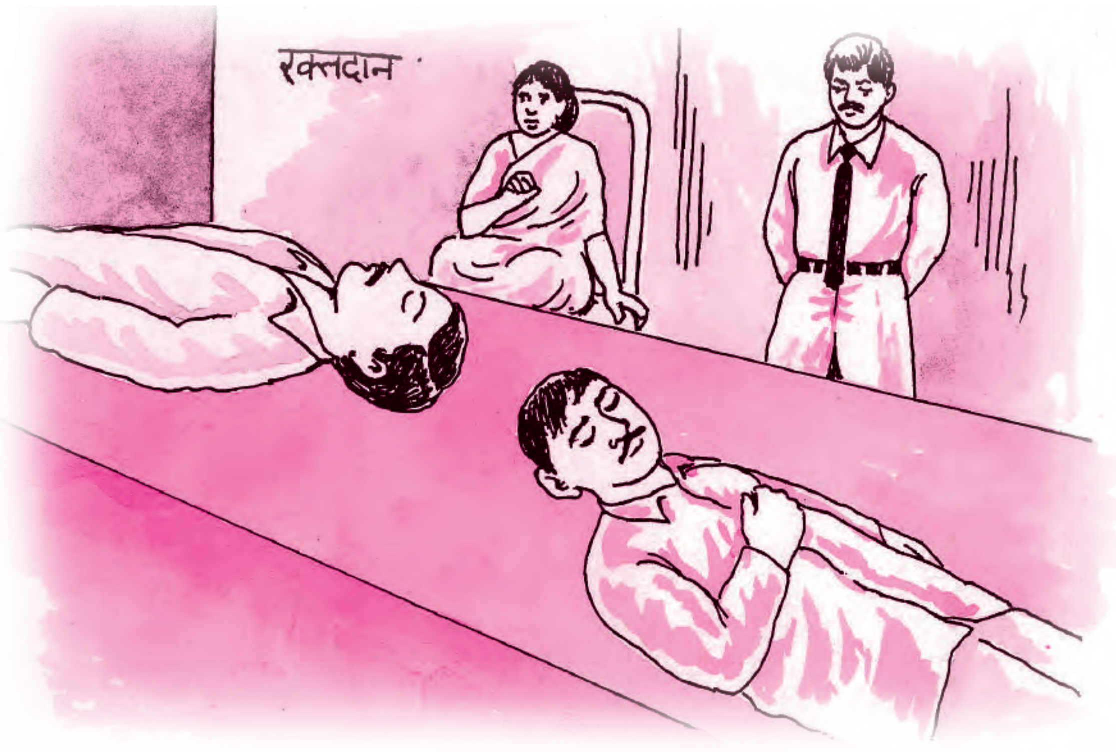

"क्या मैं भी रक्तदान कर सकता हूँ ?" अनिल ने पूछा ।

"नहीं, अभी तुम छोटे हो । अट्ठारह वर्ष से अधिक उम्र के स्वस्थ व्यक्ति ही रक्तदान कर सकते हैं । एक समय में उनसे लगभग ३०० मिलीलिटर रक्त ही लिया जाता है । प्रायः यह समझा जाता है कि रक्तदान करने से कमज़ोरी हो जाएगी, किंतु यह विचार बिलकुल निराधार है । हमारा शरीर इतना रक्त तो कुछ ही दिनों में बना लेता है । वैसे भी शरीर में लगभग पाँच लिटर खून होता है । इसमें से यदि कुछ रक्त किसी जरूरतमंद व्यक्ति के लिए जीवन-दान बन जाए तो इससे बड़ी बात क्या होगी !"दीदी समझाते हुए बोलीं ।

"फिर तो बड़ा होने पर मैं नियमित रूप से रक्तदान किया करूँगा", अनिल ने कहा ।

"शाबाश, अनिल !" डॉक्टर दीदी ने अनिल की पीठ ठोंकते हुए कहा ।

शब्द		अर्थ
कमजोर	–	दुर्बल
महसूस	–	अनुभव करना
जाँच	–	परीक्षा
दस्तक	–	खटखटाना
आवाज	–	शोर, पुकार
इशारा	–	संकेत
जिज्ञासा	–	जानने की इच्छा
बालूशाही	–	मैदे की बनी एक मिठाई
बनावट	–	गठन
मज्जा	–	शरीर के अन्दर की नलीदार हड्डी के अन्दर का गुदा
पौष्टिक	–	शक्तिवर्द्धक
नतीजा	–	फल, परिणाम
अलावा	–	सिवाय, अतिरिक्त

कोशिश	–	चेष्टा
किस्म	–	प्रकार, भेद
घाव	–	जखम, चोट
आपातस्थिति	–	घोर संकट की अवस्था
सतह	–	पृष्ठ, तल

अनुशीलनी

बोध और विचार :

१. मौखिक :

(i) दिव्या क्यों थकान महसूस करती थी ?

(ii) डॉक्टर दीदी ने अनिल से क्या कहा ?

(iii) रक्त के दो भागों के नाम बताओ ?

(iv) हमारे देश में एनीमिया का सबसे बड़ा कारण क्या है ?

(v) रक्त को कितने वर्गों में और किसके आधार पर बाँटा जाता है ?

२. लिखित :

(क) लेखक ने रक्त संरचना का वर्णन कैसे किया है ?

(ख) रक्त-कणों के निर्माण की प्रक्रिया क्या है ?

(ग) एनीमिया का अर्थ क्या है ? इस से बचने का क्या उपाय है ?

(घ) पेट में कीड़े क्यों होते हैं ? हम कैसे इससे मुक्त रह सकते हैं ?

(ङ) शरीर में सफेद कण और बिंबाणु का क्या महत्व है ?

(च) रक्त के बहाव को हम कैसे रोक सकते है ?

(छ) ब्लॉड बैंक की विशेषताओं को लिखिए ।

भाषा बोध :

१. **रक्त-दान - इस शब्द के अंत में 'दान' है ।**

आप भी ऐसे पाँच शब्द लिखिए जिनके अंत में 'दान' हो :

------ दान ------ दान ------ दान

------ दान ------ दान

२. **आजकल बच्चे पद्रह साल होते-होते सयाने हो जाते हैं ।**

इस वाक्य में 'होते-होते' से मालूम पड़ता है कि पद्रह साल होने से पूर्व ही बच्चे सयाने हो जाते हैं ।

आप ऐसे पाँच वाक्य बनाइए जिनमें निम्नलिखित का प्रयोग हो :

पहुँचते-पहुँचते

बनते-बनते

करते-करते

पढ़ते-पढ़ते

हँसते-हँसते

३. **निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :**

महसूस = -------- बनावट = --------

जाँच = -------- इशारा = --------

किस्म = --------

४. **कोष्ठक में दिए गए विभक्ति युक्त शब्दों की सहायता से वाक्य पूर्ण कीजिए ।**

क) लालकण बनावट में ------ तरह होते हैं ।

ख) ------ से हम एनीमिया से बच सकते हैं ।

ग) ------ से सफेद कण और बिंबाणु भी होते हैं ।

घ) रक्त के तरल भाग में ------प्रोटीन होती हैं ।

ङ) ------ ------ ब्लॅड बैंक बनाये गए हैं ।

(आपतस्थिति के लिए, बालूशाही की, संतुलित आहार से, प्लाज़्मा में, रक्त में)

५. उचित विभक्ति की सहायता से वाक्य पूर्ण कीजिए ।

क)	डॉक्टर ------ दिव्या को देखा ।	(को / ने)
ख)	अस्पताल ------ रिपोर्ट ले जाओ ।	(में / से)
ग)	अनिल के मन ------ जिज्ञासा हुई ।	(में / की)
घ)	ये कण शरीर ------ काम करते हैं ।	(से / के लिए)
ङ)	सफेद कण हमारे शरीर ------वीर सिपाही हैं ।	(के/में)

कारक : संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप के द्वारा उसका संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ जाना जाता है उसे 'कारक' कहते हैं । कारक को प्रकट करने के लिए संज्ञा या सर्वनाम के साथ जो चिह्न लगाए जाते हैं, उन्हें 'परसर्ग' कहते हैं ।

६. इस पाठ में कुछ मुहावरों / कहावतों का प्रयोग है ।

आप निम्नलिखित मुहावरों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

भानुमती का पिटारा

दस्तक देना

घर करना

पीठ ठोंकना

धावा बोलना

अनुभव विस्तार

- ★ आपने इस पाठ में शरीर और रक्त संबंधी जानकारी प्राप्त की । अतः शरीर-रचना का एक सुन्दर चित्र बनाकर उसमें रक्त संचार की प्रक्रिया दर्शाइए ।
- ★ अस्पताल में जाकर रक्त परीक्षण कक्ष देखिए और रक्त के प्रकारों की जानकारी प्राप्त कीजिए ।

हिन्दी में आठ कारक होते हैं ।

कारक		विभक्ति / परसर्ग
कर्ता	–	ने
कर्म	–	को
करण	–	से, द्वारा
संप्रदान	–	को, के लिए
अपादान	–	से (अलग करने के अर्थ में)
संबंध	–	का, के, की
अधिकरण	–	में, पर
संबोधन	–	हे, ओ, अरे

दुनिया का एक अजूबा : कोणार्क

स्नेहलता दास

सही सलामत को देखने को वक्त नहीं, मगर लोग टूटे-फूटे को देखने आते हैं । अजूबा न होता तो क्यों आते ?

बात तेरहवीं शताब्दी की है । ओड़िशा के एक प्रतापशाली राजा थे नरसिंह देव । उनकी कमर में हरदम एक तलवार लटकती रहती थी । वह पूँछ जैसी लगती थी । लोग प्यार से राजा को लांगुला नरसिंह देव कहते थे । उस वक्त बंगाल के नवाब बराबर ओड़िशा पर धावा बोल देते थे । नरसिंह देव ने नई तरकीब सोची । उन्होंने बंगाल पर आक्रमण किया, वहाँ के शासक को परास्त कर दिया । बड़ा काम किया । काफी धन मिला ।

एक रोज नरसिंह देव सागर के किनारे-किनारे घुड़सवारी कर रहे थे । झाऊ, पुन्नाग, केतकी, हेन्ताल जैसे तरुलताओं के बीच सुशीतल पगडंडी थी । समुद्र के ऊपर सूर्य उग रहा था । उसकी ललाई जलराशि पर निराली शोभा बिखेर रही थी। अब किरणें ऊँचे पेड़ों की ओट से झाँकने लगीं । राजा ने उस खूबसूरत दृश्य को देखकर सोचा-क्या सागर जल में ही कोई विशाल मंदिर नहीं बनाया जा सकता ? महाराज ने अपने सचिव शिबू सामन्तराय से इस विषय में चर्चा की । वे फौरन काम में लग गए ।

बड़े-बड़े पत्थर समुद्र में डलवाए गए । पर मंदिर की नींव नहीं जम पाई । सब लोग परेशान थे । एक दिन शिबू काफी थक गए । वे पास वाले गाँव की एक बुढ़िया की झोंपड़ी में विश्राम करने गए । बुढ़िया ने बड़ी आवभगत की । गर्म-गर्म खीर परोसी । शिबू ने खीर में उँगलियाँ डालीं तो वे जल गईं । बुढ़िया ने हँसकर ताना मारा - बेटा, तुम तो शिबेइ का भी कान काटते हो । वह समुन्दर के बीच पत्थर डलवा रहा है । तुम बीच थाली में से खीर खाते हो। किनारे से खाओ । शिबू का माथा ठनका । तरकीब निकल आई । एक किनारे से पत्थर डलावाए । नींव जम गई । मंदिर का काम तेजी से चलने लगा ।

राजा का हुक्म था- बड़े से बड़ा बनाओ । सो पहाड़नुमा बड़े-बड़े पत्थर जमा किए गए। बड़े-बड़े हाथी, बड़े-बड़े घोड़े, बड़े-बड़े सिंह, बड़े-बड़े वीर घुड़सवार । आदमकद मूर्तियाँ । सब विशालता, भव्यता, गौरव प्रकट करती हैं । नरसिंह देव के वीरत्व, वैभव, महत्व को उजागर करती हैं । शिबू ने मुख्य स्थपति बिशू महारणा से कहा- छोटी से छोटी, बारीक से बारीक मूर्तियाँ, लताएँ भी तो बन सकती हैं । बिशू ने विशाल मंदिर बनाया, सबसे ऊँचा 227 फुट ! एकदम नीचे कमल की पंखुड़ियाँ, उसके ऊपर रथ के आकार वाला विराट मंदिर रखा । बड़े-बड़े चौबीस पहिये लगाए । सात घोड़े । उनकी लगाम खींचकर विराजमान अश्वारोही । सच में मानों मंदिर पानी पर तैर रहा है । उसके तीन हिस्से-सामने नाट्य मंदिर। उसके पीछे एक पत्थर का बना विशाल चौंतीस फूट ऊँचा अरुण स्तम्भ था। उसके सोलह आयाम थे । बापरे, कितना मोटा ! (यह आजकल पुरी में है।) फिर मुखशाला उसके पीछे विमान या मुख्य मंदिर । सूर्यदेव की विशाल मूर्तियाँ । प्रातःकालीन सूर्य के सौम्य मुख, मध्याह्न सूर्य का उद्‌भासित तेज, अपराह्न सूर्य पर छाया की रेखा । बगल में छाया देवी का मंदिर । सुन्दर युवक-युवतियाँ, नर्तक-नर्तकी, सुन्दर नारियों की अनगिनत अदाएँ, स्यालभंजिकाएँ, सेना और सेनापति, वीणा, पखावज, मुरली बजानेवाली युवतियाँ, देखते रहो । छोटी से छोटी मूर्तियाँ, सुई की नोंक से बनाई गईं लताएँ । और वे विशाल अलसाती, बलखाती, आपस मैं लिपटी नाग-नागिनों की काले संग मरमर से बनी दहलीजें । सबका वर्णन तो कोई नहीं कर सकता । जीवन का कोई दृश्य छूटा नहीं । पत्थरों पर अंकित विशाल मानव-जीवन । यह काम तो केवल उत्कल के कुशल कलाकार ही कर सकते थे । बारह सौ कारीगर, श्रमिक, कलाकार, स्थपति सोलह साल तक अथक श्रम करते रहे । नरसिंह देव बीच-बीच में देखने जाते । कामगरों की, अपनी प्रजा की मन ही मन प्रशंसा करते ।

लेकिन आखिर में एक झटका। मंदिर इतना बड़ा हो गया कि उस पर कलश नहीं बैठाया जा सका। सारे कारीगर परेशान । ऊपर से राजा का हुक्म जल्दी काम पूरा करो । बिशू जब घर से चला था तो उसका बेटा पैदा ही नहीं हुआ था । वह बड़ा हुआ, माँ से पता लेकर पिता से मिलने गया । ऐसे वक्त पहुँचा जब सब माथा ठोंक रहे थे । लड़का होनहार था, घर में निर्माण कला की जो पोथियाँ थीं, सबको पढ़ चुका था । उसने पिता से अनुमति ली । मंदिर के शिखर का निर्माण दो दिनों में पूरा हो गया । सब खुश हुए । लोगों ने कहा जो काम बड़े बड़े कारीगरों के हाथ नहीं हो सका था, एक बालक ने कर दिखाया । बालक धर्मपद ने मंदिर निर्माण करने का यश अपने ऊपर नहीं लिया । वह श्रेय तो सारे बढ़ई कुल को मिलना चाहिए । दूसरे दिन सुबह बालक मिला नहीं, पता नहीं कहाँ गया !

सबसे पीछे बना मंदिर – सबसे पहले टूट गया । पता नहीं कैसे ? टूटता ही गया । आज मुखशाला ही साबूत बची है । लेकिन बाकी सब खण्डहर।

पर उन खंडहरों में आज भी रोज हजारों यात्री घूमते रहते हैं । आँखें गड़ाकर उसके स्थापत्य को देखते है । टूटी फूटी मूर्त्तियों में आज भी मुस्कान खिली रहती है । उनके मन के भाव सहज ही पढ़ा जा सकता है ।

इस भव्य मंदिर को देखने के लिए पुराने जमाने से ही विदेशी पर्यटक आते रहते हैं । मूर्त्तिकला के पारखी हावेल साहब ने लिखा है –

''अगर यह यूरोप या अमेरिका होता तो ये भग्न मूर्त्तियाँ अपनी उच्चता और सौंदर्य की छटाएँ बड़े बड़े म्यूजियम में दिखा रही होतीं । पर दुर्भाग्य !!''

यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि अपने भग्न रूप में कोणार्क आज भी संसार काएक अजूबा बनकर खड़ा है ।

शब्द		अर्थ
अजूबा	–	अनोखा, अनूठी
ललाई	–	लालिमा
निराली	–	अनोखी
फौरन	–	तुरंत
आवभगत	–	स्वागत सत्कार
ताना	–	व्यंग्य
तरकीब	–	उपाय
नींव	–	आधार
हुकम	–	आदेश
स्थपति	–	भवन निर्माण करनेवाला
अदाएँ	–	मुद्राएँ
स्यालभंजिकाएँ	–	सुंदर नारियाँ
अथक	–	बिना थके
कुशल	–	प्रवीण
साबूत	–	अविकल, अखण्ड
खंडहर	–	भग्नावशेष

अनुशीलनी

भाव बोध और विचार :

(क) मौखिक:

1. बच्चो ! तुममें से किस किस ने कोणार्क मदिंर देखा है ? उस मंदिर की कला का वर्णन बारी बारी से कीजिए ।
2. मंदिर के इतिहास को जानने का प्रयास कीजिए ।

(ख) लिखित:

(i) किस राजा ने कोणार्क मंदिर का निर्माण करवाया था ?

(ii) राजा के मन मे मंदिर बनाने का विचार कैसे आया ?

(iii) किस घटना से शिबू सामंतराय को अक्ल आई ?

(iv) कोणार्क मंदिर के दीवारों पर कैसी-कैसी मूर्त्तियाँ हैं ?

(v) इस मंदिर में सूर्यदेव के कितनी और कैसी मूर्त्तियाँ हैं ?

(vi) मंदिर का शिखर बनाने में किसका विशेष योगदान रहा ?

(vii) मूर्त्तिकला के पारखी हावेल ने उस मंदिर के बारे में क्या कहा ?

भाषा बोध :

(क) इन शब्दों के अर्थ बताइए :

दुनिया, वक्त, धाबा, तरकीब, परास्त, घुड़सवारी, जलराशि, फौरन, शिखर, संगमरमर, पोथियाँ, यश, श्रेय, दुर्भाग्य ।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों को पूरा कीजिए :

1. झाऊ, पुन्नाग, केतकी, हेन्ताल जैसे ---------- पगडंडी थी ।
2. बड़े-बड़े ---------- में डलवाये गए ।
3. तुम बीच थाली में से---------- से खाओ ।
4. एकदम नीचे ----------, उसके ऊपर ---------- विराट मंदिर रखा ।
5. प्रातः कालीन सूर्य के ----------, मध्यान्न सूर्य की ----------, अपराह्ण सूर्य पर ---------- ।
6. वे विशाल अलसाती, बलखाती, ---------- की काले ---------- बनी दहलिजें ।
7. लेकिन आखिर में ---------- ।
8. मंदिर के ---------- पूरा हो गया ।

(ग) इनके समान अर्थ वाले शब्द लिखिए :

अजूबा, सागर, तरुलता, जल, पत्थर, विराजमान, अरुण, उत्कल, पोथियाँ, होनहार

(घ) इनके विलोम शब्द लिखिए :

निर्माण, बराबर, फौरन, तेजी से, वीरता, कुशल, यश

(ङ) इन शब्दों को वाक्य में प्रयोग कीजिए ।

आवभगत, निराली, कुशल, हुक्म, फौरन, खंडहर, कारीगर, श्रमिक, कलाकार, स्थपति ।

(च) निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्दो के कारक बताइए :

क) मोहन ने खाना खाया ।

ख) मैंने हरि को पत्र भेजा ।

ग) वृक्ष से पत्ते गिर रहे हैं ।

घ) राम ने रावण को बाण से मारा ।

ङ) वह मेरे लिए भोजन लाएगा ।

च) वह दिनेश की छतरी है ।

(छ) निम्नलिखित शब्द दो शब्दों के संयोग से बने हैं । प्रथम शब्द का अंतिमवर्ण 'त्' परवर्त्ती शब्द के प्रथम वर्ग के संयोग से परिवर्तित हो गया है । यह 'व्यंजन सन्धि' है ।

क) जगत् + आनन्द = जगदानन्द

ख) शरत् + चन्द्र = शरच्चन्द्र

ग) सत् + जन = सज्जन

घ) उत् + लेख = उल्लेख

सन्धि कीजिए :

उत् + चारण =

उत् + घाटन =

सत् + चरित्र

उत् + श्वास =

उत् + छिन्न =

इस प्रकार दो व्यंजनों की संधि के बारे में व्याकरण की पुस्तक से जानिए ।

खेत की ओर

रामेश्वरलाल खण्डेलवाल

रूखे केश, ओढ़नी मैली
ग्रामीणा जा रही खेत पर,
उन्मन-उन्मन धीमे - धीमे
चरण-चिह्न छोड़ती रेत पर ।

हाथों में हाँडी मट्ठे की,
सिर पर धरी पोटली मैली,
अनायास बढ़ते जाते पग,
मन में है चल रही पहेली ।

वहाँ खेत में डाल कहीं हल,
जीर्ण हड्डियों का वह ढाँचा,
रूखे-सूखे दो टुकड़ों की,
करता होगा बैठ प्रतीक्षा ।

फटे बिवाई-वाले सूखे,
पाँवों ने कितना पथ नापा,
चिर अभाव में गई जवानी,
असमय ही आ गया बुढ़ापा ।

उदर–पूर्तिहित, ऋण में घर का –
हाय बिक गया केश–केश है,
तन ढँकने को वस्त्र न पूरा–
इस सीता के पास शेष है ।

दो क्षण ठहर गई सुस्ताने,
वह बबूल के तरु के नीचे ।
मानव को विश्राम कहाँ, रे,
कुत्ता सोया आँखें मींचे ।

लू चलती है, धूप कड़ी है,
काया से कुछ मोह नहीं है ।
जीवन से अनुराग नहीं अब,
अन्यायी से द्रोह नहीं है ।

सह जीवन की लू के झोंके–
झुलस गई कुन्दन–सी काया,
जीवन का है ताप बहुत ! रे,
क्या दो पल बबूल की छाया ।

शब्द–अर्थ:

ग्रामीणा– गाँव की नारी, उन्मन – अनमना, अनायास– अचानक, जीर्ण– टूटाफूटा, ढाँचा– पिंजर, प्रतीक्षा– इंतजार, चिर– हमेशा, कुन्दन–सोना, उदर– पेट, पूर्त्तिहित – भरने के लिए, ऋण–कर्ज, सीता– मिट्टी की औरत, सुस्ताने – विश्राम करने, काया – शरीर, अनुराग – प्रेम, द्रोह – विद्रोह, बगावत ।

भाव बोध और विचार :

(१) मौखिक :

(1) 'खेत की ओर' कविता को याद करके कक्षा में आवृत्ति कीजिए ।

(2) ऐसे ही कुछ और कविताओं को चुनिए जिसमें खेत का वर्णन हो । उसे कक्षा में पढ़कर सुनाइए ।

(3) इस कविता में कवि के मन में किसान के प्रति कैसे भाव हैं ?

(२) लिखित :

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) कवि 'खेत की ओर' कविता के माध्यम से क्या कहना चाहता है ?

(2) एक किसान और उसकी पत्नी को क्या-क्या कष्ट उठाना पड़ता है ?

(3) किसान खेत में किसकी प्रतीक्षा करता है ?

(4) किसान के जीवन में असमय बुढ़ापा क्यों आ जाता है ?

(5) इन पंक्तियों के अर्थ समझाइए :

(क) जीवन से अनुराग नहीं अब, अन्यायी से द्रोह नहीं है

(ख) यह जीवन की लू के झोंके-झूलस गई कुन्दन सी काया

(ग) चिर अभाव में गई जवानी, असमय ही आ गया बुढ़ापा

(घ) उदर पूर्ति हित, ऋण में घर का-हाल बिक गया केश-केश है ।

(३) भाषा बोध :

इस प्रकार के शब्द लिखिए :

जैसे : हवेली - पहेली

मैली - थैली

पोटली -

हल -

प्रतीक्षा –

अभाव –

बुढ़ापा –

मोह –

कड़ी –

काया –

(४). इन पक्तियों को सही शब्द लगाकर पूरा कीजिए :

(क) जीवन से .... नहीं अब
.... से ....नहीं है

(ख) फटे .... सूखे
पावों ने कितना ....

(ग) वहाँ खेत में ....
.... का वह ढाँचा।

(घ) .... ही बढ़ते जाते पग,
मन में है चल .... ।

(ङ) .... मैली
ग्रामीणा जा रही ....,

(च) ....धीमे–धीमे
.... छोड़ती रेत पर ।

(छ) दो क्षण ठहर गई ....
वह .... की .... नीचे।

(ग) इस कविता में से पाँच क्रिया पदों को छाँट कर लिखिए :

जैसे : जा रही, छोड़ती

(घ) पाँच भाववाचक संज्ञाएँ लिखिए :

जैसे : बुढ़ापा

जवानी

(ङ) ‘क’ स्तंभ के साथ ‘ख’ स्तंभ के शब्दों को मिलाइए :

	‘’क’	‘ख’
जैसे :	बबूल	काया
	कुन्दन	किसान
	अभाव	धूप
	अन्यायी	हल
	लू	मैली
	खेत	द्रोह
	रूखे	छाया
	ओढ़नी	केश
	चरण चिह्न	रेत
	हाँडी	मट्ठा

(च) विशेषण : जिस पद से संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता का बोध हो, उसे ‘विशेषण’ कहते हैं ।

विशेष्य : विशेषण जिसकी विशेषता बताता है, उसे ‘विशेष्य’ कहते हैं । **जैसे–** घोड़ा काला है ।’’ यह घोड़ा – विशेष्य, काला – विशेषण ।

विशेषण के मुख्यत: चार भेद है :

i. गुणवाचक विशेषण – नीला, पीला, सुंदर आदि

ii. परिमाणवाचक विशेषण– चार किलो, लीटर, बहुत, थोड़ा आदि

iii. संख्यावाचक विशेषण – एक, चार, पहला, दूसरा आदि ।

iv. सार्वनामिक विशेषण– यह, वह, इस, उस आदि ।

प्रदूषण

हरचरण लाल शर्मा

हम सभी जानते हैं कि धरती पर जीवन प्रकृति-संतुलन से ही संभव हो सका है । धरती वनस्पतियों से पूरी तरह ढक न जाए इसलिए घास खानेवाले जानवर पर्याप्त संख्या में थे और इन जानवरों की संख्या अधिक न हो जाए इसलिए हिंस्र जंतु भी थे । इस प्रकार प्रकृति में वनस्पति, जीव-जंतु आदि का अनुपात संतुलित और नियंत्रित बना रहता था । इससे पर्यावरण स्वच्छ और जीवन अनुकूल बना रहता था । परंतु आज मनुष्य ने अवांछित कार्यों से प्रकृति का संतुलन बिगाड़ दिया है । वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण बड़े पैमाने पर उद्‌योग-धंधे तो पनपे हैं, जनसंख्या का भयंकर विस्फोट भी हुआ ।

इस बढ़ती हुई आबादी को खिलाने के लिए उसी मात्रा में अन्न, सब्जी, फल आदि चाहिए, रहने के लिए घर चाहिए, पहनने के लिए कपड़े चाहिए और इसी प्रकार की अन्य जरूरतों की पूर्ति के लिए विविध प्रकार की सामग्री चाहिए । खेती करने के लिए, घर बनाने

के लिए, कल-कारखाने लगाने के लिए, सड़कें और रेल पटरियाँ बिछाने के लिए धरती चाहिए । इसलिए बड़े पैमाने पर जंगल काटे गए । इसके अलावा हमारे कल-कारखाने कच्चे माल के लिए जंगलों पर ही निर्भर हैं। इसलिए पिछले वर्षों में जिस गति से जंगलो का सफाया हुआ है, वैसा कभी नहीं हुआ था । नई तकनीकों से पेड़ काटने की गति तो खूब बढ़ी किंतु उतनी ही गति से कटे हुए पेड़ों की जगह नए पेड़ उगाने का प्रयत्न नहीं किया गया । बढ़ती हुई आबादी को खिलाने के लिए खेतों को रासायनिक उर्वरक चाहिए और पौधों को कीटाणु हानि न पहुँचाएँ इसलिए कीटनाशी दवाइयाँ चाहिए । इन उर्वरकों और कीटनाशी दवाइयों के कारण मिट्टी प्रदूषित होती जा रही है ।

बड़े-बड़े उद्योग-धंधों और बढ़ते हुए शहरीकरण के कारण बड़े-बड़े नगर बस गए । इन नगरों से निकलने वाला कूड़ा-कचरा तथा कारखानों से निकलनेवाले अपशिष्ट पदार्थ अंत में नदियों या जलाशयों में ही गिरते हैं । इस कारण नदियों और जलाशयों का जल प्रदूषित होता जा रहा है । खुली भूमि में भी कूड़ा-कचरा डाला जाता है । इन कचरों में तरह तरह के ज़हरीले रसायन होते हैं । बड़े-बड़े कल-कारखाने, वाहन, बिजली तापघर आदि बहुत अधिक धुआँ उगलते हैं । धएँ में धूलकण, कार्बनकण, सल्फर डाइऑक्साइड, नाइट्रोजेन डाइऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड आदि होने के कारण वायु दूषित हो जाती है । इस प्रकार आज भूमि, पानी और हवा तीनों ही प्रदूषित होते जा रहे हैं ।

इतना ही नहीं, आज थल, जल और नभ तीनों में वैज्ञानिक आविष्कारों के फलस्वरूप, विभिन्न प्रकार के तेज़-से तेज़ चलनेवाले यान बन गए हैं । इससे यातायात में बड़ी सुविधा हुई है । दुनिया छोटी हो गई है और लोग एक स्थान से दूसरे स्थान तक शीघ्रता और सुगमता से आने-जाने लगे हैं। ये अनवरत दौड़ती हुई रेलगाड़ियाँ, बसें, बड़े-बड़े जलपोत और विमान लगातार धुआँ तो उगलते ही हैं, शोर भी पैदा करते हैं । इससे वायु प्रदूषण के साथ-साथ ध्वनि-प्रदूषण भी बढ़ता जा रहा है । आज रॉकेट के द्वारा अनेक प्रकार के अंतरिक्षयान अंतरिक्ष में छोड़े जा रहे हैं । इनसे हमारी पृथ्वी का ओज़ोन मंडल

प्रभावित हो रहा है । इस मंडल में ओजोन की जो मोटी परत है, वही सूर्य की पराबैंगनी किरणों के दुष्प्रभाव से पृथ्वी के जीव-जंतुओं और वनस्पतियों की तथा हमारी रक्षा करती है । वैज्ञानिकों का कहना है कि जब तक पृथ्वी के चारों ओर ओज़ोन की परत नहीं थी तब तक धरती पर जीवन प्रारंभ नहीं हुआ था । औद्योगिक विकास ने जहाँ हमें अनेक प्रकार की सुख-सुविधाओं की भौतिक चीजें उपलब्ध कराई हैं, वहीं उसने वायुमंडल में क्लोरो-फ्लोरो कार्बन नामक गैस की मात्रा भी बढ़ा दी है । इससे ओज़ोन परत में छेद हो जाता है । इसके कुप्रभाव से ओज़ोन की मात्रा में कमी हो रही है । यदि ओज़ोन गैस की परत और भी पतली हो गई तो फिर सूर्य से आ रही पराबैंगनी किरणों से बचाव कैसे होगा ? यदि यही रफ्तार रही तो पृथ्वी की परिस्थितियाँ और अधिक बिगड़ती चली जाएँगी। बहुत संभव है कि वातावरण का औसत ताप 1.5° सेल्सियस से 4.5° सेल्सियस तक बढ़ जाए। ध्रुवों पर जमी बर्फ पिघल जाए और हमारी धरती जलमग्न हो जाए। तब यह भी संभव है कि ध्रुव प्रदेश हमारे निवास के योग्य बन जाए और जहाँ आबादी है वह स्थान समुद्र के गर्भ में समा जाए ।

आज चारों प्रकार के प्रदूषण - भूमि-प्रदूषण, जल-प्रदूषण, वायु-प्रदूषण, ध्वनि-प्रदूषण फैल रहे हैं । भविष्य में इनका दुष्प्रभाव कितना फैलेगा,बताना मुश्किल है । हम जानते हैं कि प्रायः सभी जीवधारियों के लिए प्राणवायु (ऑक्सीजन) आवश्यक है । यदि

प्राणवायु दूषित हो जाएगी तो जीवनधारियों को जान के लाले पड़ जाएँगे । हवा के बाद हमारी दूसरी आवश्यकता है पानी । पानी भी अब शुद्ध नहीं मिलता, जबकि सभी जीव-जंतु और पेड़-पौधों को शुद्ध पानी ही चाहिए । यह सभी जानते हैं कि नदी में यदि एक स्थान का पानी दूषित हो जाता है तो पूरी नदी का पानी प्रदूषित हो जाता है ।

आज हमारा मौसम-चक्र बहुत कुछ बदल गया है बल्कि अनिश्चित-सा हो गया है । अब कहीं अतिवृष्टि होती है, कहा अल्पवृष्टि तो कहीं अनावृष्टि । कहीं इतनी वर्षा होती है कि बाढ़ के कारण जन और धन की अपार हानि होती है, तो कहीं बिलकुल वर्षा नहीं होती, जिससे खेत में खड़ी फसलें नष्ट हो जाती हैं । कभी-कभी जब फसल पक जाती है तब मूसलाधार वर्षा हो जाती है, जिससे अनाज को घर तक लाना असंभव हो जाता है । अधिक गरमी पड़ने तथा समय से मानसुन न आने को भी प्रदूषण से जोड़ा जा रहा है । ये प्राकृतिक विपदाएँ इस कारण बढ़ती जा रही हैं कि हमारा पर्यावरण प्रदूषित होता जा रहा है और प्राकृतिक संतुलन भी बिगड़ता जा रहा है। मौसम में इस तरह के बदलाव से सामान्य जन तो पीड़ित हैं ही, वैज्ञानिक भी चिंतित हैं ।

हम जानते हैं कि साँस की अधिकतर बीमारियाँ हवा की गंदगी के कारण होती हैं और पेट की बिमारियाँ गंदे जल के कारण । जीवन को स्वस्थ बनाए रखने के लिए साँस लेने योग्य वायु और पीने योग्य पानी दोनों ही अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं । हमारे कल-कारखाने और तेज चलनेवाले वाहन भी भीषण शोर करते हैं, उन्हें भी नियंत्रित करने की आवश्यकता है, क्योंकि इनके बीच रहने से मानसिक तनाव बढ़ता है, हृदय की धड़कनें तेज हो जाती हैं । कभी-कभी भीषण आवाज़ या चीत्कार सुनकर हृदय धक-सा रहा जाता है । यहाँ तक कि कभी-कभी हृदय-गति बंद होने से मृत्यु तक हो जाती है।

मौसम में बदलाव और भीषण बीमारियों के फैलने से वैज्ञानिकों ने चिंतित होकर खोज की तो उन्हें प्रदूषण ही उसका एकमात्र कारण ज्ञात हुआ । प्रदूषण की यह समस्या विश्वव्यापी है । विकसित देशों में बड़े पैमाने पर कल-कारखाने और तेज वाहनों के कारण प्रदूषण बहुत बढ़ गया है । इसी प्रकार, विकाशशील देशों में भी नित्यप्रति नए-नए कारखानों और वाहनों के कारण प्रदूषण बढ़ता जा रहा है । इसलिए विश्व के सभी देश मिल-जुल कर प्रयत्न कर रहे हैं कि जितनी जल्दी हो सके प्रदूषण को नियंत्रित किया जाए । जोहान्सबर्ग में 2002 ई. के अगस्त माह में धरती को प्रदूषणों से बचाने के लिए जिस पृथ्वी सम्मेलन का आयोजन हुआ, उसमें प्रदूषण की समस्या पर चिंता व्यक्त की गई । प्रदूषण की मात्रा यदि इसी गति से बढ़ती रही तो वह दिन दूर नहीं जब हमारी सुंदर सलोनी धरती से जीवन ही लुप्त हो जाएगा ।

बढ़ते हुए प्रदूषण पर नियंत्रण पाने का मतलब यह कदापि नहीं है कि हम कल-कारखानों को बंद कर दें, यातायात के साधनों का उपयोग न करें और पाषाण युग में लौट जाएँ, विज्ञान के चमत्कारों और प्रौद्योगिकी की करामातों को ताक पर रख दें । वास्तव में समस्या का हल निरंतर हो रहे विकास को रोकने में नहीं है, बल्कि युक्तिसंगत समाधान खोजने में है ।

इसके लिए हम प्रकृति से तालमेल रखें । अपनी धरती को हरा-भरा बनाए रखें । यह प्रयास करें कि प्रकृति का भंडार भरा रहे । धरती ऐसी बनी रहे जिस पर-

फुलहिं फलहिं बिटप बिधि नाना । मंजु बलित बर बेलि बिताना ।
गुंजत मंजु मधुकर श्रेनी । त्रिविध बयारि बहइ सुख देनी ।
ऋतु बसंत बह त्रिविध बयारी । सब कहँ सुलभ पदारथ चारी ।

हमारा पर्यावरण हमारा रक्षा-कवच है । यह हमें प्रकृति से विरासत में मिला है । यह हम सबका पालनकर्त्ता और जीवनाधार है । वस्तुतः पर्यावरण-रक्षण भारतीय संस्कृति से जुड़ा है । पेड़-पौधे और जानवर हमारे मित्र हैं । बड़े-बड़े बाग-बगीचों और पार्कों को

'शहर का फेफड़ा' कहा जाता है । हमारी संस्कृति में पेड़ लगाना पुण्य-कार्य माना जाता है । पीपल, बरगद, आम, नीम, जामुन, आँवला जैसे उपयोगी वृक्षों के रोपण को महान धार्मिक कृत्य माना गया है । ये कार्य प्रकृति एवं पर्यावरण के प्रति हमारी आस्था प्रकट करते हैं । इन कार्यों से हम में अच्छे संस्कार आते हैं । शिक्षा का सही लाभ तभी होगा जब हम अच्छे संस्कारों को बनाए रखें ।

पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिए सबसे अधिक आवश्यकता इस बात की है कि प्रदूषक कार्यों को रोका जाए । सरकारी स्तर पर इस दिशा में अनेक कदम उठाए जा रहे हैं । इसके अतिरिक्त पर्यावरण-प्रदूषण को रोकने में हम स्वयं भी सहयोग दे सकते हैं । हम गंदगी न फैलाएँ और दूसरा यह कि जहाँ गंदगी हो उसे साफ करने में सहयोग दें । अपने घर, पास-पड़ोस और विद्यालय के परिवेश को साफ-सुथरा रखें । जहाँ-तहाँ कूड़ा -कचरा आदि न फेंकें । वृक्षों की टहनियों को न तोड़ें । साथ ही अधिक-से-अधिक वृक्ष लगाएँ । इससे वृक्षों की संख्या भी बढ़ेगी और वन-महोत्सव के उद्देश्य भी पूरे होंगे- एक पंथ कई काज । इसी उद्देश्य से हम संकल्प कर लें कि अपने जन्म दिन पर अथवा अन्य किसी शुभ अवसर पर वृक्ष जरूर लगाएँगे ।

शब्द-अर्थ

दुष्प्रभाव - बुरा प्रभाव, संतुलन - सभी पक्षों का यथास्थान होना, चेतावनी- सावधान रहने के लिए कही जानेवाली बात, तालमेल- मिलान, संगति; उगाना - उपजाना, जहरीला - विषयुक्त, यातायात-गमनागमन,परत - स्तर, भौतिक - शरीर संबंधी, रफ्तार- गति, मुश्किल- कठिन, धड़कन- कलेजे की धक-धक, स्पन्दन; प्रयत्न- चेष्टा, सम्मेलन- सभा, आस्था-श्रद्धा, टहनी - डाली ।

अनुशीलनी

भाव बोध और विचार :

(क) मौखिक :

(1) प्रकृति-संतुलन का अर्थ क्या है ?

(2) आजकल प्रकृति-संतुलन क्यों बिगड़ जाता है ?

(3) नदियों का जल क्यों प्रदूषित हो रहा है ?

(4) किससे ओजोन-मंडल प्रभावित होता है ?

(5) प्रदूषण कितने प्रकारों से फैल रहा है ?

(6) किसे महान धार्मिक कृत्य माना जाता है ?

(ख) लिखित :

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) क्या उद्योग धंधे और शहरीकरण प्रदूषण के कारण हैं ? स्पष्ट कीजिए ।

(2) ओजोन का महत्त्व क्या है ?

(3) विभिन्न प्रकारों के प्रदूषण के संबंध को स्पष्ट कीजिए ।

(4) मौसम चक्र में होनेवाले परिवर्तन के परिणाम बताइए ।

(5) वायु और जल के प्रदूषण के कारण क्या-क्या हानियाँ होती हैं ?

(6) प्रदूषण की समस्या का समाधान करने का क्या उपाय है ?

(7) पर्यावरण-रक्षण हमारी संस्कृति से जुड़ा है । कैसे ?

भाषा बोध :

1. **निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्य गठन कीजिए :**

   संतुलन, बेशुमार, विरासत, तालमेल, युक्तिसंगत ।

2. **विपरीत अर्थ के जोड़े बताइए :**

वांछित	अनुपयोग
कच्चाअशुद्ध	
स्वस्थ	अवांछित
उपयोग	पक्का
शुद्ध	अस्वस्थ

3. **प्र + दूषण = प्रदूषण**

   इसमें 'प्र' उपसर्ग लगकर अर्थ में विशेषता आई है और अर्थ भी बदल गया है । इसप्रकार आप भी 'प्र' उपसर्ग से पाँच शब्द बनाइए । अन्य उपसर्ग भी जानिए ।

4. **दिए गए शब्दों से मूल शब्द और प्रत्यय अलग करके लिखिए :**

जैसे = शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
वैज्ञानिक	विज्ञान	इक
प्राकृतिक		
रासायनिक		
औद्योगिक		
मानसिक		
सांस्कृतिक		

5. रेखांकित शब्दों का कारक बताइए :

(क) खेती करने के लिए धरती चाहिए ।

(ख) इसलिए बड़े पैमाने पर जंगल काटे गए।

(ग) इसमें यातायात में बड़ी सुविधा हुई ।

(घ) बीमारी हवा की गन्दगी के कारण होती है ।

(ङ) हम सब संस्कृति से तालमेल रखें ।

6. सही विकल्प चुनकर वाक्य पूरा कीजिए :

(क) ....तकनीकों से पेड़ काटने की गति खूब बढ़ी है । (नई / नया)

(ख) हमारे कल–कारखाने और यान–वाहन भी भीषण शोर .... । (करता है / करते हैं)

(ग) ...... भूमि पर कूड़ा–कचरा डाला जाता है । (खुला / खुली)

(घ) हम अपनी धरती को .... बनाए रखें । (हराभरा / हरी–भरी)

(ङ) हमारा पर्यावरण .... रक्षा–कवच है । (हमारी / हमारा)

अनुभव विस्तार :

* आजकल बढ़ते हुए प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए आप अपनी ओर से क्या कदम उठा सकते हैं ?
* वैज्ञानिक आविष्कार, बढ़ती हुई जनसंख्या और उद्योग धन्धों का प्रभाव प्रदूषण पर पड़ता है । इनकी उपयोगिताओं के संबंध में भी जानकारी प्रस्तुत कीजिए ।
* समाचार –पत्र तथा पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों से पर्यावरण रक्षण संबंधी कार्यक्रमों और प्रयासों के संकलित करके सूची बनाइए ।

ग्राम श्री

सुमित्रानंदन पंत

फैली खेतों में दूर तलक
मखमल की कोमल हरियाली,
लिपटीं जिससे रवि की किरणें
चाँदी की सी उजली जाली ।
तिनकों के हरे–हरे तन पर
हिल हरित रुधिर है रहा झलक,
श्यामल भूतल पर झुका हुआ
नभ का चिर निर्मल नील पलक !
रोमांचित–सी लगती वसुधा
आई जौ गेहूँ में बाली,
थरहर सनई की सोने की
किंकिणियाँ हैं शोभाशाली !
उड़ती भीनी तैलाक्त गन्ध
फूली सरसों पीली– पीली !
लो, हरित धरा से झाँक रही
नीलम की कली, तीसी नीली !
रंग–रंग के फूलों में रिलमिल
हँस रही संखिया मटर खड़ी,

मखमली पेटियों सी लटकीं
छीमियाँ, छिपाए बीज लड़ी !
फिरती हैं रंग-रंग की तितली
रंग-रंग के फूलों पर सुन्दर,
फूले फिरते हों फूल स्वयं
उड़-उड़ वृन्तों से वृन्तों पर।
अब रजत स्वर्ण मंजरियों से
लद गई आम्र तरु की डाली,
झर रहे ढाक, पीपल के दल-
हो उठी कोकिला मतवाली !

शब्द-अर्थ

मखमल- रेशम, हरियाली - हरे रंग की, तिनका - सुखी घास, रुधिर - रक्त, नभ- आकाश, वसुधा- पृथ्वी, सनई - हवा की सनसनाहट, किंकिणियाँ - करधनी, कोकिला - कोयल, हरित धरा- हरे रंग की पृथ्वी, संखिया- एक प्रकार के तीव्र जहर, वृन्त - डंठल, रजत- चाँदी, स्वर्ण- सोना, मंजरी - बौर, आम्रतरु - आम का पेड़, दल - पत्ता, चिर -

अनुशीलनी

भाव बोध और विचार :

(क) मौखिक :

(1) कवि 'ग्राम श्री' कविता में प्रकृति वर्णन के द्वारा हमारे मन में कैसे भाव जगाते हैं ?

(2) आप प्रकृति को ध्यान से देखिए और उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए ।

(ख) लिखित :

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) कवि ने खेत की हरियाली का कैसा वर्णन किया है ?

(2) कविता में कवि ने अरहर को क्या कहा है ?

(3) सरसों के फूलों का रंग और गंध कैसी होती हैं ?

(4) कवि ने किसे नीलम की कली कहा है ?

(5) मखमली पेटी में क्या छिपा है ?

(6) इस कविता में फूल और तितली क्या करती हैं ?

(7) कोकिला क्यों मतवाली हो उठती है ?

(8) इन पंक्तियों के भाव समझाइए :

(क) फैली खेतों में दूर तलक मखमल की कोमल हरियाली ।

(ख) रोमांचित-सी लगती वसुधा आई जौ गेहूँ में बाली,

(ग) हरित धरा से झाँक रही नीलम की कली, तीसी नीली ।

भाषा बोध : -

1. **सही शब्द लगाकर रिक्त-स्थान की पूर्ति कीजिए :**

(क) श्यामल भूतल पर झुका हुआ
नभ का चिर ....

(ख) उड़ती भीनी ....
फूली सरसों ....

(ग) तिनकों के .... तन पर
हिल .... है रहा झलक ।

(घ) .... सी लटकीं
छीमियाँ छिपाए .... ।

(ङ) झर रहे ....
हो उठी कोकिला .... ।

2. **इन शब्दों के अर्थ लिखिए :**

रवि, तिनका, रुधिर, भूतल, नभ, वसुधा, मखमली, वृन्त, रजत, स्वर्ण, मंजरी, आम्रतरु, कोकिला ।

3. **इन शब्दों का प्रयोग करके वाक्य बनाइए :**

हरियाली, किरणें, उजली, किंकणियाँ, तैलाक्त, तितली, मतवाली, दल

4. **इनके दो-दो समानार्थक शब्द लिखिए :**

रवि, चाँदी, रुधिर, नभ, वसुधा, तरु, आम्र, कोकिला

5. **'क' स्तंभ के साथ 'ख' स्तभ के सही शब्द को मिलाइए :**

'क'	'ख'
कोमल	पीली
सरसों	भूतल
तैलाक्त	वसुधा
श्यामल	पेटियाँ
रोमांचित	लड़ी
मखमली	गन्ध
बीज	हरियाली

धूल भी सिर चढ़ती है

संकलित

धूल की सबसे बड़ी ख़ासियत है - उसकी नम्रता । अर्थात् बेचारी जहाँ तहाँ पड़ी रहती है। लेकिन एक बार उस पर लात जमा दो तो फिर देखो । वह सिर पर चढ़ कर बोलती है । इसी प्रकार सबसे दीन, नम्र, भद्र और भीरू भी छेड़-खानी करने पर फुफकार उठता है । वैसी ही बात संसार के एक बड़े महात्मा के साथ हुई ।

यह घटना दक्षिण अफ्रीका मे घटी । एक साफ-सुथरे सभ्य मनुष्य टिकट लेकर रेल की प्रथम श्रेणी में चढ़ रहे थे । लेकिन वहाँ पहले से विराजमान कई श्वेतांग लोगों ने उन्हें डिब्बे में घुसने नहीं दिया । कारण था कि वे गोरे यूरोपीय थे । ये काले थे, भारतीय थे । गोरे लोगों ने बलपूर्वक उन्हें निकाल दिया । रातभर जाड़े पाले में स्टेशन पर बैठे-बैठे उस भद्र आदमी ने तय किया- उस 'नाइंसाफ़ी के खिलाफ़ लड़ेंगे । नम्र व्यक्ति विद्रोही हो चला । यह व्यक्ति आगे चलकर महात्मा गांधी के नाम से मशहूर हुए । उन्होंने बिना किसी हथियार के भारत को स्वतंत्रता दिलाई। दक्षिण अफ्रीका में ही आजादी की क्रान्ति मचा दी ।

मोहनदास करमचन्द गांधी का जन्म 1869 अक्तूबर 2 तारीख को गुजरात के पोरबंदर में हुआ । पिता करमचन्द उस राज्य के दीवान थे । माता पुतलीबाई एक सरल सीधी, धार्मिक महिला थी । मोहनदास बचपन में बड़े तेज होनहार छात्र नहीं थे । लेकिन सदा सच बोलते थे । नम्र, और भद्र थे । कुछ दिन बाद वे बैरिस्टरी पढ़ने 18 सालकी उम्र में ही विलायत गए । वहाँ से वापस आकर मुंबई में वकालत की । फिर एक कंपनी के अनुरोध से दक्षिण अफ्रीका गए थे ।

जब गांधी अफ्रीका छोड़कर 1915 में भारत आए, तब तक उनके सारे सद्गुण विकसित हो चुके थे । लोग उन्हें 'महात्मा' कहने लगे थे । बाद में रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने उन्हें औपचारिक रूप में 'महात्मा' की पदवी से विभूषित किया था ।

1914-18 में प्रथम विश्व युद्ध चल रहा था । गाँधीजी ने अंग्रेजों का पक्ष लिया । यहाँ तक कि ब्रिटिश सेना में शामिल होने को लोगों से कहा । उन्हें विश्वास था कि युद्ध समाप्त होने पर अंग्रेज शासक भारतीयों को प्रशासन में कुछ सहुलियत देंगे । लेकिन अंग्रेजों ने भारतीयों को कुछ दिया तो नहीं, उल्टे उनके भविष्य के कार्यक्रम में शक जाहिर किया ।

1918 में रौलट एक्ट बना । उसमें भारतीयों के साथ काफी कड़ाई बरतने के लिए कानून बनाये गए। 1917 में रूसी क्रान्ति हो चुकी थी । उसमें रूस की जनता की जीत हुई । अंग्रेजों ने सोचा भारत पर उसका असर पड़ेगा । भारतीय ज्यादा विद्रोही हो जाएँगे । इनको सख्त कानूनी जंजीरों में पकड़कर रखो। लेकिन फल उल्टा हुआ । रौलट एक्ट के ऊपर गांधीजी का विचार था-

मैं इस बिल को हमारे ऊपर सीधा हमला मानता हूँ । हम दब जाएँगे तो निःशेष हो जाएँगे । उन्हेंने पहली बार सारे देश में हड़ताल कराई । सफल हुए ।

1919 जालियाँवाला बाग में बर्बर हत्याकांड हुआ । फिर मंटेगू-चेम्सफोर्ड़ संस्कार का कानून आया । लेकिन इससे कोई संतुष्ट नहीं हुआ । गांधीजी कोई बड़ा-सा आन्दोलन छेड़ना चाहते थे । 1920-22 में असहयोग आन्दोलन के तहत अंग्रेजों के किसी भी कार्यक्रम में गांधीजी और उनके साथियों ने भाग नहीं लिया । 1928 में साइमन कमीशन आया तो उसका विरोध हुआ । फिर 'पूर्ण स्वराज्य' का प्रस्ताव अंग्रेजों को दिया गया । 1930 से कानून को तोड़ने का आन्दोलन चला । नमक आन्दोलन में गांधीजी ने भाग लिया। नमक बनाने के लिए अंग्रेज-शासकों ने निषेध किया था, उस कानून को गांधीजी ने तोड़ा । 1931 में गांधी-इरविन करार हुई । 1935 में भारत प्रशासनिक कानून बना । 1937 में कांग्रेसी मंत्रिमंडल बना ।

लेकिन गांधीजी का मन ही भारत की राजनीतिक सामाजिक, आर्थिक अवनति की ओर लगा था । उनकी पत्नी कस्तुरबा, गांधीजी के हर काम में हाथ बँटा रही थी । गांधीजी ने देश के हर तबके के लोगों को स्वतंत्रता आन्दोलन में शामिल कराया । महिलाएँ आगे आईं, दलित जातियाँ स्वाभिमानपूर्वक जीवन जीने लगीं । किसान, मजदूर, विद्यार्थी, वकील, डॉक्टर, नौकरी पेशेवाले सब मिलकर इस आन्दोलन में कूद पड़े । 1942 में 'भारत छोड़ो' का नारा लगा । यह एक अद्‌भूत क्रांति थी । लोग सीने पर गोली खाने को तैयार हुए, कई जगह लाठी गोली चली, बहुत आत्याचार हुए । लेकिन भारतीयों की सहन-शक्ति ब्रिटिशों के अत्याचार को निगल गई । 1947 को देश स्वतंत्र हुआ। गांधीजी को 'राष्ट्र-पिता' का सम्मान मिला ।

गांधीजी ने साबरमती और वर्धा में (सेवाग्राम) आश्रम बनाए । सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, खादी बुनना, पहनना, घरेलू उद्योग का प्रोत्साहन आदि अनेक कार्यक्रम चलाऐ। पत्रिकाओं का संपादन किया, 'सत्य के साथ मेरी परीक्षा' जैसे विश्वप्रसिद्ध ग्रंथ लिखा । जवाहरलाल नेहरू और बल्लभ भाई को शासन का बागडोर सौंपा । वे अलग पाकिस्तान बनने से बहुत दुःखी हुए । हिन्दू और मुसलमानों में भाईचारा बढ़ाने का प्रयत्न किया । अहिंसा उनका मूलमंत्र था ।

पर दुर्भाग्य से अहिंसा पर हिंसा की विजय हो गई । 1948 को गांधीजी की हत्या कर दी गई । नेहरू ने भरे गले से कहा-

'हमारा मशाल बुझ गया । अब हम अँधेरे में टटोल रहे हैं ।'

सच में, हमारी (भारत की) ही नहीं दुनिया की रोशनी बुझ गई । महात्मा गांधी शहीद हो गए ।

सोना हिरनी

महादेवी वर्मा

सोना की आज अचानक स्मृति होने का कारण है । मेरे परिचित स्वर्गीय डॉक्टर धीरेंद्रनाथ बसु की पौत्री सुस्मिता ने लिखा है–

''गत वर्ष अपने पड़ोसी से मुझे एक हिरन मिला था । बीते कुछ महीनों में हम उससे स्नेह करने लगे हैं, परंतु अब मैं अनुभव करती हूँ कि सघन जंगल से संबंध रहने के कारण तथा अब बड़े हो जाने के कारण उसे पलने के लिए अधिक विस्तृत स्थान चाहिए। क्या कृपा करके आप उसे स्वीकार करेंगी ? सचमुच मैं आपकी बहुत आभारी हूँगी, क्योंकि आप जानती हैं, मैं उसे ऐसे व्यक्ति को नहीं देना चाहती, जो उससे बुरा व्यवहार करे । मेरा विश्वास है, आपके यहाँ उसकी भली–भाँति देखभाल हो सकती है ।''

कई वर्ष पूर्व मैंने निश्चय किया कि अब हिरन नहीं पालूँगी, परंतु आज उस नियम को भंग किए बिना इस कोमलप्राण जीव की रक्षा संभव नहीं है ।

सोना भी इसी प्रकार अचानक आई थी, परंतु वह तब तक अपनी शैशवावस्था भी पार नहीं कर सकी थी । सुनहरे रंग के रेशमी लच्छों की गाँठ के समान उसका कोमल लघु शरीर

था । छोटा-सा मुँह और बड़ी-बड़ी पानीदार आँखें । देखती थी तो लगता था कि अभी छलक पड़ेंगी ।

सब उसके सरल शिशु रूप से इतने प्रभावित हुए कि किसी चंपक-वर्णा रूपसी के उपयुक्त सोना, सुवर्णा, सुवर्णलेखा आदि नाम उसका परिचय बन गए ।

उसका मुख इतना छोटासा था कि उसमें शीशी का निप्पल समाता ही नहीं था- उस पर भी उसे पीना भी नहीं आता था । फिर धीरे -धीरे उसे पीना ही नहीं, दूध की बोतल पहचानना भी आ गया । आँगन में कूदते-फाँदते हुए भी भक्तिन को बोतल साफ करते देख कर वह दौड़ आती और अपनी तरल चकित आँखों से उसे ऐसे देखने लगती, मानो वह कोई सजीव मित्र हो ।

उसने रात में मेरे पलंग के पाये से सटकर बैठना सीख लिया था, पर वहाँ गंदा न करने की आदत कुछ दिनों के अभ्यास से पड़ सकी । अँधेरा होते ही वह मेरे कमरे के पलंग के पास आ बैठती और सवेरा होने पर ही बाहर निकलती ।

उसका दिन भर का कार्यकलाप भी एक प्रकार से निश्चित था । विद्यालय और छात्रावास की विद्यार्थियों के निकट पहले वह कौतुक का कारण रही, परंतु कुछ दिन बीत जाने पर वह उनकी ऐसी प्रिय साथिन बन गई, जिसके बिना उनका किसी काम में मन नहीं लगता था ।

दूध पीकर और भीगे चने खाकर सोना कुछ देर कंपाउंड में चारों पैरों को संतुलित कर चौकड़ी भरती । फिर वह छात्रावास पहुँचती और प्रत्येक कमरे के भीतर, बाहर निरीक्षण करती । सबेरे छात्रावास में विचित्र-सी क्रियाशीलता रहती है- कोई छात्रा हाथ-मुँह धोती है, कोई बालों में कंघी करती है, कोइ साड़ी बदलती है, कोई अपनी मेज़ की सफाई करती है, कोई स्नान करके भीगे कपड़े सूखने के लिए फैलाती है और कोई पूजा करती है । सोना के पहुँच जाने पर इस विविध कर्म-संकुलता में एक नया काम और जुड़ जाता था । कोई छात्रा उसके माथे पर कुमकुम का बड़ा-सा टीका लगा देती, कोई गले में रिबन बाँध देती और कोई पूजा के बताशे खिला देती ।

मेस में उसके पहुँचते ही छात्राएँ ही नहीं, नौकर-चाकर तक दौड़ आते और सभी उसे कुछ-न- कुछ खिलाने को उतावले रहते, परंतु उसे बिस्कुट को छोड़कर कम खाद्य पदार्थ पसन्द थे ।

छात्रावास का जागरण और जलपान अध्याय समाप्त होने पर वह घास के मैदान में कभी दूब चरती और कभी उस पर लोटती रहती । मेरे भोजन का समय वह किस प्रकार जान लेती थी, यह समझने का उपाय नहीं है, परंतु वह ठीक उसी समय भीतर आ जाती और तब मुझसे सटी खड़ी रहती जब तक मेरा खाना समाप्त न हो जाता । कुछ चावल, रोटी आदि उसका भी प्राप्य रहता था, परंतु उसे कच्ची सब्ज़ी ही अधिक भाती थी ।

घंटी बजते ही वह फिर प्रार्थना के मैदान में पहुँच जाती और उसके समाप्त होने पर छात्रावास के सामने ही कक्षाओं के भीतर-बाहर चक्कर लगाना आरम्भ करती ।

उसे छोटे बच्चे अधिक प्रिय थे, क्यों कि उनके साथ खेलने का अधिक अवकाश रहता था । वे पंक्तिबद्ध खड़े होकर सोना-सोना पुकारते ओर वह उनके ऊपर से छलाँग लगाकर, एक ओर से दूसरी ओर कूदती रहती । यह सरकस जैसा खेल कभी घंटों चलता, क्योंकि खेल के घंटों में बच्चों की एक कक्षा के उपरांत दूसरी आती रहती ।

मेरे प्रति स्नेह-प्रदर्शन के उसके कई प्रकार थे । बाहर खड़े होने पर वह सामने या पीछे से छलाँग लगाती और मेरे सिर के ऊपर से दूसरी ओर निकल जाती । प्रायः देखने वालों को भय होता था कि उसके पैरों से मेरे सिर पर चोट न लग जाए, परंतु वह पैरों को इस प्रकार सिकोड़े रहती थी और मेरे सिर को इतनी ऊँचाई से लाँघती थी कि चोट लगने की कोई संभावना ही नहीं रहती थी ।

भीतर आने पर वह मेरे पैरों से अपना शरीर रगड़ने लगती । मेरे बैठे रहने पर वह साड़ी का छोर मुँह में भर लेती और कभी पीछे चुपचाप खड़े होकर चोटी ही चबा डालती । डाँटने पर वह अपनी बड़ी गोल और चकित आँखों में ऐसी अनिर्वचनीय जिज्ञासा भरकर एकटक देखने लगती कि हँसी आ जाती ।

यदि सोना को स्नेह की अभिव्यक्ति के लिए मेरे सिर के ऊपर से कूदना आवश्यक लगेगा तो वह कूदेगी ही । मेरी किसी अन्य परिस्थिति से प्रभावित होना, उसके लिए संभव ही नहीं था ।

कुत्ता स्वामी और सेवक का अंतर जानता है और स्वामी के स्नेह या क्रोध की प्रत्येक मुद्रा से परिचित रहता है । स्नेह से बुलाने पर वह गद्‌गद् होकर निकट आ जाता है और क्रोध करते ही सभीत और दयनीय बनकर दुबक जाता है ।

पर हिरन यह अंतर नहीं जानता, अतः उसका अपने पालने वाले से डरना कठिन है । यदि उस पर क्रोध किया जाए तो वह अपनी चकित आँखों में और अधिक विस्मय भरकर पालने वाले की दृष्टि से दृष्टि मिलाकर खड़ा रहेगा । मानो पूछता हो, क्या यह उचित है ? वह केवल स्नेह पहचानता है, जिसकी स्वीकृति जताने के लिए उसकी विशेष चेष्टाएँ हैं ।

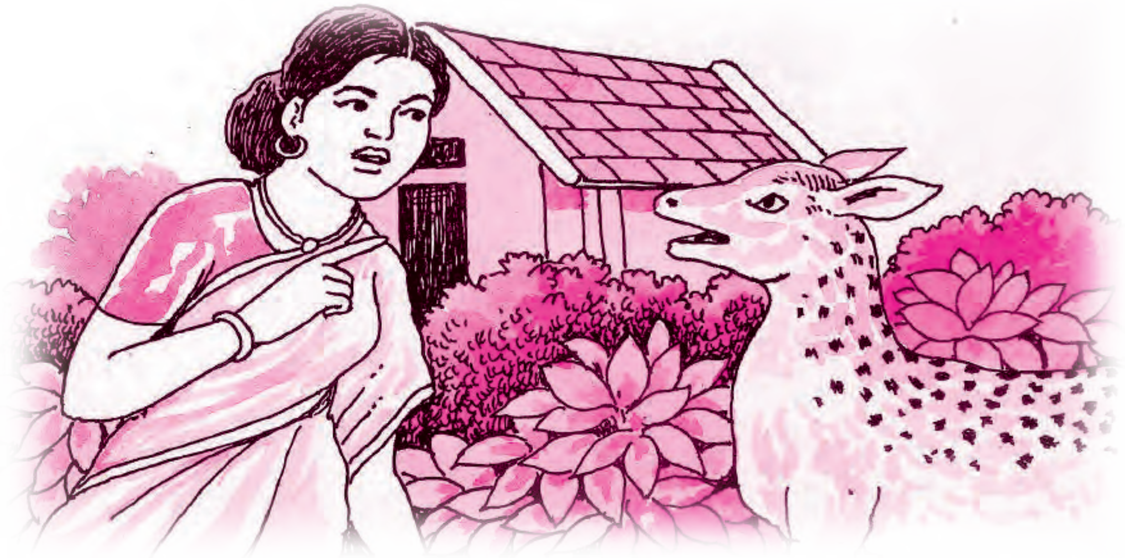

मेरी बिल्ली गोधूली, कुत्ते हेमंत-वसंत, कुत्ती फ्लोरा सब पहले इस नए अतिथि को देखकर रुष्ट हुए, परन्तु सोना ने ही कुछ दिनों में सबसे सख्य स्थापित कर लिया । फिर तो वह घास पर लेट जाती और कुत्ते-बिल्ली उस पर उछलते -कूदते कोई उसके कान खींचता कोई पैर । और जब वे इस खेल में तन्मय हो जाते, तब वह अचानक चौकड़ी भर कर भागती और वे गिरते-पड़ते उसके पीछे दौड़ लगाते ।

वर्षभर का समय बीत जाने पर हरिण-शावक से सोना हरिणी में परिवर्त्तित होने लगी । उसके शरीर के पीताभ रोएँ ताम्रवर्णी झलक देने लगे । टाँगें अधिक सुडौल और खुरों के कालेपन में चमक आ गई । ग्रीवा अधिक बंकिम और लचीली हो गई । पीठ में भराव वाला उतार चढाव और स्निग्धता दिखाई देने लगी । परंतु सबसे अधिक विशेषता तो उसकी आँखों और दृष्टि में मिलती थी । आँखों के चारों ओर खिंची कज्जल कोर में नीले गोलक और दृष्टि ऐसी लगती थी, मानो नीलम के बल्बों मैं उजली विद्युत का स्फुरण हो ।

संभवतः अब उसमें वन तथा स्वजाति का स्मृति-संस्कार जागने लगा था । प्रायः सूने मैदान में वह गर्दन ऊँची करके किसी की आहट की प्रतीक्षा में खड़ी रहती । वासंती हवा बहने पर यह मूक प्रतीक्षा और अधिक मार्मिक हो उठती । शैशव के साथियों से और उनकी उछल-कूद से अब उसका पहले जैसा मनोरंजन नहीं होता था, अतः उसकी प्रतीक्षा के क्षण कुछ अधिक हो जाते थे ।

इसी बीच फ्लोरा ने भक्तिन की कुछ अँधेरी कोठरी के एकांत कोने में चार बच्चों को जन्म दिया और वह खेल के कमियों को भूलकर अपनी नवीन सृष्टि के संरक्षण में व्यस्त हो गई । एक-दो दिन सोना अपनी सखी को खोजती रही, फिर उसे इतने लघु जीवों से घिरा देखकर उसकी स्वाभाविक चकित दृष्टि गंभीर विस्मय से भर गई ।

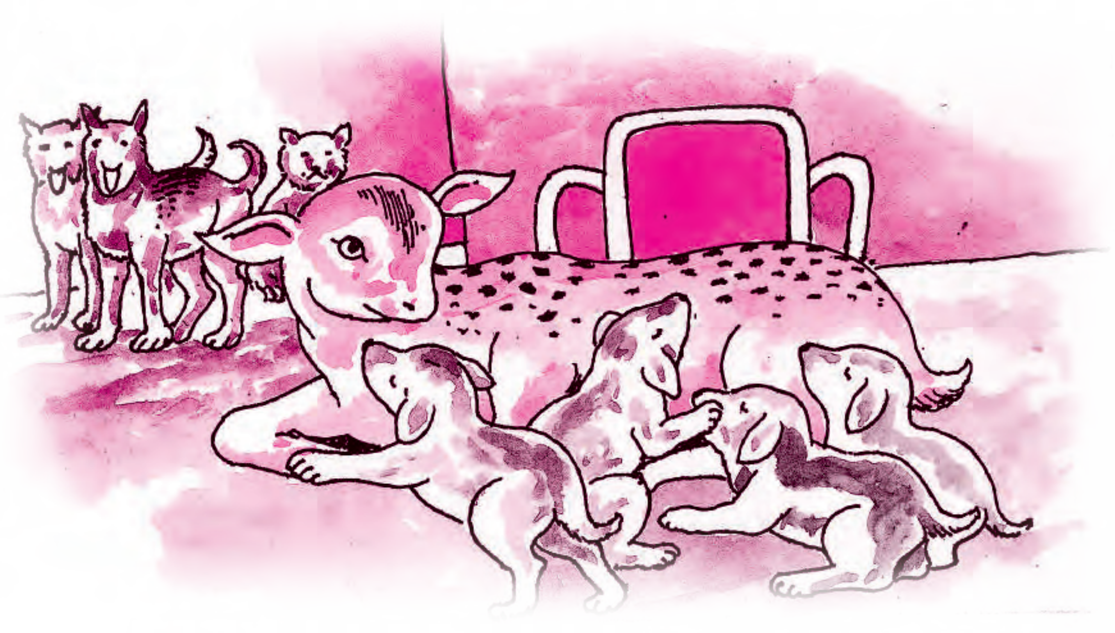

एक दिन देखा, फ्लोरा कहीं बाहर घूमने गई है और सोना भक्तिन की कोठरी में निश्चिंत लेटी है । पिल्ले आँख बंद रहने के कारण चीं-चीं करते हुए सोना के उदर में दूध खोज रहे थे । तब से सोना के नित्य के कार्यक्रम में पिल्लों के बीच लेट जाना भी सम्मिलित हो गया । आश्चर्य की बात यह थी कि फ्लोरा हेमंत, वसंत या गोधूली को तो अपने बच्चों के पास फटकने भी नहीं देती थी । परंतु सोना के संरक्षण में उन्हें छोड़कर आश्वस्त भाव से इधर-उधर घूमने चली जाती थी ।

संभवतः वह सोना के स्नेही और अहिंसक प्रकृति से परिचित हो गई थी । पिल्लों के बड़े होने पर और उनकी आँखें खुल जाने पर सोना ने उन्हें भी अपने पीछे घूमने वाली सेना में सम्मिलित कर लिया और मानो इस वृद्धि की उपलब्धि में आनंदोत्सव मनाने के लिए अधिक देर तक मेरे सिर पर आर-पार चौकड़ी भरती रही । पर कुछ दिनों के उपरांत जब यह आनंदोत्सव पुराना पड़ गया, तब उसकी शब्दहीन, संज्ञाहीन प्रतीक्षा की स्तब्ध घडियाँ फिर लौट आईं ।

उसी वर्ष गर्मियों में मेरा बद्रीनाथ यात्रा का कार्यक्रम बना । प्रायः मैं अपने पालतू जीवों के कारण प्रवास में कम रहती हूँ । उनकी देख-रेख के लिए सेवक रहने पर भी मैं उन्हें छोड़कर आश्वस्त नहीं हो पाती । भक्तिन, अनुरूप (नौकर) आदि तो साथ जाने वाले थे ही, पालतू जीवों में से मैंने फ्लोरा को साथ ले जाने का निश्चय किया क्योंकि वह मेरे बिना रह नहीं सकती थी ।

छात्रावास बंद था, अतः सोना के नित्य नैमित्तिक कार्यकलाप भी बंद हो गए थे । मेरी उपस्थिति का भी अभाव था । अतः उसके आनंदोल्लास के लिए भी अवकाश कम था ।

पैदल आने-जाने के निश्चय के कारण बद्रीनाथ की यात्रा में ग्रीष्मावकाश समाप्त हो गया । 2 जुलाई को लौटकर जब मैं बंगले के द्वार पर आ खड़ी हुई, तब बिछड़े हुए पालतू जीवों में कोलाहल होने लगा ।

गोधूली कूदकर कंधे पर आ बैठी । हेमंत-वसंत मेरे चारों ओर परिक्रमा करके हर्ष की ध्वनियों में मेरा स्वागत करने लगे, पर मेरी दृष्टि सोना को खोजने लगी । क्यों वह अपना उल्लास व्यक्त करने के लिए मेरे सिर के ऊपर छलाँग नहीं लगाती ? सोना कहाँ है, पूछने पर माली आँखें पोछने लगा और चपरासी, चौकीदार एक-दूसरे का मुख देखने लगे । वे लोग आने के साथ ही मुझे कोई दुखद समाचार नहीं देना चाहते थे, परंतु माली की भावुकता ने बिना बोले ही उसे दे डाला ।

ज्ञात हुआ कि छात्रावास के सन्नाटे और फ्लोरा के तथा मेरे अभाव के कारण सोना इतनी अस्थिर हो गई थी कि इधर-उधर कुछ खोजती-सी वह प्रायः कंपाउंड से बाहर निकल जाती थी । इतनी बड़ी हिरनी को पालने वाले तो कम थे, परंतु उसमें खाद्य और स्वाद प्राप्त करने के इच्छुक व्यक्तियों का बाहुल्य था । इसी आशंका से माली ने उसे मैदान में एक लंबी रस्सी से बाँधना आरंभ कर दिया ।

एक दिन न जाने किस स्तब्धता की स्थिति में बंधन की सीमा भूलकर वह बहुत ऊँचाई तक उछली और रस्सी के कारण मुख के बल धरती पर आ गिरी । वही उसकी अंतिम साँस और अंतिम उछाल थी ।

सब उस सुनहले रेशम की गठरी-से शरीर को गंगा में प्रवाहित कर आए और इस प्रकार किसी निर्जन वन में जन्मी और जन-संकुलता में पली सोना की करुण कथा का अंत हुआ ।

यह सुनकर मैंने निश्चय किया था कि हिरन नहीं पालूँगी, पर संयोग से हिरन ही पालना पड़ रहा है ।

त्योहार का आनन्द
(पत्र लेखन)

भुवनेश्वर, ओड़िशा
15 **अगस्त**, 2009

प्रिय शोभन भैया,

तुम्हारा पत्र मिला, पढ़कर खुशी हुई कि तुम ओड़िशा के त्योहारों के बारे में जानना चाहते हो । तुम तो जानते ही हो कि आषाढ़ का महीना आते ही ओड़िशा प्रांत में खुशी की लहरें उठती हैं । बारिश की दो एक बौछारें, बादलों की गड़गड़ाहट तापमान को कम कर देती हैं । मौसम सुहाना होने लगता है । किसान हल लेकर खेतों की ओर चल पड़ते हैं । खेती तो यहाँ का पेशा है । आसमान में बादल घुमड़ने लगते हैं तो लड़कियों का मजेदार त्योहार रजोत्सव शुरू हो जाता है । लड़कियों का दल नए कपड़ों में सज धज कर झूला झूलने लगती हैं । उनके गीतों की मूर्च्छना से गाँव-बस्तियाँ गूँजने लगती हैं । तरह-तरह के पकवान बनते हें, पान के बीड़े सजाए जाते है । लड़कियों की आवाजाही से गली आँगन जगमगा उठते है । नूपुर और पायजेबों की रुनझुन किसको अच्छी नहीं लगती ?

यहाँ की खासियत यह है कि जब एक त्योहार खतम होता है, तो दूसरा त्योहार आ जाता है । ओड़िशा के सारे पर्व-त्योहारों का राजा है- रथयात्रा । तुम तो जानते हो कि पुरी के जगन्नाथ जी का मन्दिर दुनिया में मशहूर है । आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को जगन्नाथ बड़े भाई बलभद्र और बहिन सुभद्रा की रथयात्रा होती है । उनकी प्रतिमाओं को तीन अलग-अलग रथों पर बिठाकर उनके जन्मस्थान 'गुण्डिचा घर' में ले जाया जाता है । मन्दिर के सिंहासन से सेवायत (सेवक) लोग प्रतिमाओं को बड़ी धूमधाम से पैदल लेकर चलते हैं इसे ठाकुर का 'पहण्डि-बिजे' कहा जाता है । लाखों लोग पुरी में जमा होते हैं ।

सबसे बड़ी बात यह कि इस अवसर पर कोई भी भक्त ठाकुरों की मूर्त्तियों को छू सकता है । छाती से लगा सकता है । यहाँ भक्त और भगवान एक हो जाते हैं । ऊँच-नीच, अमीर-गरीब, बड़े- छोटे, बच्चे-बूढ़े-जवान सब उनके पास जा सकते हैं। उनकी पूजा करते हैं । उनका रथा खींचते हैं । गुण्डिचा घर में हर शाम को ठाकुरों को नए-नए आभूषण और नए-नए वस्त्रो से सजाया जाता है । दशमी को जगन्नाथ की वापसी यात्रा शुरू होती है । उन्हें फिर रथ-पर बिठाकर मन्दिर की ओर लाया जाता हैं । एकादशी की रात को रथ पर ही ठाकुर प्रतिमाओं को सैंकडों किलोग्राम वजन के सोने के आभूषणों से सजाया जाता है । इस दृश्य को देखने के लिए लाखों लोग दूर दूर से आते हैं । हम लोग भी इस रथयात्रा को देखने गए थे । जगन्नाथ आदि के रूपों को देखते ही बनता था । प्रभु जगन्नाथ मिलजुलकर रहने की सीख देते हैं । तुम कभी रथयात्रा देखने का कार्यक्रम बनाओ । हम लोग यहाँ तुम्हारे आवभगत करने को उत्सुक हैं । घर में पूज्य मामा और मामी जी को प्रणाम कहना । आशा करता हूँ कि तुम सपरिवार कुशल में होगे ।

तुम्हारा
अमरेश

१. आप भी ऐसा पत्र अपने मित्र और परिवार के सदस्यों को लिखिए ।

व्याकरण के पृष्ठ

✻ **शब्द** – एक या एक से अधिक अक्षरों के मेल को 'शब्द' कहते हैं जिसका कोई अर्थ हो ।

जैसे – मैं, तुम, अमरूद, लड़की, गाय, गधा, पढ़ना, खाना,पीना आदि ।

किसी वाक्य में प्रयोग किए जाने वाले शब्द आठ प्रकार के होते हैं :-

संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, क्रिया- विशेषण, समुच्चयबोधक, संबंधबोधक, विस्मयादिबोधक ।

✻ **संज्ञा** – किसी व्यक्ति, प्राणी, भाव, वस्तु या स्थान आदि के नाम को 'संज्ञा' कहते हैं ।

जैसे- मीरा, राम, गंगा, हिमालय, गंगोत्री, सुंदरता, भेड़, पुस्तक आदि ।

संज्ञा के मुख्य रूप से तीन भेद हैं :-

व्यक्तिवाचक संज्ञा – जिस शब्द से किसी व्यक्ति, स्थान या किसी वस्तु विशेष का बोध हो, उसे 'व्यक्तिवाचक संज्ञा' कहते हैं । जैसे- राम, लक्ष्मण, शकुंतला, ताजमहल आदि ।

जातिवाचक संज्ञा – जिस शब्द से एक जाति के सभी पदार्थों का बोध हो, उसे 'जातिवाचक संज्ञा' कहते हैं । जैसे – भेड़, बकरी, आदमी, पुस्तक आदि ।

भाववाचक संज्ञा – ''जिस शब्द से किसी गुण, दशा, भाव आदि का बोध हो, उसे 'भाववाचक संज्ञा' कहते हैं । जैसे- सुंदरता, वाल्यावस्था, पढ़ाई, कायरता आदि ।

✻ **सर्वनाम** – जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयु प्रयुक्त होते हैं, उन्हें 'सर्वनाम' कहते हैं । जैसे- मैं, हम, तू, जो, वह, आप, यह, वह, कुछ, कोई आदि ।

सर्वनाम के छह भेद हैं :-

१. पुरुषवाचक　　२. निश्चयवाचक　　३. अनिश्चयवाचक

४. संबंधवाचक　　५. प्रश्नवाचक　　६. निजवाचक

१. पुरुषवाचक सर्वनाम– जो सर्वनाम किसी पुरुष या स्त्री के नाम के स्थान पर बोले जाते हैं, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं । जैसे– तुम, वह, मैं, वे, हम, यह आदि ।

जैसे : वह गाँव जाता है ।

२. निश्चयवाचक सर्वनाम– निश्चयावाचक सर्वनाम वे हैं जिनसे किसी निश्चित वस्तु का बोध हो । जैसे– यह, वे, वह आदि ।

जैसे : यह आम मीठा है, वह मीठा नहीं है ।

३. अनिश्चयवाचक सर्वनाम– अनिश्चयवाचक सर्वनाम वे हैं जिनसे किसी निश्चित वस्तु का बोध न हो । जैसे– कोई, कुछ ।

जैसे : ऐसा न हो कि कोई आ जाए ।

उसने कुछ नहीं खाया ।

४. संबंधवाचक सर्वनाम– संबंधवाचक सर्वनाम वे हैं जो एक सर्वनाम के साथ संबंध प्रकट करते हैं ।

जैसे : जो देता है, सो लेता है ।

जैसा करोगे, वैसा भरोगे ।

जिसकी लाठी, उसकी भैंस ।

५. प्रश्नवाचक सर्वनाम–प्रश्नवाचक सर्वनाम वे हैं जिनसे किसी प्रश्न का बोध हो ।

जैसे : क्या पढ़ रहे हो ?

तुम क्या खा रहे हो ?

अंदर कौन है ?

* **क्रिया** – "जिसे शब्द से काम का करना या होना पाया जाए, उसे क्रिया कहते हैं ।"

जैसे– जाता है, दौड़ता है, पढ़ा, गाया, खाएगा आदि ।

* **लिंग** – लिंग का अर्थ है 'चिह्न' । संज्ञा के जिस रूप से व्यक्ति की जाती का बोध हो, उसे 'लिंग' कहते हैं । हिंदी में दो लिंग होते हैं– पुल्लिंग और स्त्रिलिंग ।

पुल्लिंग : पिता, पुत्र, बंदर, पुजारी, मोर, बाल, वृद्ध, स्वामी, तपस्वी आदि ।

स्त्रीलिंग : माता, पुत्री, बंदरिया, पुजारिन, मोरनी, बाला, वृद्धा, स्मामिन, तपस्विनी आदि ।

* **वचन:** संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के जिस रूप से संख्या का बोध हो, उसे 'वचन' कहते हैं । हिंदी में वचन दो है– एकवचन और बहुवचन । :–

एकवचन : शब्द के जिस रूप से एक ही पदार्थ का बोध हो, उसे एकवचन कहते हैं । जैसे– तोता, घोड़ा, भैंस, गाय, पुस्तक, नदी आदि ।

बहुवचन: शब्द के जिस रूप से एक से अधिक वस्तुओं का बोध हो, उसे बहुवचन कहते हैं । जैसे : तोते, घोड़े, भैंसें, गायें, पुस्तकें, नदियाँ आदि ।

* **विशेषण :** जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता प्रकट करे, उसे विशेषण कहते हैं । जैसे – काला घोड़ा, सफ़ेद फूल ।

विशेष्य– जिसकी विशेषता बतलायी जाए, वह 'विशेष्य' कहलाता है ।'

जैसे – 'काला घोड़ा' में 'काला' विशेषण है और 'घोड़ा' विशेष्य । 'अच्छा विद्यार्थी' में 'अच्छा' विशेषण है और 'विद्यार्थी' विशेष्य । 'तीस घोड़े' में 'तीस' विशेषण है और 'घोड़े' विशेष्य । इसी प्रकार दुबला आदमी, 'पालतू कुत्ता, गहरा कुआँ आदि ।

* **क्रिया विशेषण :** जिस शब्द से 'क्रिया' या दूसरे 'क्रिया–विशेषण' की विशेषता प्रकट हो , उसे 'क्रिया–विशेषण' कहते हैं ।

जैसे– राम धीरे–धीरे टहलता है । राम वहाँ टहलता है । वह अचानक आ गया । वह

प्रतिदिन मंदिर जाता है । पहले तोलो, फिर बोलो । उतना खाओ, जितना हजम हो। अब मैं क्या करूँ ? आदि । 'वह धीरे चलता है ।' इस वाक्य में 'धीरे' क्रिया-विशेषण है । 'वह बहुत धीरे चलता है ।' 'बहुत' भी क्रिया -विशेषण है, क्योंकि यह दूसरे क्रिया विशेषण 'धीरे' की विशेषता बतलाता है ।

'समुच्चयबोधक'- जिस शब्द के सहारे वाक्यों को जोड़ा जाता है या अलग किया जाता है, उसे 'समुच्चयबोधक' अव्यय कहते हैं ।

जैसे- और, एवं, तथा, या, अथवा, नहीं तो, इसलिए, किंतु, लेकिन, बल्कि, यद्यपि आदि ।

संबंधबोधक- जिस शब्द से किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्य का संबंध किसी अन्य शब्द से सूचित होता है, उसे 'संबंधबोधक अव्यय' कहते हैं ।

जैसे- के बिना, के साथ, के बदले, के आगे, के पीछे, के बाद आदि ।

विस्मयादिबोधक- जिन शब्दों से विस्मय, हर्ष, विषाद, शोक, घृणा, संबोधन, आदि भाव व्यक्त हो रहे हों उन्हें 'विस्मयादिबोधक' अव्यय कहते हैं ।

जैसे- उरे, वाह, आह, हाय, शाबाश, जय हो, अच्छा । इन शब्दों के बाद ! चिह्न दिया जाता है ।

राष्ट्रीय गान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड़, उत्कल बंग,
विन्ध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल-जलधि तरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशीष मागे,
गाहे तव जय गाथा,
जन-गण-मंगल-दायक, जय हे
भारत-भाग्य-विधाता
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे ।